हिन्दी-प्रेमियोंसे अनुरोध

इस मण्डलके स्थायी ग्राहक होनेके नियम पुस्तकके अन्तमें दिये हुए हैं। आप उन्हें एक बार अवश्य पढ लें और अपनी रुचिके अनुसार स्थायी ग्राहक होकर व अपने मित्रोंको बनाकर इस मण्डलकी पुस्तकोंके प्रचारमें सहायता पहुंचावें।

स्वाधीनताके सिद्धान्त

मूल लेखक

आयर्लैंडके प्रसिद्ध आत्मत्यागी वीर

टेरेन्स मैकस्विनी

अनुवादक

पं० हेमचन्द्र जोशी बी० ए०

प्रकाशक

सस्ता साहित्य प्रकाशक मण्डल

अजमेर

प्रथम बार] १९२८ [मूल्य ॥)

प्रकाशक—
जीतमल लूणिया, मंत्री
सस्ता साहित्य प्रकाशक मण्डल,
अजमेर

लागत का ब्योरा

कागज	१९८)
छपाई	२२७)
बाइंडिंग	२५)
लिखाई, व्यवस्था, विज्ञापन आदि खर्च	२५३)
कुल जोड	७०३)
प्रतियां २०००	
एक प्रति का मूल्य	।≤)॥

टेरेन्स मैक्स्विनीकी संक्षिप्त जीवनी



१—बाल्य काल

फार्कके लार्ड मेयर टेरेन्स मैक्स्विनी संसारके उन थोड़े महात्माओंमेंसे हैं जो मरी हुई जातिको अपना प्राण देकर नया जीवन दे जाते हैं। जिस देशमें मैक्स्विनी पैदा हुए वह भारतके समान आत्मसम्मानरहित तथा चरित्रभ्रष्ट देश नहीं है। आयर्लैण्डमें प्राय ३०० सालसे स्वाधीनताका युद्ध चल रहा है। इस अवधिमें वहा कई वीर ऐसे पैदा हुए हैं जिन्हें पाकर कोई भी जाति गर्व कर सकती है। टोन, उल्फ, मिचल, माइकेल डेविट आदि स्वाधीनताके उपासक जिस भूमिमें जन्मे हैं वह धन्य है। जिस जातिके लिये इमन डे वेलेरा, काउन्टेस मार्केविग्ज, ओकैनल सरीखे नेता लड़े और लड़ रहे हैं वह गुलाम नहीं रह सकती। किन्तु जिस राष्ट्रने एक टेरेन्स मैक्स्विनीको जन्म दिया है वह ससार भरको स्वतन्त्रताका पथ दिखानेका दम भर सकता है।

टेरेन्स मैक्स्विनी १८७९ ई०की २८ वीं मार्चको कार्कनगरमें पैदा हुए। छोटेपनमें ही उनके पिता मर गये। इससे सारे परि-

वारके पालन पोषणका भार उनकी माताके सर पड़ा। इस वीर महिलाने अपना धर्म निबाहा। मैक्स्विनीको बचपनसे ही राष्ट्रीय शिक्षा मिली। आयर्लैण्डमें उन दिनों रेडमण्डके दलका प्रभुत्व होनेके कारण यद्यपि देशमें मनुष्यता कम रह गयी थी तौभी इधर उधर कई लोग स्वतन्त्रताके भावोंको हृदयके अन्दर ढककर हिफाजतके साथ बचाये हुए थे। कार्क नगरमें ऐसे लोग बहुत बसते थे। उन दिनों वहां यह एक रिवाज सा पड़ गया था कि छोटे बच्चे सप्ताह भरमें कोई न कोई कविता याद करते थे और रविवारको अपने माता पिताको सुनाया करते थे। कविता राष्ट्रीय होती थी। इसमें विद्रोहके भाव जितने अधिक होते थे उतनी ही अधिक वह पसन्द की जाती थी। मैक्स्विनीके पिता कट्टर देश भक्त थे। मैक्स्विनीने उनसे राष्ट्रीयताकी शिक्षा ली। मैक्स्विनीने अपनी मातासे कई गुण सीखे। उनकी आध्यात्मिकता, भगवानपर अटल विश्वास और धर्ममें दृढ़ भक्ति—ये गुण उन्हें अपनी मातासे मिले थे।

उन्हें स्कूली शिक्षा भी अच्छी मिली थी। उस समय आयर्लैण्डमें हजारों राष्ट्रीय स्कूल थे। उनका एक बोर्ड भी था किन्तु इनकी हालत वर्तमान समयके भारतके राष्ट्रीय स्कूलोंसे कुछ ही अच्छी थी। राष्ट्रीय विद्यालयोंकी यह दुर्दशा देखकर जातिके कई शिक्षाप्रेमी हितैषियोंने अपने स्कूल अलग खोल रखे थे। कार्कमें कुछ रोमन कैथलिक पादरियोंने ऐसे कई स्कूल स्थापित कर रखे थे। यह उन राष्ट्रीय स्कूलोंसे कई दर्जा अच्छे थे

जो चन्द्र वसूल करना और लडकोंको बिगाडना अपना धर्म समझते हैं। मैक्स्विनीने इन देशके दुखसे दुखी पादरियोंके स्कूलमें शिक्षा पायी। ये देशप्रेमी धर्मात्मा अपनी स्वतन्त्र पुस्तकें पढाते थे किन्तु इण्टरमिडियट दर्जेमें बोर्डद्वारा निर्धारित इतिहासकी कुछ रद्दी कितावें पढ़ानी पडती थीं। ये लाचार होकर उन्हें पढाते थे किन्तु अगर मगरके साथ ये बताते थे कि इन इतिहासोंमें जाति के विरुद्ध कौन कौनसी झूठी बात लिखी गयी हैं, इन झूठी बातोंके लिखनेसे लेखकको क्या लाभ हुआ है, छात्रोंकी क्या हानि होगी, आदि। ऐसे स्कूलमें मैक्स्विनीकी राष्ट्रीयताका बढना स्वाभाविक था। मैक्स्विनी उन दिनों ध्यानमें मग्न रहता था और यह ध्यान सदा देशका होता था। वह स्कीमें बनाया करता था और ये स्कीमें देशोद्धारकी होती थीं। उसके विषयमें यह कहा जा सकता है कि जन्मसे ही उसे मातृभूमिकी लगन थी। एक बार उसके घरमें राकफेलरको अतुल सम्पत्तिकी चर्चा छिडी। सबसे पूछा गया यदि तुम्हारे पास इतना धन होता तो तुम क्या करते? जब मैक्स्विनीकी बारी आई उसने गम्भीरता-से उत्तर दिया "मैं आयर्लैंडको स्वाधीन करता।" दर्जेमें जब आयरिश इतिहासपर वादविवाद होता था तो मैक्स्विनीमें देशप्रेमका यह भाव बहुधा स्पष्ट रूपसे दिखायी देता था।

मैक्स्विनीने १५ सालकी उम्रमें स्कूल छोड दिया और कार्क-की डायर एण्ड कम्पनीके यहां नौकरी कर ली। वह सदा प्रसन्नचित्त और कार्यमें व्यस्त रहता था। मैक्स्विनीको व्यापा

रिक जीवन पसन्द नहीं था किन्तु उसकी सदा यह आदत रही कि जो काम हाथमें लेता उसे पूरा कर छोडता। इसलिये वह थोडे ही दिनोंमें एकाउण्टेण्ट हो गया और सन् १९११ ई० तक यही काम करता रहा। १९११ में वह व्यापारका अध्यापक हुआ। उसे पढ़नेकी धुन थी, इस बातकी प्रबल इच्छा थी कि मैं बी० ए० पास कर लूं। इसलिये वह पढने लिखनेमें सदा व्यस्त रहता था। दिन भर आफिसमें काम करता, रातको आठ बजे सो जाता और दो बजे रातको उठकर अध्ययन करता। इस प्रकार बडी चेष्टा करके सन् १९०७ ई० में उसने बी० ए० डिग्री प्राप्त कर ली।

२—राष्ट्रीयताका उदय

मैक्स्विनी स्कूल छोडनेके समयसे ही विचार कर रहा था कि कौन दल देशका उद्धार कर सकता है। उस समय फीनियन दल ध्वंसावशेष था। यह दल आयर्लैण्डको स्वाधीन न कर सका था किन्तु इसके सदस्योंको विश्वास था कि इस पीढीमें नहीं, दूसरी पीढीमें नहीं, किन्तु कभी न कभी तो आयर्लैण्ड प्रजातन्त्रवादी स्वतन्त्र राष्ट्र बनेगा ही। मैक्स्विनी यद्यपि विश्वास करता था कि राष्ट्रको स्वाधीन करनेका काम शीघ्र आरम्भ करना चाहिये तौभी वह कुछ कुछ इसी दलमें मिला। १८९९में इन्होंने 'यंग आयर्लैंड सोसाइटी' खोली। यह नवयुवक-दल-रचनात्मक कार्य, देशी भाषाका प्रचार, आयरिश उद्योग धन्धोंका पोषण और

ब्रिटिश फौजमें आयरिश सिपाहियोंको भरती न होने देनेका उद्योग करना चाहता था। इस बीच सिनफिन आन्दोलनका जन्म हो रहा था। १८६६ में आर्थर ग्रिफिथने 'यूनाइटेड आयरिश-मन' नामक पत्र निकाला। इस पत्रके द्वारा वह सब समितिया सघबद्ध कर ली गयीं जो इङ्गलैण्डसे अलग होना और खुले आम आयरिश स्वतन्त्रताका प्रचार करना चाहती थीं इस प्रकार सिनफिनका बीज बोया गया और नीति निर्धारित की गयी।

मैक्स्विनीको यह विश्वास हो गया था कि जबतक आयरिश भाषा देश भरमें नहीं फैलेगी तबतक देशका कुछ काम नहीं हो सकता। 'गैलिक लीग' नामक सस्था उन दिनों आयरिश भाषाका प्रचार कर रही थी। मैक्स्विनी इसमें भरती हो गया। उसने बड़े कड़े परिश्रमसे आयरिश भाषा सीखी और देहातमें रहकर उस-का प्रयोग समझा। १९१० में 'आयरिश फ्रीडम' नामक पत्र निकाला गया। इसने सिनफिन दलकी नीति भली भाति स्पष्ट कर दी। इसमें साफ २ लिखा गया कि हमलोग उस विचार पर स्पराको लेकर लड़े हुए हैं जिसे हमारे पहले नेता हमें दे गये हैं। हम इङ्गलैण्ड और आयर्लैण्डका पूर्ण विच्छेद चाहते हैं, हम आय-रिश प्रजातन्त्रके पक्षपाती हैं। इस पत्रके निकलते ही सब नवयुवक इसकी तरफ हो गये और कहना चाहिये कि सारा आयर्लैंड उसी तरफ गया। मैक्स्विनी भी इसमें था। मैक्स्वि-नीकी पुस्तक 'स्वाधीनताके सिद्धान्त' इसीमें क्रमशः छपी थी। इस समय लोग आश्चर्य करते हैं कि मैक्स्विनीको किस प्रकार

आयर्लैंडकी भावी दशाका ज्ञान पहले ही हो चुका था। किन्तु यह पुस्तक एककालीन या एकदेशीय नहीं है। इसके सिद्धान्त सदा सर्वत्र लागू होंगे।

३—आयरिश स्वयंसेवक

आयर्लैंडके लिये वह समय बड़े सौभाग्यका था जब ब्रिटिश सरकारने अल्स्टरवालोंको स्वयंसेवक दलमें भरती होनेका अधिकार दिया। यह रियायत इसलिये की गयी थी कि अल्स्टर अंगरेजी साम्राज्यकी छत्रछायामें रहना चाहता था। किन्तु इङ्गलैण्ड के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ ऐसी चूक कर गये कि इसके लिये वे अबतक पछता रहे हैं। आयर्लैंडके नवयुवकोंने इस आज्ञाका स्वागत किया। वे ताड गये कि आयर्लैंडका अब मौका आगया है। जब अल्स्टरमें स्वयंसेवक भरती हो सकते थे तो और जगह उन्हें कौन रोक सकता था। बस धूम मच गयी। जो नवयुवक रात दिन सोचा करते थे कि आयर्लैंडकी पलटनें किस प्रकार खड़ी की जा सकती हैं वे हर्षसे नाचने लगे। सारे आयर्लैंडमें स्वयंसेवकोंकी भरती होने लगी। थोड़े ही दिनोंमें ३० हजार स्वयंसेवक भरती हो गये। इसमें सन्देह नहीं कि उनके पास हथियार बहुत थोड़े थे किन्तु उनमें उत्साह था, वे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे और उन्हें विश्वास था कि समयपर हथियार भी मिल जायगे। यह उत्साह देखिये, कई बूढ़े भी इसमें भरती हो गये।

मैक्स्विनीके लिये भरतीका यह आन्दोलन ईश्वरकी महान्

कृपा थी। भगवानने उसे स्वभावसे ही सैनिक पैदा किया था। वह जी जानसे इस आन्दोलनमें कूद पडा। सप्ताहमें एक बार ड्रिल होती थी किन्तु वह सारे सप्ताह रणनीतिका अध्ययन करता था। उसे पूरा भरोसा था कि आयर्लैण्डका उद्धार ये स्वयसेवक ही करेंगे जो समय आनेपर नियमित रूपसे सेनामें भरती किये जाते हैं। मैकिस्वनीको अपनी विजयपर पूरा विश्वास था। उसे कभी यह सन्देह नहीं होता था कि आयर्लैण्ड स्वतन्त्रताके युद्धमें हारेगा। उसने अपना उत्साह, उमङ्ग और आशा स्वयसेवकोंमें भर दी। आयर्लैंडमें धडाधड स्वयसेवक भरती होने लगे किन्तु नरमदलवालोंने अपना सारा जोर इस आन्दोलनके विरुद्ध लगाया। किन्तु जिस जातिमें स्वतन्त्रताके भाव पैदा हो जाते हैं वहा कुछ इने गिने स्वार्थी लोगोंको छोडकर सभी मातृ-भूमिके सैनिक हैं। उन्हें भरती होनेसे कौन रोक सकता है। नरमदलवाले कुछ न कर सके। अन्तमें उन्हें स्वय भी भरतीमें भाग लेना पडा। कुछ दिनों बाद इङ्गलैण्डकी जर्मनोसे लडाई छिड गया। मैक्स्विनी आदि प्रजा तन्त्रवादियोंने समझा कि अब मौका आ गया। इस वक्त यदि इङ्गलैण्ड दबाया जाय तो उसे भागनेमें देर न लगेगी। किन्तु रेडमण्डने इन स्वयसेवकोंका प्रयोग इङ्गलैण्डकी सहायता करनेके लिये करना उचित समझा। बस सब स्वयसेवक इङ्गलैण्डकी तरफ होने लगे। मैक्स्विनी घबराया और उसने इङ्गलैण्डके विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया। स्वयसेवकोंमें दो दल हो गये। २॥ लाख

स्वयसेवकोंमेंसे कुल ८००० प्रजातन्त्रवादियोंकी तरफ रहे। कार्ककी स्थिति और भो खराब थी। किन्तु मैक्स्विनीने बड़ी शान्तिसे काम लिया। वह जितने स्वयसेवक मिले उन्हें लेकर गाव गाव फिरा और नये स्वयसेवक भरती करनेकी चेष्टा की। यह उत्साह देखकर अन्य स्थानोंके और स्वयसेवकोंने भी रङ्गरूट भरती किये।

१९१४ की १६ वीं सितम्बरसे कार्कसे 'फायनाफेले' नामक साप्ताहिक पत्र निकला। इसका सारा भार मैक्स्विनीपर था। इसके लेखोंसे आयरिश जातिमें नया उत्साह पैदा हुआ। जो पीछे हट गये थे वे आगे बढ़े। इसके पहले अङ्कमें मैक्स्विनीने लिखा कि-"वर्तमान सकटके कारण यह पत्र निकाला जा रहा है। यह समाचारोंका नहीं, सिद्धान्तोंका प्रचार करेगा। हम आयर्लैण्डके लिये कमसे कम यह चाहते हैं कि वर्तमान अवसरसे आयर्लैण्डके लिये वह राजशक्ति प्राप्त कर लें जिससे वह बाहर भीतरका अपना इन्तजाम निज ही करे।" एक दूसरे अङ्कमें उसने लिखा, "हम आयर्लैंडमें आग लगा देना चाहते हैं। हमारा विचार है कि हमारा व्यक्तिगत बलिदान इस कार्यके लिये बहुत कम है। जरा बलिदानका अर्थ तो सम झिये। आयर्लैण्डमें शत्रुका रक्त बहाया जा सकता है किन्तु पहले उसका खून नहीं बहाया जाना चाहिये क्योंकि इससे प्रतिहिंसावृत्ति जागृत हो सकती है। किन्तु आयरिश भूमिमें पहले आयरिश रक्त बहाना चाहिये। फिर आप देखेंगे, स्वाधीनताका

उद्धार करनेके लिये ऐसा जहाद आरम्भ होगा जिसे शैतानकी सारी शक्तियां नहीं हरा सकतीं। हमें मिचलके वे शब्द याद रखने चाहिये जो उसने फांसीपर चढते समय वीर गर्जनके साथ लार्ड क्लारेण्डनसे कहे थे, 'माइ लार्ड! मैं जानता था मुझे फांसीपर लटकना पड़ेगा, किन्तु मैं यह भी भली भांति जानता था कि विजय मेरे साथ रहेगी और मेरे साथ है।' हम इस विजयका महत्व नहीं समझे हैं किन्तु अब शीघ्र समझ जायगे। हमें समझना चाहिये विजय दो प्रकारकी होती है और मिचलकी जैसी विजय सांसारिक विजयकी सीढी है। हमारे स्वयं सेवक अभी तय्यार नहीं हैं, उन्हें पूरी शिक्षा नहीं मिली न उनकी परीक्षा ही हुई है। आवश्यकता है कि मिचलके उक्त सिद्धांतका प्रचार हो जिसमें वे कार्यसाधन या मरणके लिये सदा तैयार रहें। एक शुद्ध बलिदान यह काम कर सकता है। यह उनकी आत्मामें नयी रूह फूंकेगा और दैवी ज्योति जलावेगा और आयर्लैंडका भाग्य उनके हाथोंमें सुरक्षित रहेगा।" इस पत्रका अन्तिम अङ्क उसी सालकी पांचवीं दिसम्बरको निकला। उसके बाद सम्बन्धविच्छेदी पत्र आयर्लैंडमें बन्द कर दिये गये। इस पत्रके लिये मैक्स्विनीको अपना प्यारा पुस्तकालय बेंच देना पड़ा। शायद ही कभी वह इन पुस्तकोंको बेचता किन्तु देशके नामपर उसने यह बलिदान किया। पत्रके कुल ११ अङ्क निकले पर वह अपना काम कर चुका था।

१९१५ में आयरिश जातिकी आंखें खुलीं। उसने देखा कि

साम्राज्यके लिये स्वयंसेवक बनना नादानी है। इस बीच मैक्स्विनीने पूरी चेष्टा की कि उसके दलमें स्वयंसेवक भरती हों। अबतक वह फुरसत निकालकर स्वयंसेवक भरती करता था किन्तु उसने अब नौकरी छोड़ दी और सारा समय इसी काममें लगाया। वह अपनी बाइसिकलपर कार्कके जिले भरमें दौरा करता था और जहां जाता था वहीं आग भड़का देता था। १९१६ के आरम्भमें ही उसने कार्क जिलेको उत्तम रूपसे सङ्गठित कर दिया। उसका उन दिनोंका परिश्रम देखकर मुहसे यही शब्द निकलते हैं—'यदि स्वाधीनताका उपासक हो तो ऐसा हो'!'

४—पहली गिरफ्तारी।

गवर्नमेण्ट फौरन ताड़ गयी कि मैक्स्विनीने आयर्लैंडमें राज-विद्रोहकी आग फैलायी है। बस, १३ जनवरी १९१६ को मैक्स्विनी अपने घरपर गिरफ्तार कर लिये गये। मकानकी तलाशी ली गयी कि कहीं हथियार छिपे हुए न हों। माल बरामद नहीं हुआ किन्तु पुलिस कागज-पत्र उठा ले गयी। मैक्स्विनीके ऊपर यह अभियोग लगाया गया कि तुमने दूसरी जनवरीको बालिनोमें राजद्रोही भाषण दिया। मैक्स्विनी महीनों हवालातमें सड़ते रहे। पार्लामेण्टमें सवाल पूछा गया। उत्तर मिला कि मैक्स्विनीका अपराध बहुत बड़ा है किन्तु धीरे धीरे रहस्य खुला कि मैक्स्विनीके पास उनके छोटे भाई जानकी चिट्ठियां थीं जो उस

समय बर्लिनमें था। सन्देह यह हुआ कि आयरिश स्वयसेवक जर्मनीसे मिले हुए हैं और उनके कोषमें जर्मनीका रुपया है। खुफिया पुलिसके बड़े बड़े दिग्गजोंने माथा लड़ाया कि इन पत्रोंमें शब्दोंका इन अर्थोंमें प्रयोग हुआ है। जान मेक्विस्वनी गिरफ्तार कर लिया गया। उसके कागज़ पत्रोंकी तलाशी हुई। किन्तु कहीं भी इस जर्मन षडयंत्रका पता न चला। यह बर्लिन जर्मनीकी राजधानी नहीं किन्तु एक अन्य स्थानका नाम था। मामला शुरू हुआ। बड़े दाव पेंच खेले गये। किन्तु मजिष्ट्रेट राष्ट्रीय दलके थे। उन्होंने हंसी मज़ाककी तौरपर मेक्विस्वनीको एक शिलिंग जुर्माना किया। इस निर्णयसे आयरिश स्वयसेवक भरती करनेमें बड़ी सहायता मिली। उधर जनता में इङ्गलैण्डकी ओरसे लड़नेका उत्साह धीमा पड़ गया।

आयरिश रिपब्लिकन ब्रदरहुड यथाशीघ्र बल्वा करनेकी तैयारी करने लगा गवर्नमैण्ट यह देखकर घबरायी कि आयर्लैण्डमें ब्रिटिश सेनाके लिये रङ्गरूट तो भरती नहीं हो रहे हैं और आयरिश स्वय सेवकोंका दल बढ़ रहा है। २३ अप्रैल सन् १९१६ ई० का दिन सारे देशमें एक साथ गदर करनेका नियत किया गया। मेक्विस्वनी बगावतका पूरा पक्षपाती था। ज्यों दिन निकट आने लगा उसकी नींद और भूख हराम हो गयी। वह दिनभर दौड़ धूप मचाता था और रातको सोचता था कि किस प्रकार सफलता प्राप्त होगी। उसके भाग्यसे वह दिन आ गया था जिसके स्वप्न वह छोटेपनसे देखा करता था। सब तैयारियां हो चुकी थीं,

स्वयंसेवक आशा लगाये हुए थे अब कलको देश उठ खड़ा होग किन्तु २२ अप्रैलके पत्रोंमें स्टाफके मुखिया प्रोफेसर मैकनी लकी सूचना छपी कि "किसी बड़े सकटके कारण, वह आज्ञ रद्द की जाती है जो आयरिश स्वयसेवकोंको कलके लिये दी गय थी।" इस आज्ञासे २३ तारीखका बलवा रुक गया। आयरिश रिपब्लिकन ब्रदरहुडने आज्ञा निकाली कि २४ तारीखको बलवा किया जाय। इस गड़बड़ीसे कहीं बलवा हुआ, कहीं नहीं हुआ। कार्कमें कुछभी नहीं हुआ। कार्कके लार्डमेयर वहाके स्वयंसेवकोंसे सन्धि करने आये और उनसे हथियार सौंप देनेको कहा। शर्त यह थी कि स्वयसेवकोंको दण्ड न मिलेगा किन्तु वचन तोड़ा गया और तीसरी मईको ब्रेबिस्वनी गिरफ्तार कर कार्कके जेलमें बन्द कर दिये गये। इसके बाद वे डबिलन भेजे गये और वहासे वेकफिल्ड जेलमें पहुचाये गये और अन्तमें उत्तरी वेल्सकी फ्रन्गाक छावनीमें नजरबन्द किये गये। सारे देशमें सनसनी फैल गयी और यही बात बलवाई चाहते थे। वे खूब जानते थे कि बलवा वर्तमान बलहीन स्थितिमें सफल नहीं हो सकता। किन्तु जब कई बड़े बड़े देशभक्त स्वतन्त्रताके इस युद्धमें अपने प्राणोंकी आहुति देंगे तो उन मुर्दोंमें भी जान आ जायगी जो जातिद्रोही और कायर हैं। फल यही हुआ देशकी चेतनतामें बिजुली दौड़ गयी। आयरिश लोकमत बलवेके पक्षमें हो गया। अगस्त महीनेमें गवर्नमेण्टने समझा कि इन नेताओंको लोगोंकी पहुचसे बाहर रखना चाहिये। इसलिये ये लोग रीडिंग

जेलमें रखे गये। दिसम्बरकी २४ तारीखको ये सब छोड़ दिये गये। इङ्गलैण्डके प्रधानमंत्रीने कहा कि हम इस कार्यद्वारा आयर्लैण्डमें ऐसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं कि यहाका लोकमत सन्धिके अनुकूल हो जाय। छूटे हुए नेताओंने फिर वही काम हाथमें लिया जिसे वे छोड़कर गये थे। फल यह हुआ कि २७वीं फरवरी सन् १९१७ ई०को डेविस्वली फिर गिरफ्तार कर लिये गये और इङ्गलैण्डके ग्रामयार्ड स्थानको भेजे गये। यहां ये नजरबन्दीमें रखे गये। जूनके अन्तमें यह आज्ञा रद्द की गयी और डेविस्वली कार्कको लौट आये। उनकी रफ्तार वही रही जो पहले थी। अक्तूबरमें वे फिर गिरफ्तार किये गये। ६ माहकी जेलकी सजा मिली। उन्होंने जेलके अन्दर भोजन छोड़ दिया और नवम्बरमें वे बरी कर दिये गये। १९१८ के मार्च महीनेमें वे फिर गिरफ्तार कर लिये गये। उनसे कहा गया अपनी ६ महीनेकी सजा पूरी करो। चौथी सितम्बरको उनके ६ महीने पूरे हुए और वे जेलके फाटकपर पहुंचते ही गिरफ्तार कर लिये गये और इगलैण्डकी लिङ्कन जेलमें भेज दिये गये। इस जेलमें डे वेलेरा आदि नेता भी रखे गये थे। अभियोग यह था कि ये लोग जर्मनीसे मिलकर षड्यन्त्र रच रहे हैं। इन सब बातोंसे आयर्लैण्डमें प्रजातन्त्रकी लहर बढ़ती गयी।

५---आयरिश प्रजातन्त्र

जिन दिनों सिनफिनमें कम आदमी थे उन दिनों उसकी

नीति पार्लामेण्टको अस्वीकार करके आयरिश प्रतिनिधियोंको हटानेकी थी। किन्तु अब जबकि इसका जोर बढ़ गया तो इसने अपने मेम्बर खड़े कर आयरिश शासन-सभा बनानेकी सोची। इसका अर्थ यह था कि जब देशका बहुमत प्रजातन्त्रवादियोंको अपने प्रतिनिधि चुनकर इङ्गलैण्डका राज्य नहीं चाहता है तो उनसे जबरदस्ती मनवाना असम्भव है। इस प्रकार 'डेल इरान' अर्थात् आयरिश शासन सभाकी उत्पत्ति हुई। दिसम्बर १९१८ के चुनावसे मालूम हुआ कि १०५ मेम्बरोंमेंसे ७३ मेम्बर प्रजातन्त्रवादी चुने गये हैं और अधिकांश वे हैं जो नजरबन्द हैं। इनमें मैकिस्वनी भी चुना गया था। १९१९ के मई महीनेमें सब नजरबन्द छोड़ दिये गये। आयरिश शासन-सभाने अपनी अदालतें, अपनी पचायतें तथा बोर्ड स्थापन किये। आयरिश स्वयंसेवक प्रजातन्त्रकी सेनामें परिणत हो गये। अब इंगलैण्डके साथ नियमित रूपसे युद्ध आरम्भ हो गया।

कार्कके चुनावमें टामस कर्टिन लार्ड मेयर चुना गया। किन्तु कुछ छद्मवेशी गुंडोंने उसे गोलीसे मार दिया। आयर्लैंडवाले कहते हैं ये गुंडे पुलिसवाले थे। जूरीने लायड जार्जको अपराधी बताया। इस स्थानकी पूर्तिके लिये मैक्स्विनी चुने गये। मैक्स्विनी पदका भूखा नहीं था, किन्तु वह समय संकटका आगया था और लोग घबरा रहे थे। पहले लार्ड मेयर टामस कर्टिनकी हत्यासे यह आशंका हो रही थी कि लार्ड मेयरका पद या तो खाली रह जायगा या इसपर अंगरेज सरकारका

कोई पक्षपाती रखा जायगा। ऐसी स्थितिमें मैक्स्विनीने जनताको ढाढस बंधानेके लिये यह पद स्वीकार किया। इस अवसरपर मैक्स्विनीने जो भाषण दिया उसमें उसने कहा था—"मैं एक सैनिकके रूपमें यह पद स्वीकार कर रहा हूं। पहला लार्ड मेयर मारा गया है उसकी खाली जगह भरनेके लिये मैं आया हूं। यह समय साधारण नहीं है। पहले लार्ड मेयरकी हत्यासे यह मालूम पड़ता है कि हमें भयभीत करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। इस धमकीका उत्तर देना हमारा पहला कर्तव्य है। इसका उचित उत्तर यही है कि हम निर्भय, शान्तचित्त और अपने उद्देश्यमें डटे रहें। यही बात दिखलानेके लिये मैं यह पद स्वीकार कर रहा हूं। ×+×× हमारा यह संग्राम प्रतिहिंसावृत्तिको चरितार्थ करनेके लिये नहीं है। यह तो सहिष्णुताका युद्ध है। इसमें उनकी विजय नहीं होगी जो शत्रुको अधिक यन्त्रणा पहुंचायेंगे किन्तु उनकी जो अधिक यन्त्रणा सह सकेंगे। साथ ही साथ हम अपना यह अधिकार भी नहीं छोड़ेंगे जिससे दुष्टों और हत्यारोंको अपने अपराधका दण्ड दिया जाता है। ××× कभी २ अपने वर्तमान दुःखसे छटपटाकर हम बिना विचारे मूर्खतासे चिल्ला उठते हैं कि हम बहुत बड़ा बलिदान कर रहे हैं। किन्तु इसका कारण यह है कि जातिके शूरवीर और सबसे श्रेष्ठ रत्नोंको ही जीवनदान करना पड़ता है। इससे छोटा बलिदान इसका उद्धार नहीं कर सकता। इस कारण ही हमारा संग्राम धर्मयुद्ध है। इसे देशके लिये मरे हुए इन वीरोंके रक्तने

पवित्र कर दिया है और यह शहीद हमारी विजयको पक्की कर गये हैं। जो काम उन्होंने अधूरा छोड़ा है वह हम उठा रहे हैं, निभाना भगवानके हाथ है। हम तो अपनी वारीमें अपना बलिदान चढानेको आये हैं। हम निरपराधका रक्त बहाने नहीं आये, हम तो अपना खून बहायंगे और यह सब अपने देशके उद्धारके लिये। शत्रुसे हम साफ साफ कहेंगे हमको दया नहीं चाहिये और न हम आपसे कोई समझौता करेंगे। किन्तु दयामय भगवानसे हम हाथ जोड प्रार्थना करे गे 'हे भगवन्! हमें शक्ति दीजिये जिससे धैर्यके साथ काम कर सकें, चाहे कितने ही कष्ट क्यों न पाय देशको विजयी बना दें।" पाठक इससे मालूम करेंगे कि किस भयानक समयमें मैक्स्विनीने लार्ड मेयरका संकटपूर्ण पद स्वीकार किया था।

मैक्स्विनीने जी जानसे प्रयत्न किया कि कार्क नगरमें सुप्रबन्ध रहे। सुबह दस बजे वह आफिस जाता था और रात दस बजे वापिस आता था। उसे दिखाना था कि प्रजातन्त्रवादी आयर्लेण्डमें स्वराज्य ही नहीं किन्तु सुराज्य भी रख सकते हैं। इस पदके साथ साथ मैक्स्विनी उन दिनों कार्क ब्रिगेडका कमाडिंग अफसर भी था। जहां कहीं प्रजातन्त्रवादियोंने म्युनिसिपलिटियों तथा अन्य बोर्डों को अपने हाथमें लिया वहीं ईमानदारी, कमखर्ची और अपने अच्छे इन्तजामसे जनताको अपने वशमें कर लिया। यह देखकर ब्रिटिश गवर्नमेण्टघबरायी। उसने उनकी अदालतें बन्द कर दीं, म्युनि-

सिपलिटीके बड़े बड़े पदाधिकारियोंको गिरफ्तार कर लिया और प्रजातन्त्रवादियोंको दबानेकी प्रबल चेष्टा की। १२ वीं अगस्तको रातके ८ बजे कार्कके सिटी हालको भी सेनाने घेर लिया। मैक्स्विनी और उसके दस साथी गिरफ्तार कर लिये गये। इसपर न कोई अभियोग लगाया गया न तलाशीमें कोई सन्देहजनक वस्तु वहां मिली। रातको १२ बजे सिटी हालपर फिर दूसरा धावा हुआ और मैक्स्विनीकी चिट्ठियोंका निजू दराज खोला गया जिसमें कुछ कागजपत्र मिले। इन कागजोंके आधारपर ४ अभियोग लगाये गये। कोर्ट मार्शलमें इनका मामला किया गया। इस मामलेकी रिपोर्ट 'कार्क इग्जमिनर' नामक स्थानिक पत्रके १७ वीं अगस्तके अङ्कमें इस प्रकार छपी थी—

"लार्ड मेयर राइट ओनरेबल टेरेन्स मैक्स्विनीने गिरफ्तारीके बाद भोजन नहीं किया था। उनमें दुर्बलताके चिह्न प्रकट हो रहे थे। एक आराम कुर्सीपर वह बिठलाये गये। दोनों तरफ बन्दूकधारी दो सिपाही खड़े थे। इनके कई मित्र और साथी वहां उपस्थित थे। जो आदमी अदालतमें आता था उसका नाम धाम पूछकर रजिस्टरमें लिखा जाता था और उसकी तलाशी ली जाती थी। जब लार्ड मेयरसे पूछा गया "क्या तुम्हारा कोई वकील भी है?" तो उन्होंने उत्तर दिया "मैं तुम्हारी कार्रवाईके बारेमें एक बात कहना चाहता हूं। तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध यह है कि मैं कार्कका लार्ड मेयर हूं, इस

रका सबसे बड़ा मजिस्ट्रेट हू और मैं घोषणा करता हू कि
ारी अदालत गैरकानूनी है। आयरिश प्रजातन्त्रके कानूनोंके
सार इसमें भाग लेनेवाले गिरफ्तार किये जा सकते हैं।"
इसके बाद सरकारी वकीलका बयान हुआ और कई
ोंकी गवाहिया हुई। अन्तमें मजिस्ट्रेटने मेक्स्विनीसे पूछा
"आपको कुछ कहना है?" मैक्स्विनी कुर्सीसे उठने लगा
ु मजिस्ट्रेटने कहा—"नहीं, आप कमजोर हैं, बैठे रहिये।"
ं मेयरने उत्तर दिया—"आपकी कार्रवाई समाप्त होनेतक मैं
ा रह सकता हू। उसके बाद मैं जीऊं या मरू एक बात
मैं कह चुका हू कि आपकी कार्रवाई गैरकानूनी है। मैं
कुछ कहना चाहता हू वह अपने बचावके लिये नहीं। आप
ा समझेंगे और बहुत शीघ्र समझेंगे कि आयरिश प्रजातन्त्र
तवमें विद्यमान है। मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हू कि
अपराध किसी राष्ट्रके प्रधानके प्रति किया जाता है वह
से बड़ा है और उसकी अवैधता और भी बढ़ जाती है जब
ऐसे पुरुषको गिरफ्तार करनेके साथ साथ उसका मकान
: कमरा जबरदस्ती खोला जाता है और वहासे उसके कागज-
उठा लिये जाते हैं। महाशयो! मैं थोड़ी देरके लिये स्थिति
ट कर आपको कटघरेमें रखना चाहता हू। मेरी तलाशीमें
कागज ऐसा मिला है जिसमें जूरीने मेरे भूतपूर्व पदाधि-
ीकी हत्याके विषयमें ब्रिटिश गवर्नमेण्ट और उसकी पुलिस-
एकमत होकर खूनका अपराधी बताया था। अब आप

स्पष्ट रूपसे समझ सकते हैं कि आज इस गैरकानूनी अदालतमें भी पहले इस बातका फैसला होता, किन्तु यह कागज छिपा दिया गया है। ऐसा करना उन खूनियोंका अपराध सिद्ध करना है। इससे आप समझ सकते हैं कि मेरी स्थिति सङ्कटपूर्ण है क्योंकि मैं किसी समय मारा जा सकता हूं। आप शायद पहले कागजको छिपाकर किसी दूसरे आदमीपर अभियोग खड़ा करना चाहते हैं, किन्तु मैं कहूंगा कि इन सबका जिम्मेवार मैं हूं। आप लोगोंने एक मजेकी बात और की है। मैंने एक चिट्ठी पोपको लिखी थी। यह ओलिवर प्लङ्केटको दीक्षा देनेके समय लिखी गयी थी। वह पोपके पास पहुंच चुकी होगी। जब वह यह सुनेंगे कि यह पत्र भी मेरे पास रहनेसे राजविद्रोही गिना गया है तो क्या ही हंसेंगे।"

इसपर सरकारी वकीलने कहा--"इस पत्रके कारण आपपर कोई अभियोग नहीं लगाया गया है। यह पत्र आपको लौटा दिया जायगा। "यह सुनकर लार्ड मेयर बोले"—अब इतने दिनों बाद इस भूलसुधारसे कोई लाभ नहीं। हां, मेरी एक और चिट्ठी पुलिस ले गयी है। पेरिसकी म्युनिसिपल काउन्सिलके अध्यक्षने यह पत्र मेरे पास भेजा था जिसमें कार्कके बन्दरगाहके विषयमें कई बातें पूछी गयी थीं। मैंने इसका उत्तर दिया और जवाबकी एक नकल अपने पास रख ली। अब फ्रेञ्च सरकार यह सुनकर खूब हंसेगी कि पेरिसकी म्युनिसिपलिटीके अध्यक्षके लिये यह अपराध है कि वह मुझसे पत्रव्यवहार करे और मेरी

जेलमें रहनेसे यह पत्र राजविद्रोही हो गया है। और लीजिये, कई विदेशीपत्र-संपादकोंके विजिटिंग कार्डस तलाशीमें मिले और वे भी राजविद्रोही गिने गये। मुझे इन बातोंकी कुछ परवा नहीं है। किन्तु यह अनुचित है कि दूसरोंको फंसानेके लिये एक स्थानपर मिले हुए कागज दूसरे स्थानपर मिले हुए बतलाये जायं। इस विषयमें सैनिकों और अफसरोंने विश्वासघात किया है। मैं साफ साफ कहूंगा कि मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ क्योंकि मैं आयरिश प्रजातन्त्रका सैनिक हूं और प्रत्येक सैनिकका आदर करना चाहता हूं। मैं फिर उन राजविद्रोही शब्दोंकी याद दिलाता हूं जो मैंने अपने निर्वाचनके समय कहे थे। मैंने कहा था "मैं किसीसे दयाकी भिक्षा नहीं मांगता हूं और न समझौता ही करना चाहता हूं। मैं यही सिद्धान्त मानता हूं, मैं कोई दया नहीं चाहता।"

लार्ड मेयरको कैदकी सजा दी गयी। उन्होंने कहा—"मैं यह कह देना चाहता हूं कि आप मनचाही सजा दीजिये किन्तु मैं शीघ्र ही इसका अन्त कर दूंगा। मैंने बृहस्पतिवारसे कुछ नहीं खाया है इसलिये मैं महीने भरमें ही मुक्त हो जाऊंगा।" इसपर मजिस्ट्रेट बोला—"क्या कैदकी सजा मिलनेपर आप भोजन करना छोड़ देंगे?" लार्ड मेयरने उत्तर दिया—"मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि मैंने अपनी पराधीनताका समय निश्चित कर लिया है। अब आपकी सरकार चाहे जो करे। जिन्दा रहूं या मर जाऊं किन्तु महीने भरके भीतर स्वाधीन हो जाऊंगा।"

उनको दो सालकी सजा हुई। दूसरे रोज सुबह तीन और चार बजेके बीच जहाजपर सवार कराकर वे वेल्सके पेम्ब्रोक डकपर पहुंचाये गये और लण्डन भेज दिये गये। १८ अगस्तकी सुबहको ४ बजे वे ब्रिक्सटन जेलके गवर्नरको सौंप दिये गये। अब उस यन्त्रणाका आरम्भ हुआ जो संसारमें उथल पुथल मचा गयी।

६—महात्माका अनशन व्रत

ब्रिक्सटन जेलमें जो धीरता मैक्स्विनीने दिखलायी वह उसे ही नहीं सारे आयर्लैंडको अमर कर गयी है। मैक्स्विनीने प्रण किया था कि महीने भरमें स्वाधीन हो जाऊंगा। पतितोंके उद्धारक भगवानने कहा—“तुम सदा स्वाधीन हो, किन्तु उन गिरे हुए लोगोंको अपने अपूर्व त्याग और सहिष्णुताके उदाहरणसे उठा जाओ जो गुलामीको गलेका हार समझ कर उससे चिपटे हुए हैं।” इसलिये महात्मा मैक्स्विनीने तिल तिल करके अपना मांस और अपनी हड्डी उन देवताओंको खिला दी जो बिना इतने बड़े क्रूर बलिदानके पराधीन देशको जगानेको तैयार नहीं रहते।

इस विषयपर लार्ड मेयरके पादरी फादर डोमिनिकने अपनी आंखों देखी जो बातें लिखी हैं हम यहां उनमेंसे कुछ देंगे। पाठक ध्यानसे पढ़ें और मनन करें कि देशका कार्य्य उन लोगोंसे नहीं होता जो जेलमें जाकर चोरीसे भी पूरी कचौड़ी खाते हैं, माल-पुये उड़ाते हैं और इतना साहस नहीं करते कि कमसे कम

ग्रेट, तमाखू आदि दुर्गुण तो छोड़ दे जिनका व्यवहार करनेसे
धारणसे साधारण नौकरशाहीके कर्मचारी—जेल दारोगाके
मने उनकी त्यागी महान्-आत्मा झुक जाती है। सुनिये,
दर डोमिनिक् क्या कहते हैं—"मैं बीसवीं तारीखको लेडी
रके साथ लण्डनके लिये रवाना हुआ। दूसरी सुबह वहा
चा। लार्ड मेयरको देखते ही मालूम हुआ कि इनकी हालत
त खराब है। चेहरा पीला पड गया था, मुह सूख गया था
र कमजोरी अपना राज्य जमा चुकी थी। किन्तु बुद्धि नि
ल स्पष्ट थी और वह दृढप्रतिज्ञ थे कि भले ही उनकी जान
ली जाय किन्तु वे जेलके बाहर निकल कर रहेंगे। वह अस्प
लके उस कमरेमें थे जहां आयर्लैण्डका सिंह रोजर केसमेण्ट
दी था। कई अंगरेजी पत्रोंने छापा था कि लार्ड मेयरने भोजन
रू कर दिया है या उठनेके योग्य हो गये हैं, आदि। यह सब
तें सरासर झूठ थीं। लार्ड मेयरने गिरफ्तारीके बाद भोजन
या ही नही। लार्ड मेयर मैकिस्वनी ब्रिक्सटन जेलमें
दा शान्त होकर पलगपर लेटे रहते थे। कारण यह था कि
अपनी जीवनी शक्तिको सुरक्षित रखना चाहते थे। देशके
ये मरनेको तैयार रहते हुए वह यह देखनेको बडे इच्छुक थे
आयरिश झण्डेको ससारकी जातिया सलामी दें।"

"कलम दम नहीं रखती कि उनकी दारुण यन्त्रणाओंका वर्णन
। सोचिये और अनुभव करनेकी चेष्टा कीजिये कि तुम्हारे
धेमें, पीठमें, घुटनोंमें तथा बदनके प्रत्येक जोडमें कितना दर्द

होगा यदि एक दिन भी लेटे रहना पड़े। ऐसी स्थितिमें घुटनों-को हिलाने डुलानेसे कितना आराम मालूम पड़ता है किन्तु इस वीर सैनिकको यह आराम भी न मिला। उसके घुटनोंका मांस सूख गया था और उसमें इतनी ताकत भी न थी कि वह अपने पहनके कपड़ोंका भार ही उठा सके। एक दिन नहीं सत्तर दिन तक लगातार इस वीरने यह यातना सही। इस कष्ट और यन्त्र णाके साथ साथ अनशन व्रतकी तकलीफ थी। मुझसे कहा गया था कि कुछ दिन भूखे रहनेके बाद फिर खानेकी इच्छा ही नहीं रहती। मैंने लार्ड मेयरसे इस विषयपर प्रश्न किया। उन्हे बेहोश होनेके दिनतक भोजन करनेकी इच्छा थी। एक बार तो उन्होंने कहा कि मैं एक प्याला चायके लिये इस भूखकी हालत-में एक हजार पाउण्ड भी दे देता। ज्यों ज्यों भोजन न मिलनेसे खून कम होता गया उनको स्नायविक दुर्बलताने घेर लिया। उनको हृद्रोग हो गया, सिरमें सूई चुभनेके समान दर्द होने लगा, आखें अन्धी होने लगीं और कान बहरे होने लगे। उस समयकी मानसिक व्यथाका विचार कीजिये जब वह अपनी पत्नी, बहन और भाइयोंको देखते थे। इनके उपस्थित रहनेसे उन्हें आराम भी था, किन्तु इनसे अलग होनेका दुःख और यह विचार कि मेरा दुःख देखकर इन लोगोंके हृदयमें क्या भाव उठते होंगे उन्हें घोर कष्ट दे रहा था। इसपर भी वह न कभी गिड़गिड़ाये और न नाममात्रको डगमगाये। उन्होंने ईश्वरको धन्यवाद दिया कि उसने उन्हें वह मौत दी है जो संसारमें कम लोगोंके भाग्य-

ी होती है। डाक्टरों और दाइयोंने अच्छी सेवा की किन्तु अन-
ान व्रतके कारण यह लोग भी उनसे नाराज थे। वे इस बेव-
ूफी समझते थे। लार्ड मेयरको समझाने बुझानेकी चेष्टा करके,
नके परिवारकी याद दिलाकर और यह कहकर कि यदि आप
ीते रहते तो आयर्लैण्डके लिये कितना काम कर सकते थे
न्होंने इनको बडा दुःख दिया। अपनी यन्त्रणा भूलकर
ार्ड मेयरको उन साथियोंकी याद आती थी जो कार्ककी
लमें कैद थे। वे नितप्रति उनका समाचार पूछते थे
ौर उनके लिये प्रार्थना करते थे। उन वीरोंके विषयमें
ाह कहते थे कि जबतक हमारे पास ऐसे नवयुवक और
से पुरुष हैं आयरिश प्रजातन्त्रको कोई भय नहीं। इनकी तुलना
ंगरेजोंसे कीजिये, शिक्षित अंगरेजोंसे कीजिये, इन डाक्टरोंसे
ीजिये जो हमारे पास हैं तो आपको मालूम हो जायगा कि
ा कितने श्रेष्ठ हैं। वे नितप्रति ईश्वरकी वन्दना करते थे
ौर कहते थे कि मुझे इससे शक्ति मिल रही है। धन्य है
ेन्स मैक्स्विनी ! धन्य है आयरिश प्रजातन्त्रकी सेनाका
ार्क ब्रिगेडका कमांडिंग अफसर !! धन्य है कार्कका लार्ड
ेयर !!!"

अनशन व्रतके चौहत्तरवें दिन लार्ड मेयर मैक्स्विनी परलोक
सिधारे। उनके मित्र ओ हेगार्टी कहते हैं कि यदि डाक्टर उन्हें
ेहोशीकी हालतमें कुछ दिन पहले भोजन न कराते तो वह
ुछ दिन और जीवित रहते। इस वीरने अपना वचन

रवा और जेलका दरवाजा तोड डाला। लण्डनके टाइम्सने ठीक ही कहा था "इस वीरने मौतको वरण करके अपना साहस और दृढ निश्चय संसारको दिखला दिया।" ब्रिटिश गवर्नमेण्टने उनके मरनेके कुछ दिन पहले उनकी दो बहनोंको बलात्कार जेलसे बाहर कर दिया। जब वे मर गये तो उनकी लाश उनकी स्त्रीको देनेमें आनाकानी की। जब लाश मिली भी तो रास्तेमें रोक ली गयी। कार्कमें जब यह लाश पहुची तो अजीब हालत थी। सिटी हालमें जहा यह रखी गयी थी दर्शकोंका मेला लग गया। ३१वीं अक्तूबर सन् १९२० ई० को अपने ४१ वे वर्षमें मैक्स्विनी ममाधिस्थ हुए। इनकी कब्रपर आयर्लैण्डके राष्ट्रपतिने कहा था कि "जोन आफ आर्क स्वर्गमें अपने इस सहयोद्धाका स्वागत कर रही होगी।" इनसे उपयुक्त शब्द और कहा मिलेंगे।

स्वाधीनताके सिद्धान्त

प्रथम परिच्छेद

स्वाधीनताका मूल

(१)

हमें स्वाधीनताके लिये संग्राम क्यों करना चाहिये ? क्योंकि स्वाधीनताके इस संग्रामका वास्तविक अर्थ और इसकी ओर प्रवृत्त करनेवाली असली शक्तिको बहुत कम लोग समझते हैं और इस कम समझनेका विचित्र फल देखनेमें आ रहा है। एक ही पक्षके लोग अपने आदर्श और कार्यक्रमके विषयमें महान् व गम्भीर भेदोंके कारण बिछुड़ गये हैं।

(२)

मैं अपनी मातृभूमिमें देख रहा हूं कि कार्यके परिणामसे उसके साधनोंको भला या बुरा बतानेका सिद्धान्त सर्वत्र काममें लाया जा रहा है। निन्दनीय कूटनीतिको काममें लानेके लिये एक पक्ष दूसरेको दोष देता है किन्तु ऐसे उपायोंको काममें लानेसे यदि उसे गर्हित विजय प्राप्त हो तो उसे कुछ भी सङ्कोच नहीं होता इसलिये आवश्यक है कि साफ बात कही जाय। वह युद्ध जिसमें

शुद्ध साधनोंसे काम नहीं लिया जाता विजयको पराजयसे
अधिक कलंकित कर देता है। मैं यह बात स्पष्टरूपसे कह र
हू, क्योंकि हम ब्रिटिश राज्यसे अलग होनेके पक्षमें हैं और मैं य
दलील भी सुन रहा हू यदि हो सके तो अंग्रेजोंकी शक्तिय
चकनाचूर कर देनेके लिये हमें किसी विदेशी राष्ट्रसे सन्धि क
लेनी चाहिये। भले ही वह राष्ट्र किसी दूसरे देशकी स्वाधीनत
को नष्ट भ्रष्ट करनेमें लगा हुआ हो। यदि देश प्रत्यक्ष अथव
अप्रत्यक्ष रूपसे दूसरी जातिकी स्वाधीनताका हरण करके स्वत
बने, तो उसके सिरपर वही श्राप पड़ेंगे जो यह युगोंसे स्वय
अत्याचारके ऊपर बरसाता आ रहा है।

मैं समझने लगा हू कि हमारे लिये यह सम्भव है कि नीच
उपायोंसे स्वाधीनता पा लें। इसलिये यह और भी आवश्यक
कि हम अपनी नीतिकी घोषणा करें और समझें कि हम कह
खड़े हैं। मैं तो इस सिद्धान्तको पकड़कर खड़ा हूं कि आत्मिक
पराजयका मूल्य बड़ीसे बड़ी सांसारिक विजय भी नहीं चुक
सकती। जो पक्ष इसके विरुद्ध है वह पक्ष मेरा नहीं हो सकता

(३)

हमारी स्वाधीनताका दावा किस बुनियादपर है? बालकोंके
स्वाभाविक उत्साह और वृद्धोंके अनुभवपर। प्रथम जब कि
लड़के स्कूलोंसे ताजे बाहर निकलते हैं, उनकी आयु बीसके नीचे
ही होती है, वे प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक वस्तुके विरुद्ध आक्रमण

करनेको तैयार रहते हैं, तोतो बातें कहनेमें आनन्द लेते और स्वाधीनताके विषयमें छाती खोलकर खूब बातें करते हैं किन्तु इतनेहीमें सन्तुष्ट हो जाते हैं कि हम बडी निर्भीकता पूर्वक बातें छाट रहे हैं। इसके बाद बचपन चला जाता है, स्थितिकी भलीभांति परीक्षा करनेके लिये हम मैदानमें आते हैं और संसारमें अपना निश्चित कार्य ग्रहण करते हैं। कई वर्षतक संसारका अनुभव प्राप्त करते हैं, जीवनके कठोर संग्राममें पडते हैं और घोर संकटोंके बाद हममें स्थिरता आ जाती है। हमारा हृदय गहरी बातोंमें पैठनेके लिये उत्सुक होता है। तब इतना ही यथेष्ट नहीं समझा जाता कि हम पराक्रमकी बातें करें। हमारी बातोंसे सत्यकी ध्वनि निकलनी चाहिये। ये दो कारण न होते तो शायद ही कोई मनुष्य प्यारी मातृभूमिपर बलि जानेके लिये तत्पर होता।

(४)

हमारी प्रबल इच्छा है कि हमारी आत्मा उन्नत हो। इसी लिये हम स्वाधीनताका दावा करते हैं। सांसारिक उन्नति हमारे लिये प्रधान विषय नहीं है। जीवन संग्रामके लिये परमात्माने मनुष्यको कुछ आत्मिक और शारीरिक शक्तियां दे रखी हैं। यह बात मनुष्य तथा समाजके लिये बहुत आवश्यक है कि इन शक्तियोंका विकास करने और योग्यतापूर्वक अपना कर्तव्य निबाहनेके लिये इनसे पूरा काम लिया जाय। स्वाधीन राष्ट्रमें प्रत्येक मनुष्य और समाजको पूरी उन्नति करनेके लिये सहज

परिस्थिति मिल जाती है । पराधीन राष्ट्रमें ठीक उसका उलटा होता है । जब एक देश दूसरे देशको अपने अधीन रखता है तो दास देशका साम्पत्तिक और नैतिक नाश होता है और लूट खसोटका शिकार बननेके कारण उसकी सम्पत्ति घटती है। विजयी जाति अपनी प्रभुता जमानेके लिये जिन दूषित आचरणोंका व्यवहार करती है उनसे विजित जातिका नैतिक पतन होता है । इस नैतिक नाशसे राष्ट्रको बचानेके लिये गुलामीसे लड़ना पड़ता है । दास देशमें दोष फलते और फूलते हैं । जो आदमी यह बात भलीभांति हृदयङ्गम कर लेता है उसके लिये इसके विरुद्ध लड़नेके सिवा और चारा ही नहीं रहता । दासताके साथ हम सन्धि नहीं कर सकते । राज्यमें शासनकर्त्ताओंका कर्त्तव्य होता है कि वह प्रजाके उत्तमसे उत्तम गुणोंका उत्कर्ष करें । विदेशी शासन घृणितसे घृणित दोषोंको बढ़ानेमें सहायता करता है । हमारे इतिहासमें इसके कई उदाहरण मिलते हैं । जब राजघरानेके लोग यहां पधारते हैं तब अपने शासनकी जड़ मजबूत करनेवालोंपर रिआयतों और उपाधियोंकी बौछार करते हैं । कृपा उनपर की जाती है जो राष्ट्रीय हितका घात करते हैं । जरा सोचिये तो सही ! जिन मनुष्योंका सम्मान किया जाना चाहिये था वे ऐसे लोगोंकी तुलनामें कुछ नहीं समझे जाते जो निन्दाके पात्र हैं । दुराचारी राजनीतिज्ञके भीतर भी कुछ सद्गुण छिपे रहते हैं । स्वतन्त्र राष्ट्र इन्हें जगाकर इनका उत्कर्ष करता है पर विदेशी सरकार नीच वृत्तिया काममें लानेके लिये उसे उपाधि

देती है। ऐसे प्रलोभनसे अवश्य ही दुर्नीति बढ़ती है। मनुष्य देवता नहीं है और उत्तमसे उत्तम परिस्थितिमें भी उसे उचित कार्य करना कठिन मालूम पड़ता है। जब बुरा काम करनेके लिये चारों तरफसे प्रलोभन मिलता है तो उसमें स्वत नीच भाव प्रकट होने लगते हैं। देशके सौभाग्यसे हममेंसे अधिकांश इस बुरे प्रभावके वश नहीं होते। किन्तु हमारा विश्वास अपने ऊंचे आदर्शोंसे हट जाता है। हम आदर्शोंकी अवहेलना करने लगते हैं। हमारे भीतर सद्वृत्तियां रहती हैं किन्तु हम उन्हें विकसित नहीं होने देते। प्रत्येक मनुष्यका हृदय महान् और सुन्दर आदर्शोंके लिये उत्सुक रहना चाहिये किन्तु जो भूमि सर्वत्र जकडी हुई है और बरबाद हो गयी है वहां इस बातकी आशा करना निराशाके गढेमें गिरना है। स्वतन्त्रताके दावेका गूढ अर्थ यह है कि बल प्रयोगसे हमारी आत्माका हनन कोई नहीं कर सकता।

(५)

यदि हमारा उद्देश्य बदला लेना होता तो सबसे अच्छी नीति यह होती कि हम जैसे हैं वैसे ही बने रहें। मौजूदा हालतमें हमारा देश इङ्गलैंडके लिये भयका घर है। यह बात सिद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि इङ्गलैंड अपनी मूर्खताके ढगसे हमें शान्त करनेकी बारबार चेष्टा करके स्वय इस बातको स्वीकार कर रहा है। यदि इगलैंड चैनसे रह सकता तो हमारी वह क्या परवाह करता। यदि हम इङ्गलैंडसे अलग हो जानेके उद्योगमें

सफल हो जायगे तो हमारे बाद सबसे अधिक लाभ इङ्गलैंडका ही होगा। यह बातअद्भुत सी जान जान पडती है किंतु सत्य यही है। इसकी सत्यतामें इसलिये बाधा नहीं पडती कि अंग्रेज लोग इस समय शायद ही इसे समझते अथवा इसका मूल्य जानते हैं। हमारे मुल्ककी सैनिक शक्ति इस समय हास्यप्रद है। स्वाधीन आयर्लैंड इसे ठीक करेगा—शत्रुके आक्रमणोंके विरुद्ध अपना सैन्यबल बढायेगा। इससे इङ्गलैंड आयर्लैंडकी ओरसे होनेवाले शत्रुके आक्रमणसे बच जायगा। मेरी समझमें इतना बडा मूर्ख कोई न होगा जो यह विचार करे कि स्वतंत्र आयर्लैंड बिना किसी मतलब दूसरोंसे झगडा करेगा। हम निष्पक्ष रहेंगे। हमारी सहज बुद्धि हमें निष्पक्ष बनाये रखेगी और हमारा सत्यप्रेम भी हमें झगडेसे अलग रखेगा।

स्वाधीन राष्ट्रके ऊपर यह जिम्मेदारी होती है कि वह दूसरे राष्ट्रकी स्वाधीनताका शत्रु न बना रहे। सर्वजातीय स्वाधीनता सार्वभौमिक रक्षाका पथ साफ करती है। यद्यपि यह सत्य है कि जबतक संसारमें जालिम सरकारें हैं एक राष्ट्र चाहे वह कितना ही भला क्यों न हो संसारकी दशा नहीं सुधार सकता तो भी उसका कर्तव्य है कि अपना राजकाज इस ढगसे चलावे कि वह सार्वभौमिक स्वतंत्रता और भ्रातृत्वके अनुकूल हो। आश्चर्यजनक होनेपर भी ठीक बात यह है कि इङ्गलैंडसे सम्बन्ध टूट जानेपर ही हमारी उससे टिकाऊ मित्रता हो सकती है-क्योंकि आयर्लैंडका कोई भी निवासी इतना मूर्ख

नहीं है जो चिरकालके लिये इगलैंडसे लडते रहना चाहे। यह बात बुद्धिके बाहर है। हमारी स्वाधीनताके सग्रामके स्वच्छ अभिप्रायका प्रमाण यह है कि हमारी स्वतन्त्रता शत्रु को हानि पहुंचानेके बदले उसका उपकार करनेके लिये होगी। यदि हम शत्रु को क्षति पहु चाना चाहते हैं तो हमें आज कलकी ही हालतमें अर्थात् उसके लिये भयका अड्डा बनकर रहना चाहिये। ऐसे अवसर मिलने रहेंगे किन्तु ये हमें शायद ही सुखी बनावें। यथार्थमें विचार किया जाय तो कुछ देशोंको स्वतन्त्र कर देनेमे ही स्वाधीनताका कार्य पूरा नहीं होता। स्वाधीनताके द्वारा नाना जातियोंमें सामञ्जस्य और ससारमें सच्चा बधुत्व स्थापित होना चाहिये।

(६)

मैंने बहुत सोच विचार कर लिखा है जिससे कोई इस प्रबधका अर्थ समझनेमें भूल न करे। मेरा प्रयोजन स्पष्ट है।

हमारी अंतरात्मा हमें बतला रही है कि हम व्यक्ति तथा राष्ट्रका उद्धार न कर सकनेसे बिना हवाके घुट घुटकर मर रहे हैं। यदि हम आगे नहीं बढे तो अवश्य ही हमें गिरना होगा। स्वतन्त्रताका प्रश्न हमारे लिये जीवनमरणका प्रश्न है। इसीमें हमारी आत्माका मोक्ष है। यदि सारी जाति स्वतन्त्र होवे लेनेके लिये कटिबद्ध है तो सुख हमारे सामने है। हमारी महान विजय होगी। यदि कुछ ही लोग सत्यप्रतिज्ञ पाये जाते हैं तो उन्हें

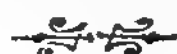
सख्यामें कम होनेपर भी युद्धक्षेत्रमें डटे रहना चाहिये। वह मनुष्यत्वके जन्मसिद्ध अधिकारके लिये लड़ रहे हैं। बहुसख्यक लोगोंको न तो इस स्वतन्त्रको मेटनेका कोई अधिकार है और न इसे नाश करनेकी ही ताकत है। अत्याचारी लोग सत्यके इन सैनिकोंको तग कर सकते हैं, देश निकाला दे सकते हैं, फाँसी पर लटका सकते हैं पर स्वतन्त्रताका नाश नहीं कर सकते। आवश्यकता नहीं है कि पलटनें स्वाधीनताकी रक्षा करें और महात्मा इसकी घोषणा करें। हा कवियोंने सदा इसकी महिमा गायी है और असख्य जनता अन्तमें इसे स्वीकार करेगी। केवल एक व्यक्ति स्वतन्त्रताकी रक्षा करके सिद्ध कर सकता है कि मनुष्यसे इसे कोई जुदा नहीं कर सकता। और चूंकि ऐसे अकेले आदमीकी हार कभी नहीं होती इसलिये स्वाधीनता तथा सत्य सदा अमर रहे हैं।

आयर्लैंडकी ऐसी दशा कभी नहीं हुई कि सारे देशमें केवल एक ही आदमी स्वतंत्रताका भक्त रहा हो। उसकी ऐसी दशा कभी हो भी नहीं सकती। हम सदियोंसे इसलिए जीवित नहीं हैं कि हमपर किसी दूसरेका आधिपत्य हो। प्रस्तुत संग्रामका वास्तविक अर्थ, इसकी आध्यात्मिकता तथा यह ज्ञान कि उचित साधनोंसे स्वतन्त्रता प्राप्त करना मनुष्य जातिमें भ्रातृभाव फैलानेके लिये उद्योग करना है प्रत्येक देशवासीका यह कर्त्तव्य बना देता है कि वह अधिकाश लोगोंकी उपेक्षा करके सत्यका अवलंबन करे। जिसपर बहुमतके विरोध करनेका

कठिन अवसर आता है उसे बहुत बड़ा भार वहन करना पड़ता है किन्तु वह यह जानते हुए डटा रहता है कि उसकी विजय अधिकांश लोगोंको उस प्रिय आदर्शकी ओर ले जायगी जिसका उन्हें पता भी न था। वह अपने आदर्शके लिये गुप्तरूपसे तिरस्कृत होकर, प्रकटमें भ्रमपूर्ण सिद्धान्त फैलानेका दोषी समझा जाकर, आपत्कालमें अटल रहकर और कभी न हारकर, कभी हताश न होकर तथा अपने थोड़ेसे सहयोद्धाओंको आनेवाले शुभ दिनके लिये उत्साहित करते हुए अच्छी अवस्थामें अभीष्टको सिद्ध करते हुए, लड़ता रहेगा। यदि ये थोड़ेसे स्वतन्त्रताके सैनिक खेत रह जाय तो प्राण देते समय अपने आदर्शकी उच्चताको संसारके सामने उज्ज्वल रूपसे रख जाते हैं। उनके बलिदानसे देश उनके आदर्शके प्रति चौकन्ना हो जाता है और जिसने देशको जगाया तथा आदर्शकी रक्षाकी उसकी सत्यता सिद्ध हो जाती है। सत्यता सिद्ध होती है उसी सारी जातिकी आवाजके विरुद्ध जिसके विरुद्ध वह एक समय अकेला खड़ा हुआ था। जिस समय वह मैदानमें अपने प्राणकी आहुति देता है उसी समय वह सारी जातिका त्राणकर्ता बन जाता है।



द्वितीय परिच्छेद



सम्बन्ध-विच्छेद

(१)

जब हम ब्रिटिश साम्राज्यसे अलग होनेके लिये यह दलील पेश करते हैं कि सम्बन्ध टूटनेपर ही हमारा देश पूरी उन्नति कर सकेगा और इसीके द्वारा इंगलैण्डके साथ हमारी पक्की सन्धि हो सकेगी तो हमारे शत्रुओंमें नाना प्रकारके भाव देखनेमें आते हैं। कुछ लोग इसपर सरसरी तौरपर और जोशमें आकर विचार करते हैं और अपने दलका ध्यान रखते हुए समझते हैं कि यह नरम अथवा निष्पक्ष दलपर आक्षेप किया गया है। दूसरे लोग इसपर मोटा विचार करते हैं, किन्तु अपने दिलमें सोचते हैं कि हम वैज्ञानिक रूपसे इसकी आलोचना कर रहे हैं और मुस्कुराकर इस प्रश्नको बेहूदा समझ अपने दिलसे बाहर कर देते हैं। अपने ही देशके नरम तथा निष्पक्ष दलसे वर्तमान समयमें इस विषयपर लड़ना ठीक नहीं है। किन्तु इन लोगोंके कारण हम लोगोंका दिल नहीं टूटना चाहिये क्योंकि यह लोग भी जनताके साथ खिंचे हुए चले आवेंगे। एक शुभ दिन आयगा जब एक महत्कार्य या एक वीरोचित बलिदानसे देशकी चेतनतामें बिजलीसी दौड़ जायगी और जनता

अपनी कुम्भकर्णी निद्रा और दुराग्रहसे एकाएक सम्बन्ध तोड़ देगी और सत्य, वीर तथा साधु रूपसे स्वतन्त्रताकी जय मनाते हुए आगे बढ़ेगी। हमें उस शुभ मुहूर्तके लिये काम करना और तैयार रहना चाहिये।

(२)

ब्रिटिश साम्राज्यसे बाहर हो जानेके प्रश्नपर बारीक आलोचना करनेवाले सज्जनके भावोंके लिये कुछ अशमें हम भी दोषी हैं। क्योंकि हमने कभी यह समझानेकी चेष्टा नहीं की कि सम्बन्ध विच्छेदकी नीति उत्तम और बुद्धिमानीकी है। हमने अबतक विच्छेदकी नीतिको अपना अधिकार समझकर छातीसे लगा रखा है। इसके लिये लड़ाई की है, आत्मत्याग किया है और प्रतिज्ञा की है कि प्राण जानेपर भी इसे प्राप्त करेंगे, किन्तु हमने जीवनविज्ञानमें इसका निर्दिष्ट स्थान नहीं समझा है। चाहे दार्शनिक विचारकने इसपर अधिक विचार न किया हो तौभी उसने एक त्रुटि सुझायी है। हमें इस प्रश्नपर तात्विक रूपसे भी अवश्य विचार करना चाहिये—प्रश्नके भीतर घुसकर न कि सरसरी तौरपर। दर्शन और विज्ञान इस सत्यकी घोषणा करते हैं कि सारा संसार अखण्ड और अविरोधी है और ज्ञानकी वृद्धिके साथ साथ ऐसे नियम आविष्कृत हो सकते हैं जिनसे विश्वकी व्यवस्था और एकताका और भी निरूपण हो जायेगा। इसलिये यदि हम विच्छेदवादियोंका पक्ष उचित सिद्ध करना चाहते हैं तो हमें दिखलाना चाहिये कि यह विच्छेद

हमारे राष्ट्रीय जीवनमें सामञ्जस्य, एकता तथा उन्नतिका प्रचार करेगा। यह संसारके अन्य राष्ट्रोंमें हमें उचित स्थान दिलायगा और हमें अपने उस राष्ट्रीय उद्देश्यको पूरा करनेमें सहायता देगा जिसे हम स्वाधीनताके संग्राममें सदा यह सोचते हुए सामने रखते आये हैं कि वह महान् आदर्श हमारे उद्योगकी प्रतीक्षा कर रहा है।

(३)

वह श्रेष्ठ सङ्कल्प जो हमारे जीवनका सर्वस्व है, जो हमारे सामने कठोर कर्तव्य निर्धारित करता है, जिसका अर्थ आत्मबलिदान, परमप्रयास, पर्याप्त धैर्य और सम्भवतः उद्देश्य-सिद्धिसे पहिलेही मृत्युका आलिङ्गन करना है, इतना शक्तिशाली होना चाहिये कि इसकी सत्यता उन सिद्धान्तोंको स्पष्ट करनेसे प्रमाणित हो जाय जो उसके मूलमें हैं, तथा उसका औचित्य दिखाते हैं अन्यथा हम उसके लिये आत्मसमर्पण नहीं कर सकते। अब हम स्पष्ट करके बतलायगे जिससे मालूम हो कि यह नीति देशवासियोंमें नयी जान डालनेवाली तथा उन्हें उत्तेजना देनेवाली है। किन्तु इसपर विचार करनेके पहिले हमें कई ऐसे दुराग्रहोंको छोड़नेके लिये तैयार रहना पड़ेगा जिन्होंने चिरकालसे हमारे दिलपर जड़ कर रखी है। यदि हम ऐसा करना नहीं चाहते तो सत्यको जलाञ्जलि देनी होगी।

इस कार्य्यमें आगे बढ़ते हुए हमारा उत्साह भी बढ़ता जायेगा और जब हम यह बात सदा ध्यानमें रखेंगे कि

ज्ञाताका ध्येय सब जातियोंके लिये सुख तथा मोक्ष प्राप्त करना है और देशको, न कि स्वार्थमें डूबे हुए इसके किसी छोटे टुकडेको मनुष्यके लिये अधिक मनोरम निवासस्थान बनाना है तो हम अन्तमें अवश्य विजयी होंगे।

इस विचारसे यह विषय सब विचारशील पुरुषोंके लिये महत्त्वपूर्ण तथा चित्ताकर्षक बन जाता है। हमारा जो आलोचक मुस्कुराकर इसे टाल देता वह अब उत्सुकतासे इसपर विचार करेगा तो भी उसका विश्वास इसपर जम नहीं सकता। वह उजाड की हुई जन्मभूमिकी ओर अगुली उठाकर शत्रुके बलके साथ इसकी दुर्बलताकी तुलना करके यह प्रतिपादित कर सकता है कि तुम्हारे विचार अच्छे हैं, किन्तु वे स्वप्नमात्र हैं। इसके मानी हैं कि उसके दिलमें हमारी बात कुछ न कुछ जमी है। यह भी एक लाभ है।

(४)

हमारा वैज्ञानिक समालोचक देशकी उजडी हालत दिखाकर एक साधारण भूल करता है। वह बिना हेतु मान लेता है कि देशभक्त मातृभूमिके भलेके लिये जो काम करता है उसका फल उसे अपने ही जीवनकालमें मिल जाना चाहिये। यह निस्सन्देह झूठ बात है क्योंकि मनुष्यजीवन वर्षों से गिना जाता है और जातिका जीवन सदियोंसे। और चूंकि राष्ट्रका कार्य भविष्यमें उसे पूर्णावस्थाको पहुचानेके लिये हाथमें लिया जाता है देश

भक्तको ऐसे ध्येयके लिये परिश्रम करनेको तैय्यार रहना चाहिये जिसकी प्राप्ति दूसरी पीढ़ीमें हो।

देखिये, व्यक्ति अपने जीवनका कार्यक्रम किस प्रकार निर्धारित करता है। बचपन तथा किशोर अवस्थामें वह तैयारी करता है जिससे उसका यौवन और प्रौढ़ावस्था जीवनका सर्वश्रेष्ठ युग हो सके। शरीर हृष्ट पुष्टहो, मन सबल हो जिससे बुद्धि निर्मल बने ; उद्देश्य महान् रहे और उच्चाकांक्षा हृदयमें वास करे तथा इन गुणोंकी सिद्धि एक निश्चित महान् कार्यकी सफलताद्वारा प्राप्त की जा सके। उसी मनुष्यकी प्रौढ़ावस्था उत्तम होती है जिसने जीवनका पहिला भाग भली प्रकार बिताया हो और शक्ति सञ्चय की हो। प्रारम्भिक अवस्थामें खेत तैयार किया जाता है और बीज बोया जाता है जो विभवके समय पूर्णावस्थामें पहुंचता है। यही बात जातिके लिये भी लागू है। हमें पूर्ण उन्नतिके लिये खेत तैयार करना और बीज बोना चाहिये। हमें यह बात ध्यानमें रखकर देशके कार्यमें उद्यत होना चाहिये कि जातिकी अभिलाषा एक पीढ़ीमें नहीं बल्कि कई पीढ़ियोंमें पूरी होगी। इसका आनन्द आनेवाली पीढ़ियां भोगेंगी। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम ध्येयको अपनी दृष्टिसे परे समझ कर निरुत्साह तथा निरानन्दसे काम करें। हम अपनेही जीवनमें इस आशास्थलपर पहुंच सकते हैं यद्यपि हम इसके सब महान् चमत्कारोंका इस क्षुद्र जीवनमें पता नहीं लगा सकते। वह आनन्दके दिन कई युगोंमें आयेंगे। कई लोग हमारी उस महान् विजयका उत्सव मनानेके

लिये जो हमारी पूर्ण स्वतन्त्रताको स्थापित करेगी जीवित नहीं रहेंगे तौभी वे बिना पुरस्कार पाये न रहेंगे क्योंकि उन्हें भावी विजयकी मूर्तिके दर्शन प्राप्त होंगे। जब जान बूझकर ऐसे भविष्यके लिये परिश्रम किया जाता है तब आत्मा ऊंची उठती है। जब हम समझते हैं कि हमारे उद्देश्यको जनताने भलीभांति समझकर ग्रहण कर लिया है तो अत्याचार इस उद्देश्यका नाश नहीं कर सकता। हमारे देशका भाग्य बन गया और उसकी स्वाधीनता अटल रहेगी यह जानकर क्या आत्मा कम आनन्दित होती है? ऐसे एक नेताके विरुद्ध मनमाने आक्षेप करते जाइये किन्तु उसका हृदय आनन्दमें मग्न रहता है और यह उसे अदम्य उत्साह देता है और अन्तमें सिद्ध हो जाता है कि वही बुद्धिमान रहा। उसके विचार भूतकालके विषयमें स्पष्ट होते हैं। अपने समयके छिपे हुए सत्यका वह पता चला लेता है और जीवनके श्रेष्ठ अनुभवसे इस सत्यकी तुलना करके काममें जुटता है। इससे उसकी सत्यता प्रमाणित हो जाती है, क्योंकि अन्तमें उसका कार्य्य प्रकट होता है, परिपक्व होता है और सौगुना फलता है। वह थोड़े समयमें फल न दे किन्तु जब वह अपने प्राणोंकी आहुति देता है तुरन्त उसकी महिमा फैल जाती है। उसका जीवन आदर्श रहता है क्योंकि उसके प्राण धर्मयुद्धमें गये हैं। वह थोड़े ही समयका बलिदान करके अनत कालकी सेवा कर चुका है, वह महात्माओंकी सङ्गति करने स्वर्ग चला गया है और उनके साथ उसका नाम सदा स्मरणीय बना रहेगा।

(५)

यह सब पढ़ चुकनेपर भी लोग आजकलकी भीषण देशा देखेंगे और इसी बुरी स्थितिसे होश हवास खोकर कहेंगे "ब्रिटि साम्राज्यकी ताक़त देखिये और साथही अपनी बर्बाद हालत ओर निगाह कीजिये। तुम्हारी सब आशायें निरर्थक हैं?" उन मैं कहूगा, "इस शुद्ध सत्यको ध्यानमें रखो, जातियां जीवि रहती हैं और साम्राज्य नष्ट होते चले जाते हैं। प्राचीन काल साम्राज्य आज कहा हैं? आजकलके साम्राज्योंके भीतरभी उन नाशका बीज छिपा हुआ है। जिन जातियोंने प्राचीन साम्राज्योंक उठते हुए तथा राज्य करते हुए देखा है आज उनके वंशध उनके प्रतिनिधि बनकर विद्यमान हैं। पर इन जातियोंका जि अत्याचारी शासकोंसे पाला पड़ा था वे मरगये हैं और दफ़नाये जाचुके हैं। जातिया जीवित रह गयीं और साम्राज्य उजड़ गये समाजकी वर्तमान जातियोंके वंशधर उस समय भी जिन्दा रहेंगे जब कि वे साम्राज्य जो इस समय प्रभुताके लिये लड़रहे हैं सब मिट्टीमें मिल जायेंगे। हमारा अस्तित्व बना रहेगा और हमारे कार्यकी सफलताका परिमाण तथा हमारे भावी पदका गौरव बतावेगा कि हममें मातृभूमिके प्रति कितनी भक्ति थी।"

(६)

क्या सब दलोंके विचारशील पुरुषोंको यह अभिलाषा नहीं है कि हमारी इस लम्बी लड़ाईका अन्त हो जाय और प्रतिष्ठा-

पूर्वक स्थायी सन्धि होजाय ? इस सन्धिकी शान्तिमें देशका प्राण दम लेसकता है, उसमें नयी जान आ सकती है और वह अपनेको व्यक्त कर सकता है। इस शान्तिमें ही संगीत, कला और काव्य स्वतन्त्रताके आहलादको अनवरत आनन्दके साथ प्रवाहित कर सकते हैं। हमारे आजकलके दमनका साक्षीस्वरूप यह अगाध साहित्य ज्योति पाकर जगमगा सकता है। हम सब यही स्वप्न देख रहे हैं, क्योंकि जबतक हमारा ब्रिटिश साम्राज्यसे किसी प्रकारका सम्बन्ध रहेगा तबतक हम कुछ न कुछ पराधीन बने रहेंगे। इसका प्रतिवाद कोई नहीं कर सकता। ऐसा मूर्ख कौन है जो आशा करे कि जबतक ब्रिटिश साम्राज्यकी अधीनता जतलानेवाला सम्बन्ध है तबतक ब्रिटिश पारलामेन्टके साथ हमारी टक्कर न होगी। यदि कोई ऐसा है तो वह संसारके अनुभव तथा इतिहासके विरुद्ध जाता है। इस सम्बन्धके भीतर दो स्वार्थ छिपे रहेंगे। अङ्गरेज अपना स्वार्थ चाहेंगे और हम अपना, और ये दोनों एक दूसरेके विरुद्ध होंगे।

सोचिये, यूरोपके प्रत्येक राष्ट्रके भीतर संकीर्ण और उदार दलोंमें कैसा बखेड़ा होता है। एक दलकी आंखोंमें दूसरे दलके विचार सदाही छल कपटसे भरे हुए, शंकाजनक तथा उलटे जचते हैं और ये दल किसी तरह सहमत नहीं होते। कभी २ तो ये एक दूसरेके ऊपर विश्वासघातका दोष मढ़ते हैं। इनमें सुलह कभी नहीं होती। दलबन्दीका यही नियम है। ऐसी स्थितिमें जबकि इस झगड़ेमें दो जातियोंका प्रश्न आपडता है,

जबकि जनता दलोंमें विभक्त नहीं,बल्कि जातियोंमें बटी हुई होत है तब सन्धिकी आशा कहा ? यह निश्चयही निष्फल आशा है यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि हमारी जाति इसलिये भि नहीं है कि हम 'गैलिक' वशके हैं किन्तु हम इसलिये अलग कि हमारे देश अलग अलग हैं और हम मानवजातिके भिन्न भि परिवारोंसे बने हुए हैं। यदि हम सब अङ्गरेजोंके ही वश होते तो भी हममें भेद रहता। इसका ऐतिहासिक उदाहरण अमेरीकाका सयुक्त राज्य है। इससे मेरी बात सहजमें समझ आसकती है।

जब किसी आदमीके लड़के बड़े हो जाते हैं वे अपना अलग कुटुम्ब कर लेते हैं और स्वच्छन्द होकर रहते हैं। उनका अपने पूर्वजोंके प्रति सदा प्रेम रहता है। किन्तु यदि पिता अपने लड़केकी गृहस्थीमें हस्तक्षेप करना चाहे और उसके कार्यको अपनी मर्जीपर चलाना चाहे तो उसी वक्त टण्टा खड़ा हो जाता है। इस विषय-पर अधिक विचार करना आवश्यक प्रतीत नहीं होता। यदि आय लैंडके सब लोग अंग्रेजोंके वशज होते और इस रिश्तेसे इङ्गलैंड दावा करता कि उससे आयलैंडका सम्बन्ध बना रहे और उसका उसपर आधिपत्य रहे,तो फौरन झगड़ा शुरू हो जाता और इसका एकही परिणाम होता अर्थात् हमारा सबन्ध विच्छेद हो जाता।

हम चाहे किसी जातिके होते, इंगलैंडके साथ स्वभावत, पड़ोसी बनकर रहते। किन्तु अंग्रेजोंने हमें धोखा देना और तङ्ग करना पसन्द किया। और अब यह दशा हो गयी है कि कोई

पीढियों तक आपसमें सद्भाव रहनेपर इन बातोंकी स्मृति घुलेगी। मैं फिर फिरयही बात कहता हूं जिससे टिकाऊ सन्धिके विषयमें हमारे विचारोंमें अस्पष्टता न रहे। जबतक पराधीनताका दिखलावटी संबन्ध भी रहेगा, शान्ति नहीं रह सकती। इस सम्बन्धके प्रति रोष प्रकट करने तथा इसे ललकारनेके लिये हमारे मनुष्यत्वका तेज प्रदीप्त हो उठेगा। इंगलैंडसे सम्बन्ध-विच्छेद तथा समानता ही उससे मित्रताका सम्बन्ध फिर स्थापित कर सकती है और कोई बात शान्ति स्थापित नहीं कर सकती। क्योंकि मानव चरित्रका इतिहास यही शिक्षा देता है कि व्यक्तिगत उन्नतिसे ही सर्वसाधारणमें सद्भाव फैलता है।

हम भले पड़ोसी हो सकते हैं किन्तु साथही साथ भयंकर शत्रु भी हो सकते हैं। हमारा परम्पराका शत्रु अब और अधिक हमें अपनी बगलमें रखकर चैनसे नहीं रह सकता। वर्तमान समय हमारे लिये आशाप्रद है। हमारा भविष्य प्रगतिकी ओर जा रहा है। हम अभीष्टको प्राप्त करेंगे। हमें चेष्टा करनी चाहिये कि हम योग्य निकलें।

(७)

हमें यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि हम अयोग्य न पाये जावें। सच बात यह है कि हमें इसी बातका बड़ा अन्देशा है। यदि अपनी स्वाधीनता प्राप्त करनेमें, देशको समृद्ध करनेमें, भविष्यको उन्नत करनेमें हम अन्य राष्ट्रोंकी भूलोंसे सबक न

सीदों और महाशक्तियोंकी अपेक्षा अपना जीवन अच्छा बनावें तो हम एक उत्तम अवसरको हाथसे गवा देंगे। इतिहासके पृष्ठोंमें हम असफल गिने जायगे। आज बाह्यविचारकी दृष्टिसे हम असफल गिने गये हैं, यह सदियों तक स्वतन्त्रताके संग्रामको जारी रखनाही हम जाज्वल्यमान विजय है। मैदान मारने पर भी यदि जीतका दुरुपयोग करेंगे तो हमारी असल हार हो जायगी।

एक समय हम यूरोपके अग्रणी थे। स्वाधीनताको भ भाति उपलब्ध करके हम फिर एक बार इसे रास्ता दिखलायेंगे हमें उस भ्रमसे सतर्क रहना चाहिये जो सर्वत्र फैला हुआ है याने आज कल जैसे इंगलैंड, फ्रांस तथा जर्मनीपर किसी दबाव नहीं है उसी प्रकार हम भी दबावसे छूटना चाहते हैं औ कुछ नहीं चाहते। हमें इस भ्रमसे भी बचा रहना चाहिये कि यदि हम किसी प्रकार स्वाधीनता तक पहुंच जाय तब ह मनुष्योचित जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर सकते हैं। फिर इस बीच हम अपनी जीवनचर्य्याके विषयमें विशेष सावधा नहीं रह सकते। यह भ्रमकी विकट छाया हमारे पथक अन्धकारमय कर देती है और सुन्दर मनुष्य-जीवन तथा हमा बीचमें पर्दा डाल देती है। यह भ्रम ही हमें उस भीषण जीवनकी ओर घसीट सकता है जिसने संसारमें आजदिन तबाही मचा रखी है। हमें सावधान रहना चाहिये। मैं या नहीं कहता कि हमें धनी, निर्धन, मालिक, मजदूर, आदिके झगडे

आजही तय कर देने चाहिये, किंतु मेरे मतमें प्रत्येक व्यक्तिको समझ लेना चाहिये कि उसका कर्त्तव्य उच्चविचारयुक्त तथा उदारचरित बनना है। हमें यह सोचना चाहिये कि हमारा साथी हमसे ठगे जानेके लिये नहीं बल्कि भाईकी तरह हमारी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये तथा गिरी हुई दशासे उठाये जानेके लिये पेश हुआ है।

न तो स्वराज्य, न साधारणतन्त्र और न अराजकतन्त्र ही हमारा उद्धार कर सकते हैं। हमारी स्वतन्त्रता हमें शुद्ध हृदय और महान् आदर्शके ही द्वारा प्राप्त हो सकेगी। यही तत्त्वज्ञान है जिसका प्रचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

हमें इस समय इसकी अवहलना नहीं करनी चाहिये क्योंकि हमारा आजका काम हमारे भविष्य जीवनका निर्णय करेगा। यदि स्वाधीनताके इस संग्राममें हम सतर्क न रहेंगे तो भविष्यमें निर्मल न रह सकेंगे। मैं ऐसे कई लोगोंको जानता हू जो उदार चरित्रके प्रति उदासीन नहीं हैं किन्तु इस आशंकासे कि शुद्ध जीवन हमारे कार्यमें अड़चन डालेगा और सफलताको असम्भव बना देगा, निष्ठुर नैतिक जीवनसे डरते हैं। हमें यह विचारकर अपनी गलती सुधार लेनी चाहिये कि समय हमारे अनुकूल हो रहा है। हमारे देशकी ताकत बढ़ रही है और शत्रुकी मुट्ठी ढीली पड़ रही है।

जनता किश्तोंसे अधिकार लेनेमें सन्तुष्ट नहीं है। उसकी शक्ति अपने स्वत्वोंको प्राप्त करनेके लिये अधिकाधिक बढ़ रही है और

वह इन्हें लेनेके लिये उपयुक्त हथियारोंसे सुसज्जित है। अपने ही समयमें हम बहुत आगे बढ़ गये हैं। एक घटना इसे स्पष्ट कर देती है। बीससे भी कम साल हुए कि देशी भाषा तिरस्कारकी दृष्टिसे देखी जाती थी। आज इसके उद्धार करनेका आन्दोलन इतना प्रबल हो गया है कि राष्ट्रीय विश्वविद्यालयमें इसे आवश्यक पाठ्य विषयोंमें रखना पड़ा है। इस शुभ चिह्नको देखकर क्या किसीको अब भी सन्देह हो सकता है कि समय स्वाधीनताका मार्ग नहीं बना रहा है और हम विजयकी ओर कूच नहीं कर रहे हैं?

इसमें मुझे नाममात्र भी सन्देह नहीं है कि हम स्वाधीनता लेंगे किन्तु इसका मुझे पूरा भरोसा नहीं है कि हम उसका सदुपयोग कर सकेंगे। क्योंकि जगतमें सर्वत्र देखा जाता है कि इसका कितना शोचनीय दुरुपयोग किया जा रहा है। यह हमारा सुनिश्चित विचार होना चाहिये और हमें इसका बीड़ा उठा लेना चाहिये कि हमारा भावी इतिहास किसी भी तत्कालीन राष्ट्रसे कम गौरवपूर्ण न हो। निस्सन्देह हम समृद्धि बढ़ानेकी चेष्टा करेंगे पर हमारी उत्कट इच्छा आदर्श बननेकी रहेगी।

हम अपनी शक्ति बढ़ायगे—दूसरे देशोंको गुलाम बनानेके लिये नहीं बल्कि उनसे भ्रातृभावको बढ़ाने तथा संसारकी निर्बल जातियोंकी रक्षा करनेके लिये। हम अपनी संस्थाओंका गौरव बढ़ायगे इस लिये नहीं कि उनसे राष्ट्रकी स्थिरताका निश्चय हो बल्कि नागरिकोंका सुख बढ़ानेके लिये। तभी हम प्राचीनकालके

समान यूरोपके पथप्रदर्शक बन सकेंगे। हम सारी दुनियाको अर्थलोलुपता, निष्ठुर शासन तथा ईर्ष्यापूर्ण और क्रूर राजनीतिके दुःस्वप्नसे जगा देंगे। संसार हमारी फिरसे जगी हुई आत्मा तथा एक नवीन और सुन्दर आदर्शको देखकर आश्चर्यमें मग्न हो जायगा और हम अपने राष्ट्रकी नींव वास्तविक स्वाधीनतापर रखेंगे जो सदा बनी रहेगी।



तृतीय परिच्छेद

नैतिक बल

(१)

किसी महत्त्वपूर्ण प्रश्नपर विचार करनेमें सबसे बड़ी कठिनाई यह पड़ती है कि शब्दोंको तोड़ मरोड़कर उनका मौलिक तथा वास्तविक अर्थ बिगाड़ दिया जाता है। इसलिये यदि हम सफल विचार करना चाहते हैं तो हमें पहिले अपने शब्दोंका अर्थ निश्चित कर लेना चाहिये। हमारी दुर्बलतासे उत्पन्न प्रत्येक भूलको क्षमा करनेके लिये देशभक्तिका नाम बदनाम किया जाता है, किन्तु देशभक्तिके यदि कुछ माने हैं तो वह यह है कि यह मनुष्यको पूर्ण आत्मबलवाला तथा संकटके समय दृढ़प्रतिज्ञ बनावे। जहां धार्मिक स्वराज्यकी जरा भी वृद्धि हुई लोग आयरिश जातिकी विजयघोषणा करने लगते हैं और होमरूलको पूर्ण स्वाधीनता समझकर उसकी महिमाके गीत गाते हैं। लेकिन जबतक हमारे ऊपर पड़ोसी राज्यका कुछ भी दबाव है और हम उसे अपनेसे बड़ा मानते हैं तबतक हम कुछ हदतक गुलाम ही हैं। इसलिये जो स्वाधीनताके लिये संग्राम कर रहे हैं वे इस सिद्धान्तको मानते हैं और पूरी आजादीके लिये डटे रहते हैं। आंशिक स्वाधीनता कोई वस्तु नहीं है। जब

हम स्वाधीनताको मुर्दादिल आदमियोंके हाथमें छोड़ देते हैं तो हम अपने कार्यको दूषित कर देते हैं तथा परिणाममें बाधा डाल देते हैं।

दूसरी ओर अटल सिद्धान्तवाला मनुष्य है। सर्वसाधारण उसे किस दृष्टिसे देखते हैं? जब उसके हाथमें स्वतन्त्रताका काम आजाता है तब वह सदा ही समझौतेसे दूर रहनेवाला जंगली तथा उजड्ड आदमी समझा जाता है। हम बहुधा उसका नाम सुनकर ही नाक भौं सिकोड़ते हैं और उसकी वीरताकी प्रशंसा करनेके बदले यही समझते रहते हैं कि क्या कभी युक्तिपूर्वक बातें करनेपर उसकी समझमें हमारा सिद्धान्त आ सकता है। यह नहीं जानते कि सच्चा अनमेली आदमी सत्य का निष्कपट उपासक है।

पराधीनताके विरुद्ध लड़नेवालोंमें कई लोग स्वतंत्रताके पक्षमें इस लिये कार्य करते हैं कि इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और जर्मनी इसके द्वारा ऐश्वर्यशाली बन गये। किन्तु जब हम उन साधनोंपर विचार करते हैं जिनके द्वारा इन देशोंने शक्ति प्राप्त की है तो मालूम होता है कि हमारे यह मित्र सच्ची स्वाधीनता तथा स्वेच्छाचारी जीवनमें फर्क नहीं समझते। मेरी समझमें तो किसी विषयपर विचार करनेके पहिले हमें विशेष अर्थयुक्त शब्दोंकी परिभाषा ठीक कर लेनी चाहिये। एक ऐसे ही शब्दकी परिभाषा मैं यहां भलीभांति बता देना चाहता हूं। आजकल वादविवादमें जितने चिकने चुपड़े शब्द काममें लाये जाते हैं

उनमें;सबसे अधिक गड़बड़ी "नैतिक बल" के अर्थके विषयमें फैली हुई है।

(२)

आयर्लैण्डमें प्रायः सौ वर्षसे प्रत्येक ऐसे राजनीतिज्ञकी दुर्बलता छिपानेके लिये जो मातृभूमिकी पूरी स्वाधीनताके लिये लड़नेको अनिच्छुक अथवा भयभीत रहता है 'नैतिक बल' शब्दका निरन्तर दुरुपयोग किया जाता रहा है। वर्त्तमान समयमें ऐसे आदमी देखनेमें आते हैं जिनमें नैतिक साहसका अभाव होनेपर भी वे नैतिक बलके नामपर काम कर रहे हैं। दूसरी ओर ऐसे आदमी हैं जिनकी नस नसमें नैतिक बल भरा हुआ है पर वे पशुबलके उपासक बतलाये जाकर हंसीमें उड़ा दिये जाते हैं। इस गड़बड़ीको साफ करनेके लिये हमें नैतिक बल और नैतिक दुर्बलताका भेद समझ लेना चाहिये।

यह भेद महत्वका है। चाहे हम नैतिक साहस कहें, चरित्र-बल कहें या नैतिक शक्ति कहें सबका अर्थ एक ही है। यह मन और हृदयका वह श्रेष्ठ गुण है जो मनुष्यको पशुबलकी प्रत्येक शक्तिके सामने अजेय खड़ा रखता है। मैं इसका नाम नैतिक बल रखता हूं और इसकी परिभाषा यों करना चाहता हूं कि नैतिक-बली वह है जो किसी कामको उचित, आवश्यक तथा श्रद्धाके योग्य समझ फलकी परवा न कर सत्यके समान इसकी रक्षा करनेको डटा रहता है। वह चञ्चल सिड़ी नहीं है

जिसे अपने पागलपनके परिणामकी नाममात्र भी परवा न हो, जो एक बावलेपनकी आशा कर रहा हो और इससे जो तबाही फैलेगी उसके प्रति उदासीन हो। कदापि नहीं, उसका मुख्य सिद्धान्त यह है कि सच्ची बात ही अच्छी बात है और उचित रूपसे पालन की हुई इस भली बातका बुरा परिणाम नहीं हो सकता। ऐसा वीर अपने कार्यकी भली या बुरी गतिको शान्त चित्तसे देखता है। किसी कड़ी परीक्षाके समय अपने साहसपर पूरा भरोसा न होनेके कारण चाहे वह घबड़ावे किन्तु अपने पक्षकी श्रेष्ठता और अपने कार्यके परिणामकी महत्तापर वह सदा शान्तिसे विश्वास रखता है। ऐसे बली पुरुषकी अपने साहसके प्रति घबड़ाहट शीघ्र दूर हो जाती है क्योंकि महान् कार्य महान् आत्माओंको पैदा करता है। ऐसे कई लोग जो डर डरकर काम हाथमें लेते हैं वीर गतिसे मरते हैं। यह बात महान् आदर्शों की रक्षाके लिये लड़नेवाले मनुष्योंकी आश्चर्यजनक तथा अपूर्व प्रसन्नचित्तताका रहस्य बतलाती है। दुर्बलप्रकृतिके लोग इस रहस्यको कम समझते हैं। स्वाधीनताका सैनिक समझता है कि सत्यके संग्राममें वह आगे बढ़ा हुआ है। वह जानता है कि उसकी विजय संसारको सुन्दर बनायगी। यह भी उसे मालूम है कि यदि उसे दूसरोंको कष्ट देना पड़े या स्वयं कष्ट भोगना पड़े तो वह पीड़ितोंके उद्धारके लिये, पराधीनताकी जंजीरसे जकड़े हुओंके बन्धनोंको तोड़नेके लिये, जो देशके लिये जान दे रहे हैं

उसका गौरव बढानेके लिये, तथा देशकी भावी सन्तानको सुखी तथा निश्चिन्त बनानेके लिये होगा। इस संग्रामके प्रत्येक पहलूमें जो शक्ति उसे सम्हाले हुए रखेगी उसके लिये सबसे पहले दृढ तथा धीरचित्तकी आवश्यकता है। सार यह है कि उसमें नैतिक बल अवश्य हो। उस पुरुषको जो सेनाके साथ आक्रमण करनेमें ही वीर रह सकता है जब अकेला खडा रहना पडेगा तब उसकी वीरता काफूर हो जायगी। सब देशबन्धुओंको यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिये कि जबतक मातृभूमि अपनी निजकी पलटनें नहीं खडी कर सकती ऐसे आदमियोंकी बराबर आवश्यकता पडेगी जो अकेले खडे होकर लडनेकी परीक्षामें उत्तीर्ण हो सकें। यह सबसे विकट, सबसे श्रेष्ठ और वह परीक्षा है जो निश्चित तथा महान् विजय दिलाती है क्योंकि एक सशस्त्र पुरुष असंख्य जनताका सामना नहीं कर सकता और न एक सेना अगणित दलोंपर विजय प्राप्त कर सकती है। लेकिन संसारके सब साम्राज्योंकी सारी सेनाएं एक सच्चे आदमीकी आत्माको नहीं जीत सकतीं, यह अकेला आदमी बाजी मार ले जाता है।

(३)

प्रत्येक दास भावका विरोध करनेकी जिसे नैतिक बलके नामसे आश्रय मिलता है हमने इतनी बडी आवश्यकता समझी कि हममेंसे वे लोग जो अपनी मनुष्यताका

थे गला फाड़ फाड़कर चिल्लाने लगे कि साथ साथ शारीरिक बलकी भी परख होनी चाहिये। विपरीत समयकी नीचतासे हम जितना अधिक जलने लगे उतना ही अधिक तथा बार बार हम शारीरिक बलकी परखके लिये पुकार मचाने लगे कि "फिर नया जीवन दान करनेवाला समय आ पहुंचा है और दूषित वायु शुद्ध की जानी चाहिये।" हमने अजेय आत्मावाले पुरुषकी सबसे कड़ी परीक्षाकी एको जाच वह रखली है जो अत्याचारीकी एक मात्र शक्ति है अर्थात् पशुबलका अवलम्बन। हमने युद्धक्षेत्रोंकी मारकाटके झूठे गीत गाये हैं। हमने शत्रुके रक्तसागरको तैरनेकी प्रशंसा की है मानो रक्तमय युद्धक्षेत्र अतीव सुन्दर है। हमने शान्तिके प्रति बड़ी घृणा दिखलायी है मानो प्रत्येक रण पुलकित करनेवाला है। किन्तु युद्धक्षेत्रमें एक प्रसिद्ध सेनापतिने कहा था कि समर रौरव है। यह भले ही अत्युक्ति हो किन्तु इस चेतावनीमें वह भीषण सत्य है जो सदा ध्यानमें रहना चाहिये। यदि हममेंसे कोई अब भी ऐसी बातको छोड़नेके लिये निवेदन किये जानेपर नाक भौं सिकोड़ता है जिसे वह प्रतिहिंसाके लिये परम आवश्यक समझता है तो उसे अपने हृदयके भीतर टटोलना चाहिये और विचार करना चाहिये कि किसी बदनाम विश्वासघाती अथवा दोषीकी मृत्युसे उसके हृदयपर कैसे भाव उत्पन्न होते हैं। ऐसे अवसरपर हृदयमें शान्ति प्राप्त नहीं होती, किन्तु भयका भाव प्रधान होता है। मृत्यु हम सबको

उनका गौरव बढ़ानेके लिये, तथा देशको भावी सन्तानको सुखी तथा निश्चिन्त बनानेके लिये होगा। इस संग्रामके प्रत्येक पहलूमें जो शक्ति उसे सम्हाले हुए रखेगी उसके लिये सबसे पहले दृढ़ तथा धीरचित्तकी आवश्यकता है। सार यह है कि उसमें नैतिक बल अवश्य हो। उस पुरुषको जो सेनाके साथ आक्रमण करनेमें ही वीर रह सकता है जब अकेला खड़ा रहना पड़ेगा तब उसकी वीरता काफूर हो जायगी। सब देशबन्धुओंको यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिये कि जबतक मातृभूमि अपनी निजकी पलटनें नहीं खड़ी कर सकती ऐसे आदमियोंकी बराबर आवश्यकता पड़ेगी जो अकेले खड़े होकर लड़नेकी परीक्षामें उत्तीर्ण हो सकें। यह सबसे विकट, सबसे श्रेष्ठ और वह परीक्षा है जो निश्चित तथा महान् विजय दिलाती है—क्योंकि एक सशस्त्र पुरुष असंख्य जनताका सामना नहीं कर सकता और न एक सेना अगणित दलोंपर विजय प्राप्त कर सकती है। लेकिन संसारके सब साम्राज्योंकी सारी सेनाएं एक सच्चे आदमीकी आत्माको नहीं जीत सकती, यह अकेला आदमी बाजी मार ले जाता है।

(३)

प्रत्येक दास भावका विरोध करनेको जिसे नैतिक बलके नामसे आश्रय मिलता है हमने इतनी बड़ी आवश्यकता समझी कि हममेंसे वे लोग जो अपनी मनुष्यताका प्रमाण देना चाहते

कारी है। देह नश्वर है, आत्मा अमर है। जीवनमें इससे बड़ा अनिष्ट कोई नहीं हो सकता कि इस अविनाशी अंशका पतन हो जाय। जरा उन सब घृणित बातों तथा नीचताकी ओर ले जानेवाली वृत्तियोंका विचार तो कीजिये जो गुलामोंकी हालतमें पड़े हुए लोगोंका खून चूस लेती हैं। अधिकारी लोग अपनी प्रभुता स्थिर रखनेके लिये घूस देते हैं। समय देख अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले लोग प्रत्येक सिद्धान्तका मोल ठहराते हैं। सार्वजनिक जीवन कलुषित हो जाता है। व्यक्तिगत जीवनमें मुर्दादिली छा जाती है। उच्च आदर्शवालोंके लिये कठिन अवसर आ पड़ता है। उन्हें जघन्य आचरणसे मुठभेड़ करनी पड़ती है। उनका धैर्य टूट जाता है और अन्तमें उन्हें स्वाधीनताका वह झण्डा जो कभी बड़ी वीरताके साथ ऊंचा फहराया गया था, चुपचाप छोड़ देना पड़ता है। फल यह होता है कि निरुत्साहियोंकी संख्या बढ़ जाती है और सर्वसाधारणमें अन्धेर, निरानन्द और निराशा फैल जाती है। मातृभूमि सर्वत्र उजड़ती हुई दिखलायी देती है। जिस देशकी स्वतंत्रता हरण होगयी है वहां दुराचार, नीचता, कायरता, असहिष्णुता, तथा प्रत्येक पामर वृत्ति अन्धेरेमें खटकी तरह खेरामर फलती फूलती है और देशको झुलस देती हैं। पराधीन देशका हृदय और पराधीन लोगोंकी आत्मा घृणास्पद बन जाती है। उन्हें देख तबियत फिर जाती है और वे भयानक मालूम पड़ते हैं—भयानक इसलिये कि उनके द्वारा उच्च सिद्धान्त गिराये गये हैं—और गौरवपूर्ण

विचारशील बना देती है। किन्तु मौतसे दूर रहनेपर बहुधा यह बात विश्वासयोग्य नहीं जचती और 'मनुष्य स्वतन्त्रतारूपी जहाजको शत्रुके रक्तको चीरते हुये पार करनेकी स्तुति गला फाड़कर करता रहता है। मैं उससे कहता हूं "बस रुक जा"। तू अपनी भूलको साधारण दुर्घटनाको भयंकरता तथा मुर्गे मेढों आदिकी लड़ाईपर विचार करके सुधार सकता है।

(४)

हां, युद्धका सामना करना पड़ता है और खून बहाना पड़ता है। आनन्दसे नहीं—किन्तु दारुण आवश्यकताके कारण—क्योंकि जातिमें ऐसी घोर नैतिक बीभत्सता वर्तमान है जो दारुण शारीरिक बीभत्सतासे बहुत गिरी हुई है। निर्भीक आत्माके लिये स्वाधीनता अपरित्याज्य है और इसलिये घोरसे घोर यन्त्रणा सहकर भी स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिये। आत्मा शरीरसे बड़ा है। और युद्धकी न्याय्यताका यही प्रमाण है। यदि लड़ाई करनेमें आगा पीछा सोचनेसे प्रत्युत स्वाधीनताका हरण होता है या हम विद्यमान गुलामीमें ही अकर्मण्य होकर पड़े सड़ते हैं तो प्रत्येक मनुष्यका धर्म है कि यदि वह खड़ा है तो लड़ पड़े, यदि गिराकर दबाया हुआ है तो बागी बन खड़ा हो। जबतक स्वाधीनता पक्की न हो जाय उसे शान्तिसे क्षणभर न रहना चाहिये क्योंकि जिस जातिकी आज़ादी छिन गयी है उसको जो नैतिक महामारी अपना ग्रास बना लेती है वह मनुष्योंके शरीरके एक अंगको दूसरे अगसे काट देनेसे जो अनर्थ पैदा होता है उससे अधिक अनर्थ

दिखलाते हैं, तथा लड़ाईके सिपाहोंको दुर्बलता तथा जंगली-पनकी चरम सीमा तक पहुंचने देते हैं और वह चरित्रहीनता तथा विभीषिका पैदा करने देते हैं जो अन्तमें हमारा नाश कर देगी। आज़ादीका पक्का सिपाही पूरे जोरसे चोट मारने और अच्छी तरह शत्रुको पटकनेमें आनाकानी नहीं करेगा। वह जानता है कि उसकी दृढ़ प्रतिज्ञापर ही स्वाधीनताका उद्धार तथा उसकी रक्षा निर्भर है। किन्तु वह सदा याद रखेगा कि अपनेको काबूमें रखना ही वह उत्तम गुण है जो मनुष्यको जानवरोंसे अलग करता है। प्रतिहिंसावृत्ति अत्याचारी और गुलामोंका कायरतापूर्ण आश्रय है और उदारचरित्रता मनुष्यताका स्वच्छ अलंकार है। तथा वह सदा यह ध्यानमें रखेगा कि वह शत्रुकी जान लेनेके लिये हथियार नहीं उठा रहा है किन्तु उसके दुष्कर्मों का नाश करनेके लिये, तथा इन दुष्कर्मों का नाश करनेसे वह केवल अपनेहीको स्वाधीन नहीं करता, किन्तु अपने शत्रुका भी उद्धार करता है। हममेंसे अधिकांश लोगोंके लिये सम्भवतः यह 'स्वप्न' बहुत ही रहा हो किन्तु उसको जो हमारे देशकी समस्याके मर्मको पहचानता है और अपने चरित्रको सन्मार्गपर रखना चाहता है यह उचित जचेगा। वह घोरसे घोर संग्राममें यह कदापि नहीं भूलेगा कि आज तथा कलका शत्रु बादका हमारा सच्चा सहयोगी बन सकता है।

(५)

यदि यह परम आवश्यक है कि हमको बिना तैयारी किये

भविष्य संकटमें पड़ जाता है। यह कम भयंकर होता यदि भूचाल ऐसे देशको चूर चूर करके महासागरमें डुबो देता। गुलामीकी नैतिक महामारीसे अपनी रक्षा करनेके लिये मनुष्य अचानक हथियार पकड़ते हैं इसकी परवा नहीं करते कि संसारमें इसका परिणाम क्या होगा।

जो लोग पार्थिव फलपर अधिक ओर देते हैं वह भी इससे अपनी रक्षा नहीं कर सकते क्योंकि नैतिक अस्वस्थतासे ही शारीरिक ध्वंस शुरू होता है। इसमें कुछ विलम्ब भले ही होजाय किन्तु फल अनिवार्य है। इस प्रकार शारीरिक शक्ति उचित व न्यायसगत सिद्ध होती है। स्वय नही, किंतु नैतिक बलको प्रकट करनेके कारण। जहा शारीरिक शक्ति उच्च सिद्धातोंकी नींव पर खड़ी नहीं रहती वहा दुष्टताकी मूर्ति बन जाती है।

सच्चा विरोध नैतिक और शारीरिक बलके बीच नहीं है किन्तु चरित्रबल और चरित्रकी दुर्बलताके बीच है। यही प्रधान भेद सब तरफसे भूला जा रहा है। जब अवसर आ पड़ता है और समय हमें बाध्य करता है तो हथियार उठाना अत्यन्त आवश्यक होजाता है। किंतु इस घोर संकटमें हमें अपना संयम नहीं खोना चाहिए। यदि हम शत्रुका खून बहानेको उछलते हैं, पशु-बलकी कीर्ति गाते हैं तो हम स्वय अत्याचारी बनकर इसकी पताका फहराते हैं और अपने सिरपर कलंकका टीका लगाते हैं। दूसरी ओर यदि हम ऐसे अवसरपर इस निठुर कार्यको करनेमें हिचकते हैं तो हम आत्मिक बलका अभाव

प्रत्येक ऐसी छोटी त्रुटि और दुर्बलताका ध्यान रखना चाहिये जो स्वाधीनताके समय हमारी आत्माको अशान्त न कर सके। प्रत्येक कठिनाईका आँखोंके सामने आनेका समय ही उसके निर्णयके लिये उपयुक्त है। इस कार्यमें टालमटोल करना विपत्तिको निमन्त्रण देना है। हमारी अनेक कठिनाइयोंसे हमें दृढ़ निश्चय ही पार उतारेगा। किन्तु किसी विशेष तथा आवश्यक समस्यासे साफ निकल जानेके लिये नीतिका बहाना ढूंढा जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि सब लोग इस प्रश्नपर सहमत नहीं होंगे। दूसरी ओरसे आवाज आती है कि मूर्ख लोग बहक जाय गे। ऐसे टालबाजोंको कोई न कोई बहाना मिल ही जाता है। कठिनाई यह है कि प्रत्येक पक्ष सत्यके एक अंशको पसन्द करता है। कोई पक्ष सोलहों आने सत्य नहीं चाहता। लेकिन हमें विशुद्ध सत्य अक्षर अक्षर ग्रहण करना चाहिये। हम वह अर्थ नहीं मानना चाहते जिसे अज्ञ जनता भला समझे। और न दार्शनिकोंकी काट छांट ही हमें पसन्द है। हम सत्य—विशुद्ध सत्यके सिवा कुछ नहीं चाहते। प्रत्येक ऐसे कार्यके लिये जो जनताके प्रति हमारा धर्म है और जिसपर विचार करनेका सर्व साधारणको अधिकार है, हमें यही नियम पालन करना चाहिये।

चूंकि हमें उज्वलन्त प्रश्नोंका निर्णय करनेमें घोर कठिनताका सामना करना पड़ता है और इस काममें हम सङ्कटमें भी पड़

लड़ाईमें कूदनेसे पहिले अपना प्रमुख सिद्धान्त निश्चित रूपसे स्थिर करलेना चाहिये, तो यह और भी परम आवश्यक है कि हमें इस समय अपना चित्त शुद्ध करके सत्यकी ओर लगाना चाहिये, क्योंकि हमें यह हानिकर अभ्यास पड़गया है कि समयको अनुपयुक्त बतलाकर महत्वपूर्ण प्रश्नोंको दूसरे समयके लिये स्थगित कर देते हैं। साफ बात यह है कि हममें चरित्रबलका अभाव है और वह गुण जो समरकालमें हमारी रक्षा करेगा गुलामीके समय हमारा उद्धार करनेके लिये उत्तम नीतिका काम देगा।

इसपर अधिक लिखना फिजूल है कि दासताकी दशामें नीच वृत्तिया बढ़ती हैं। जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी दशामें हम अपनेको बाध्य समझकर प्रत्येक अवगुणको सचेष्ट होकर भगावें। स्वाधीनताकी सामान्य अवस्थामें कई क्षणिक दुर्गुण उत्पन्न हो सकते हैं, लेकिन वे अनर्थकारी नहीं होते। जनताकी स्वाधीनताकी उज्ज्वल ज्योतिमें वे उसी प्रकार भस्म होजाते हैं जिस प्रकार सूर्यके आलोकमें रोगके कीटाणु। जहा स्वाधीनताका गला घोंटा जाता है और लोगोंका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है वहा छोटीसे छोटी बुराईको भी बढ़नेके लिये अच्छी भूमि मिल जाती है। वह पनपती और फैलने लगती है। इस प्रकार बुराइयोंकी संख्या बढती है और मुल्क चौपट हो जाता है। यही कारण है कि उदारचरित नेताओंको जो पतित जातिके उद्धारकी चेष्टा करते हैं

प्रत्येक ऐसी छोटी त्रुटि और दुर्बलताका ध्यान रखना चाहिये जो स्वाधीनताके समय हमारी आत्माको अशान्त न कर सके। प्रत्येक कठिनाईका आखोंके सामने आनेका समय ही उसके निर्णयके लिये उपयुक्त है। इस कार्यमें टालमटोल करना विपत्तिको निमन्त्रण देना है। हमारी अनेक कठिनाइयोंसे हमें दृढ़ निश्चय ही पार उतारेगा। किन्तु किसी विशेष तथा आवश्यक समस्यासे साफ निकल जानेके लिये नीतिका बहाना ढूढा जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि सब लोग इस प्रश्नपर सहमत नहीं होंगे। दूसरी ओरसे आवाज आती है कि मूर्ख लोग बहक जाय गे। ऐसे टालबाजोंको कोई न कोई बहाना मिल ही जाता है। कठिनाई यह है कि प्रत्येक पक्ष सत्यके एक अशको पसन्द करता है। कोई पक्ष सोलहों आने सत्य नहीं चाहता। लेकिन हमें विशुद्ध सत्य अक्षर अक्षर ग्रहण करना चाहिये। हम वह अर्थ नहीं मानना चाहते जिसे अज्ञ जनता भला समझे। और न दार्शनिकोंकी काट छाट ही हमें पसन्द है। हम सत्य—विशुद्ध सत्यके सिवा कुछ नहीं चाहते। प्रत्येक ऐसे कार्यके लिये जो जनताके प्रति हमारा धर्म है और जिसपर विचार करनेका सर्व साधारणको अधिकार है, हमें यही नियम पालन करना चाहिये।

चूकि हमें ज्वलन्त प्रश्नोंका निर्णय करनेमें घोर कठिनताका सामना करना पड़ता है और इस काममें हम सकटमें भी पड़

लड़ाईमें कूदनेसे पहिले अपना प्रमुख सिद्धान्त निश्चित रूपसे स्थिर करलेना चाहिये, तो यह और भी परम आवश्यक है कि हमें इस समय अपना चित्त शुद्ध करके सत्यकी ओर लगाना चाहिये, क्योंकि हमें यह हानिकर अभ्यास पड़गया है कि समयको अनुपयुक्त बतलाकर महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंको दूसरे समयके लिये स्थगित कर देते हैं। साफ बात यह है कि हममें चरित्रबलका अभाव है और वह गुण जो समरकालमें हमारी रक्षा करेगा गुलामीके समय हमारा उद्धार करनेके लिये उत्तम नीतिका काम देगा।

इसपर अधिक लिखना फिजूल है कि दासताकी दशामें नीच वृत्तिया बढ़ती हैं। जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी दशामें हम अपनेको बाध्य समझकर प्रत्येक अवगुणको सचेष्ट होकर भगावें। स्वाधीनताकी सामान्य अवस्थामें कई क्षणिक दुर्गुण उत्पन्न हो सकते हैं, लेकिन वे अनर्थकारी नहीं होते। जनताकी स्वाधीनताकी उज्ज्वल ज्योतिमें वे उसी प्रकार भस्म होजाते हैं जिस प्रकार सूर्यके आलोकमें रोगके कीटाणु। जहा स्वाधीनताका गला घोंटा जाता है और लोगोंका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है वहा छोटीसे छोटी बुराईको भी बढ़नेके लिये अच्छी भूमि मिल जाती है। वह पनपती और फैलने लगती है। इस प्रकार बुराइयोंकी संख्या बढ़ती है और मुल्क चौपट हो जाता है। यही कारण है कि उदार-चरित नेताओंको जो पतित जातिके उद्धारकी चेष्टा करते हैं

प्रकृतिको दिखादेता। प्रत्येक मकानमें वह अधिवासित रहता है और प्रत्येक कार्य उसकी शुद्धताका परिचय देता है।

वीर सहयोद्धाओ! आनन्द मनाओ कि हमारी आत्माओं-पर अभी हमारा ही अधिकार है। इस निर्जीव तथा आनन्द-शून्य समयमें भी हमारे पुराने तेजकी एक झलक फिरसे दिखायी देने लगी है। वह सरगमं पुराना जोश हमें फिरसे जगा रहा है। हम मातृभूमिके अधिकारोंकी रक्षा करने, उसकी स्वतन्त्रताके लिये जूझने और वर्त्तमान पीढ़ीको गौरवका पद दिलानेको आगे बढ़ रहे हैं। हमारी जीत होगी। शत्रु अपने लड़ाईके जहाज तथा असंख्य सैनिकोंका गर्व करता रहे। रोम और कार्थेजकी फौज आज कहां हैं? पर स्वतन्त्रताकी वह लहर जिसको उन्होंने ललकारा था आज भी मौजें ले रही हैं और तरुण जातिमें जीवन डाल रही हैं। आओ, हम सब अपना सिर ऊंचा करें। हम संग्राममें अपने झंडेको बहादुरोंके साथ पकड़े रहेंगे। हम अपनी आत्माको पृथक्, सिद्धान्तानुकूल, निष्कपट और निर्भीक बनावें और इसे महान् कार्योंके लिये उपयुक्त बनाकर अदम्य बनावें। अदम्य उत्साहके द्वारा ही हमारी पूरी विजय निश्चित होगी।



अब मैं दो बात अपने धार्मिक निराशावादीसे कहूंगा। मैं धर्मका गहरा अर्थ लगाता हूं। जीवनके प्रश्नोंको योंही छोड़ देना नहीं बल्कि उनको हल करना मैं धर्म समझता हूं। मैं नतीजेकी लापरवाहीके सबब नहीं किन्तु अपने दृढ़ विश्वासके सामने सिर नवाकर उससे निडर होनेको कहता हूं। भय और धर्म परस्पर विरोधी हैं।

(६)

हमारे परिच्छेदका सार यह है कि आजकल तथा आनेवाले संग्रामके प्रत्येक स्वरूपमें सशक्त शरीरसे सशक्त आत्माकी अधिक आवश्यकता है। हममें जोश होना चाहिये, किन्तु वह चित्तके द्वारा संयत और नियन्त्रित होना चाहिये। वर्त्तमान समयमें हमारा मुख्य काम वीरता तथा तेज बढ़ानेका है। यह गुण प्रत्येक मनुष्यकी आत्माको अजेय दुर्ग बना देंगे। सेनाएं हार सकती हैं, किन्तु वीर और तेजस्वी आत्मा सदा अथक रहती है। जिस चोलेमें यह आत्मा वास करती है वह चूर चूर किया जा सकता है, पर यह आत्मा शरीर छोड़ते समय दूसरोंमें जान डाल देती है जिससे उनके हृदयोंमें कार्य करनेके लिये आग सी भड़क उठती है। बस इस संग्रामका परिणाम पूरी विजय है। दृढ़प्रतिज्ञ और सच्चा आदमी अन्तमें अवश्य विजयी होता है। शब्दजाल उसे मैदानसे नहीं भगा सकता, किसी प्रकारकी दुर्बलता उसे पाशविक प्रतिहिंसाकी ओर नहीं झुका सकती, न तो वह अपना जन्मसिद्ध अधिकार छोड़ेगा और न अपनी

पैतृक सम्पत्ति है। हमें उन आशाओं और आशङ्काओंपर भी ध्यान देना चाहिये जो मनुष्यजातिमें समान हैं और सबसे अधिक इस बातका ख्याल करना चाहिये कि जगतकी सब जातियोंका स्वार्थ आपसमें उलझा हुआ है।

उक्त बातोंको दिलसे निकाल कर यदि कोई जाति अपने अधीन भूभागको अनीतिपूर्ण शासन तथा पामरताके कार्योंसे कलङ्कित करती है, तो वह संसारकी शांतिको सङ्कटमें डालती है। उक्त सिद्धांतको न जानते हुए भी जब एक पराक्रमी जाति अपने ऐसे पड़ोसीसे भिड़ जाती है जो इस समय उसका वैरी बना हुआ है और वह अपने सहज चरित्रकी आज्ञाके अनुसार वीरता तथा उदारतासे लड़ती है तो वह जाति अपने शत्रुके ध्यानको पवित्र जीवनकी ओर लगा देती है। यह भी सम्भव है कि वह अपने शत्रुका जीवन सुखमय बना दे, उस सुखस्वप्नकी ओर उसका मुंह फेर दे जिस ओर उसकी पापमें डूबी हुई मलीन आत्मा कदापि न जा सकती थी।

(२)

"स्वतन्त्रता देवीके मंदिरकी ओर जानेवाले यात्रियोंके मेलकी कठिन परीक्षा होगी। देशवासियोंकी मित्रता भी एक दिनमें नहीं स्थापित हो सकती विदेशियोंसे तो बहुत दिनोंमें मेल हो सकता है।

हमें पथसे हटानेके लिये तथा जो थोड़ेसे सैनिक दृढ़ विश्वासके साथ झंडेको पकड़े खड़े हैं उन्हें तितर बितर करनेके

चतुर्थ परिच्छेद



शत्रु और मित्र

(१)

शत्रु हमारे वे भाई हैं जिनसे हम न्यारे हो गये हैं। इस मौलिक सत्यके आधारपर ही हम स्वदेशके सब दलोंमें यथार्थ देशभक्ति तथा अपने पुराने शत्रु इङ्गलैंडके साथ स्थायी सन्धि स्थापित करनेकी आशा कर रहे हैं। दुराग्रहके भावोंके कारण अपने ही लोगोंके भिन्न भिन्न दलोंमें बिल्कुल विरोधी विभाग हो गये हैं और आयर्लैण्ड और इङ्गलैंडके बीच घृणाकी ऐसी दीवार खड़ी हो गयी है जिसे पार करना प्राय असम्भव है। यदि मातृभूमिको पुनर्जीवित करना है, तो देशमें एकता होनी चाहिये। यदि संसारको पुनर्जीवित करना है, तो हमें सारे संसारमें एकता स्थापित करनी चाहिये। यह एकता एक शासकके अधीन रहनेसे नहीं, किन्तु सब जातियोंमें भाईचारा फैलानेसे हो सकती है। इस उच्च लक्ष्यको प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति व राष्ट्रका कर्त्तव्य है। इस लक्ष्यको हम न भूलें, इस हेतु हमें बार बार अपने विचारोंका संशोधन करनेके लिये इस सिद्धांतको मनन करना चाहिये कि मनुष्य जातिकी उत्पत्ति एक आदि पुरुषसे हुई है। हमें संसारकी उस सुन्दरतापर गौर करना चाहिये जो सबकी

सबकी तग चहारदीवारीसे बाहर फैला हुआ है और जिसके भीतर हम एक आशा, एक उच्च मनोरथ तथा एक सुन्दर आदर्शसे प्रेरित होकर आपसमें समझौता कर, सहयोद्धा बन परस्पर मिले हुए हैं। हो सकता है कि पृथक पृथक् मतवालोंके लिये देशकार्यका महत्व कम या बेशी हो, हो सकता है कि आदर्शकी उत्पत्ति और उसका अन्तिम ध्येय दोनोंके लिये एक हो न हो, किन्तु वह सुन्दर और अभ्रान्त पदार्थ जिसके लिये वे लड रहे हैं, विशुद्ध, सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन, परस्पर अधिक शिष्ट व्यवहार, समाज और जातिके लिये उच्च आदर्शों की स्थापना उत्कृष्ट सहनशक्ति, साहस तथा स्वतन्त्रताके विषयमें सबका एक मत है। उक्त बातोंपर चोट पडनेपर सबमें नैसर्गिक चेतना जागृत होजाती है। इसलिये जो सहानुभूति भिन्न २ मतवालोंको मिला रखती है वह प्रचण्ड प्रगाढ तथा पक्की होती है। इनलोगों-की मेल मुलाकात ध्यानसे देखिये, वह किस प्रेमसे आपसमें मिलते हैं। ज़रा गौरसे देखिये, एक बडा काम करने वाला है जिसके मुहमें झुर्रियां पडी हुई हैं। उसका कैसा हार्दिक अभिवादन करते हैं। दूसरेकी आखें काममें व्यस्त भाईके लिये आतुर हैं, तीसरेकी आखें विजय आदर्शसे चमक रही हैं। आप देखेंगे कि इन सबमें परस्पर आन्तरिक श्रद्धा है, वे एक दूसरेको उत्साहित करते हैं तथा स्वयं कष्ट उठाते हैं। निरुत्साहका चिन्ह इनमें कभी नहीं पाया जाता, किन्तु सदा महान् विजयकी शुभ

लिये कितने ही प्रलोभन दिये जायंगे। इसलिये हमें वह सम्बन्ध भली भांति समझ लेना चाहिये जो हम लोगोंको अनेक विघ्न बाधाओंका घोर सामना करते हुए भी स्वतन्त्रताकी ओर आगे बढ़नेमें एक किये हुए है। सच्चा भाईचारेका सम्बन्ध ही ऐसी एकता स्थापित कर सकता है। किन्तु हम इस सत्यको बहुत ही कम हृदयङ्गम करते हैं। जब प्रगाढ़ और प्रचण्ड देशभक्ति भिन्न भिन्न मतोंके लोगोंमें सहयोद्धाओंका भाव भरके उन्हें स्वच्छन्दतापूर्वक एक उद्देश्यके लिये मिला देती है, तथा जब सब सच्चे मतोंमें यह मेल देखनेमें आता है, तब दूसरे मुर्दादिल और कम मुस्तैद लोग इस ऐक्यको सन्देहकी दृष्टिसे देखते हैं, और यदि वे हममें शामिल भी होते हैं तो अनिच्छापूर्वक। और लोग तो पास ही नहीं फटकते और समझते हैं कि स्वतन्त्रताके भक्त भ्रममें भूले हुए हैं। वे यह सोचते हैं कि इस समय मिले हुए इन भिन्न भिन्न मतोंके लोगोंमें फूट पैदा कर देनेके लिये मौका पड़नेपर किसी पुरानी बातको उखेड़ देना ही काफी होगा और वे इतने हीसे पुराने द्वेषमें नया जहर मिलाकर एक दूसरेपर टूट पड़ेंगे। इन विचारोंका हमें अपने कार्योंसे खण्डन करना चाहिये।

हमारे अपने देशका ही उदाहरण लीजिये। यहां तीन मतोंके लोग हैं। कुछ कैथोलिक हैं, कुछ प्रोटेस्टेण्ट हैं और कुछ नास्तिक हैं। एक मतके सम्पूर्ण आचार विचार दूसरे मतवालोंको पूर्णतया मान्य न हों, किन्तु इन आचार विचारोंका एक अंश ऐसा है जो

सबकी तरा चहारदीवारीसे बाहर फैला हुआ है और जिसके भीतर हम एक आशा, एक उच्च मनोरथ तथा एक सुन्दर आदर्शसे प्रेरित होकर आपसमें समझौता कर, सहयोद्धा बन परस्पर मिले हुए हैं। हो सकता है कि पृथक पृथक् मतवालोंके लिये देशकार्यका महत्व कम या वेशी हो, हो सकता है कि आदर्शकी उत्पत्ति और उसका अन्तिम ध्येय दोनोंके लिये एक ही न हो, किन्तु वह सुन्दर और अभ्रान्त पदार्थ जिसके लिये वे लड रहें हैं, विशुद्ध, सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन, परस्पर अधिक शिष्ट व्यवहार, समाज और जातिके लिये उच्च आदर्शों की स्थापना उत्कृष्ट सहनशक्ति, साहस तथा स्वतन्त्रताके विषयमें सबका एक मत है। उक्त बातोंपर चोट पडनेपर सबमें नैसर्गिक चेतना जागृत होजाती है। इसलिये जो सहानुभुति भिन्न २ मतवालोंको मिला रखती है वह प्रचण्ड, प्रगाढ तथा पक्की होती है। इनलोगों-की मेल मुलाकात ध्यानसे देखिये, यह किस प्रेमसे आपसमें मिलते हैं। जरा गौरसे देखिये, एक बडा काम करने वाला है जिसके मुहमें झुर्रियां पडी हुई हैं। उसका कैसा हार्दिक अभिवादन करते हैं। दूसरेकी आखें काममें व्यस्त भाईके लिये आतुर हैं, तीसरेकी आखें विजय आदर्शसे चमक रही हैं। आप देखेंगे कि इन सबमें परस्पर आन्तरिक श्रद्धा है, ये एक दूसरेको उत्सा-हित करते हैं तथा स्वयं कष्ट उठाते हैं। निरुत्साहका चिन्ह इनमें कभी नहीं पाया जाता, किन्तु सदा महान् विजयकी शुभ

आशा और महासमरका परम आनन्द ही देखा जाता है। भिन्न भिन्न मतवालोंका यह सहयोग दिखाऊ मित्रताका नहीं है, तो भी और लोग यह मेल देखकर आश्चर्य और संशयसे सहम जाते हैं।

भिन्न भिन्न मतोंके यह स्वतन्त्रताके पुजारी अपने अपने मजहबोंके पूरे पाबन्द हैं, फिर भी इनमें आपसमें इतनी अधिक घनिष्ठता है कि मानो वे सब एकही देवताके सामने सर झुकाते हैं। संकीर्ण विचारवालोंकी दृष्टिमें भिन्न भिन्न मजहबवालोंमें मारकाट होनी चाहिये, पर स्वतन्त्रताके इस संग्राममें वे सब साथ साथ आगे बढ़ रहे हैं। यह सब क्यों है? सम्भवतः इस प्रश्नका सबसे अच्छा उत्तर वही दे सकेगा जिसका धर्म सबसे कट्टर है। वह कहेगा कि जिस क्षेत्रमें हम सब मिलकर काम कर रहे हैं वहां जिस सत्यने हम सबको मिला रखा है उसका अनुसरण करनेका एक ही सन्मार्ग है और सहज बुद्धिसे इस सन्मार्गमें आकर हम मिल गये हैं।

(२)

किन्तु भिन्न भिन्न मतोंके वे लोग जो मजबूती और ईमानदारीसे मेलको पक्का रखते हैं कम हैं। × × ×, × × ×, × उनके धैर्यकी कठिन परीक्षा होगी और मनुष्योंके लिये यह जांचकी कसौटी है। × × × × धर्म अलग अलग होनेके कारण, शत्रुता रखनेसे संसारकी वर्त्तमान समयमें विद्यमान दुर्जनता

और दुष्टता घटनेके बदले और भी बढेगी। इतिहासका कोई उदाहरण उठा लीजिये, प्रतिहिंसाकी निस्सारता तथा मूर्खता साफ प्रकट हो जाती है। ××× निरी हिंसा प्रत्येक उदारचरित्र पुरुषके हृदयमें घृणा पैदा कर देती है। सुनिये, मैजिनी क्या कहता है--"हमें हिंसाके द्वारा देशमें नयी व्यवस्था स्थापित नहीं करनी है। इस प्रकार स्थापित की हुई व्यवस्था पुराने ढंगकी व्यवस्थासे भलेही सुन्दर हो, किन्तु उसकी नीव जुल्मपर रहती है।" ××× हमें खूब तंग किया जायगा कि हम अपने सिद्धान्त छोड़ दें और पुराने झगड़े फिर खड़े करें, किन्तु उस समय हमें डटे रहना होगा। उस समय हमें उस दैवी आत्म संयमसे रहना होगा जिसके भीतर हमारी शक्तिका रहस्य छिपा हुआ है।

(४)

भले ही स्वतन्त्रताके ध्वजा फहरानेवालोंकी संख्या कम हो, तो भी हम जोरसे कह सकते हैं कि हमें अन्तमें सफलताकी आशा है। जनता बिना परिणामकी आशासे न लड़ेगी। वह पूछेगी कि देशकी उन्नतिके क्या लक्षण दिखाई दे रहे हैं और विजयकी ज्योतिकी झलक कहां है। हमारे सौभाग्यसे यदि हम सूक्ष्म दृष्टिसे देखेंगे तो हम उन्नतिके कुछ चिह्न अवश्य ढूंढ निकालेंगे। निस्सन्देह हम पुरानी अदावतके बुरे लक्षण देखेंगे। हो सकता है कुछ लोग क्रोधमें आकर दंगा भी कर दें, किन्तु अब उपद्रवी लोग कम रह गये हैं और क्रोधमें वह तीव्रता भी नहीं रह

गयी है। जो लोग पहले दंगा करते थे अब भी करते हैं, किन्तु उनमें अब वह उन्मत्तता नह रह गयी है और आजकलके नवयुवक भलेही हमारे आदर्शसे विमुख हों, किन्तु वे विपक्षियोंकी बातोंकी ओर भी उदासीन हैं। वे इन बातोंसे अलग हैं और उनपर किसी पक्षका प्रभाव नहीं पड़ा है। इन बातोंको ध्यानमें रखकर हमें निराश न होना चाहिये। जरा विचार कीजिये कि जो इस समय देशका काम कर रहे है उन्होंने धीरे धीरे टटोलते हुए वर्त्तमान नीति निश्चित की है। हमसे पहले राजनीतिक जीवन अपने समयके लोकमतका अनुसरण करता था, किन्तु आजकलकी ज्योतिमें वह बातें मन्द पड़ गयी हैं, हमने उन नियमोंको कृत्रिम समझा और उन्हें छोड़ दिया। यह हमारे पूर्वजोंपर आक्षेप नहीं है। xxx जो काम वे अधूरा छोड़ गए हैं हमें उसे हाथमें लेकर पूरा करना चाहिये। हर पीढ़ीका यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपने पूर्वपुरुषोंके अधूरे छोड़े हुए कामको उठावे और उसे पूरा करके यह पैतृक सम्पत्ति अपने वंशजोंके सुपुर्द कर दे। नवयुवक स्वयं यह कर्त्तव्य पहचान लेते हैं और हरेक पीढ़ी अपने संकीर्ण विचारोंको छोड़कर सत्यका विकास करती हुई अपने बाप दादोंसे एक कदम आगे ही बढ़ती है। इस बातको प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभवसे ही समझ सकता है कि इस समय जो गड़े मुर्दे उखाड़ रहे हैं वे शीघ्र नष्ट हो जायगे और उनका स्थान लेने कोई नहीं आयगा।

(५)

सौभाग्यसे देशवासियोंमें भाईचारा स्थापित करनेकी दलीलें देनेकी अब आवश्यकता नहीं रही; किन्तु साथ साथ हमारे दुर्भाग्यसे जनता न यह बात स्वीकार करती है और न इसे समझती है कि जिन कारणोंसे हमें अपने देशवासियोंके बीच मित्रताका सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये उन्हीं कारणोंसे इङ्गलैंड या किसी दूसरे जातिसे—जिससे हम लड़ रहे हैं या आगे लड़ेंगे—भी मित्रता करनी चाहिये। पड़ोसियोंमें स्नेह होना स्वाभाविक है। एक ही गली या एक ही मुहल्लेमें रहनेवाले दो पड़ोसियोंमें व्यक्तिगत प्रीतिका कैसा मनोहर दृश्य देखनेमें आता है। वे एक दूसरेके सुखमें सुखी होते हैं, आपत्कालमें एक दूसरेकी सहायता करते हैं और अपने प्रतिदिनके काम बन्धुभावसे मिलकर करते हैं। वे हरवक्त एक दूसरेके हितमें मेलकी सार्थकता देखते हैं। मान लीजिये, किसी बुराईके कारण यह मित्र बिछुड़ गये। ऐसे समय पुरानी मैत्री द्वेषमें परिणत हो जाती है। जो पड़ोस हमदर्दीके वक्त उन्हें प्रफुल्लित कर देता था आज उनकी शत्रुताको उतना ही अधिक बढ़ाता है। जब जब उनकी भेंट होती है उनकी बातें एक दूसरेके दिलमें चुभनेवाली होती हैं, उनके भाव परस्पर तंग करनेके होते हैं। जीवनके आनन्दको नष्ट करनेवाला यह तीता रस उनके सात्विक स्वभावको विद्रोही बनाता है। उनके हृदयमें घृणाको बाहर निकाल डालनेकी तथा पुरानी सौहार्दताको फिरसे स्थापित

करनेकी प्रबल लालसा होती है। हृदयके भीतर मेल करनेकी इच्छा रहनेपर भी यह विछुड़े हुए मित्र एक दूसरेके खूनके प्यासे बने हुए हैं। कभी कभी खराबी इस सीमातक पहुच जाती है और द्रोह इतना बढ जाता है कि पुराना मित्रभाव फिरसे स्थापित न होता हुआ प्रतीत होता है। किन्तु जबतक कुछ भी आशाकी झलक बाकी रहती है सच्ची आत्मा इस बातपर ध्यान लगाये रखती है, क्योंकि यदि जीवनके पूर्ण सौन्दर्यको फिरसे प्राप्त करना है और उसे सदाके लिये सुरक्षित रखना है, तो, पुराना मित्रभाव पुन स्थापित करनेके लिये सदैव सचेष्ट रहना चाहिये। व्यक्तियोंके समान जातियोंके लिये भी यही बात कही जा सकती है। यह बात जानकर हमें भविष्यमें नयी भूलसे बचा रहना चाहिये। यह भूल अर्थात् साधनको परिणाम समझ लेना पुरानी है किन्तु सदा नये रूपमें दिखायी देती है।

व्यापकसन्धिका लक्ष्य प्रत्येक जातिको विशुद्ध स्वाधीनता देना, आत्मिक सिद्धि, मनुष्यके भीतर छिपे हुए गुणों और, जीवनके आनन्द और उसकी पूर्णताको प्राप्त करना है। इसका मतलब यह नहीं है कि चाहे जैसे भी हो कुछ सिद्धान्तोंका हनन करके वह निकृष्ट सन्धि की जाय जो गुलामीके ही समान है। इसका सदेशा उस जातिको होशमें लाना है जिसने अपने उत्पातोंसे दूसरी जातिको दुर्दशाकी ओर धकेल दिया है। यह स्थायी और सम्मानयुक्त सन्धिके लिये खुला मार्ग छोड देती है। इसके माने हैं आत्माके देवतुल्य सयमकी रक्षा करना।

नुकाचीनी करनेवाले यह भी कहेंगे कि हमलोग महान् युद्धमें फसे हुए हैं। इसलिये देशवासियोंमें उदात्तवृत्तिया जागृत करने की चेष्टा करनेसे उनमें दुर्बलता आ जायगी, क्योंकि जिस जोश देनेवाली हिंसावृत्तिसे रणमें प्रचण्ड प्रोत्साहन मिलता है वह न रहेगी, किन्तु जो वृत्ति न रहेगी वह हमें प्रोत्साहित करनेवाली नहीं है। जब भाई भाइयोंके ही बीच युद्ध छिड जाता है; घरेलू सग्राम ठन जाता है, एकही कर्तव्यके कई प्रकारके तात्पर्य आप सके लोगोंको न्यारा न्यारा कर देते हैं, पुत्र पिताके विरुद्ध, भाई भाईके विरुद्ध उठ खडा होता है, तब भी उनका झगडा एक वंशके होनेके कारण अथवा इस कारण कि द्वेष और घृणाको छोडकर उनके हृदयके भीतर निकट सम्बन्धका पूरा ज्ञान है ढीला नहीं पडता। इसलिये जब तुम मनुष्यको यह शिक्षा देते हो कि उसका शत्रु गहरा विचार करनेपर उसका भाई निकल आता है तो तुम उसे सग्रामसे नहीं हटाते वरन् तुम उसके सामने उसके ध्येयका नया अर्थ रखते हो और उसे एक श्रेष्ठ आदर्श दिखलाकर उत्तेजित करते हो कि वह अपनी धुनमें लगा रहे और लक्ष्यको प्राप्त करे।

(६)

यदि व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करनेके बाद संसारमें भ्रातृभाव फैलानेके आदर्शके लिये उद्योग करना बाकी रह जाता है तो हमें इस ध्येयको संसारिक जीवोंकी पशु वृत्ति

बाहर न समझना चाहिये। यह आदर्श ध्रुव-तारेके समान हमारा मार्गनिर्देशक होना चाहिये जो हमें भरसक सत्पथपर चलावे। हम हाथमें लिये हुए कार्यको तभी निभा सकते हैं जब हम इस कार्यको उस उद्देश्यके अनुकूल बनावे जो हमें उत्साहित करता रहे। इस उच्च उद्देश्यसे विचलित करनेको हमें कई प्रकारसे फुसलाया जायगा परन्तु जो आत्मिक बल हमारे पक्षको निर्मल और दृढ बनाये रखता है प्रत्येक नष्ट करनेवाली शक्तिका प्रतिरोध करेगा। × × ×

जब एक मजहबवाला दूसरे मजहबवालेको अपना भाई समझने लगे तब यह आदर्श हमें उभाडेगा और स्वतन्त्रताकी पताका हमें अपनी गोदमें उठा लेगी। बस समझ लीजिये कि संग्रामका पहला खेत हमने मार लिया। जब देशके भीतर पूरी एकता स्थापित करनेमें हम कृतकार्य हो जावेंगे तो स्वतन्त्रता हमारी पहुचके भीतर आ जायगी। इसपर समालोचक प्रश्न उठा सकता है कि "भाई, तुम इङ्गलैण्डके साथ मित्रता करनेपर क्यों जोर डाल रहे हो? वह तो अपना आधिपत्य जमाये रखनेकी शर्तपर ही सुलह करेगा।" इसका समाधान इस प्रकार किया जा सकता है। यदि ताली बजानेके लिये दो हाथोंकी जरूरत पडती है तो क्या इसमें सन्देह है कि मित्रता करनेके लिये भी दो हाथ मिलानेकी आवश्यकता होती है। हां, यह दूसरी बात है कि कोई गुलाम बनकर अपने हाथोंसे फर्शी सलाम करनेका काम

ले। किन्तु इस बातमें हम बेफिक्र हैं। हम दूसरोंको बाध्य करके स्वाधीनता ले सकते हैं और हमें अपनी विजयपर पूरा विश्वास है। दोस्तीका रास्ता अब भी खुला है। इस असमंजससे कई लोगोंकी बुद्धि चक्करमें पड़ जायगी कि एक ओर हमें अपने उदार स्वभावको जीवित रखना पड़ेगा और दूसरी ओर हमें संग्राममें कट्टर और दृढ़प्रतिज्ञ रहना पड़ेगा, हमें एक ओर शांतिकी कामना करनी पड़ेगी और दूसरी ओर पूरी लड़ाई लड़नी होगी, एक ओर हम हृदयमें बन्धुताकी लालसा रखेंगे और दूसरी ओर हानिकर मित्रताको नष्ट भ्रष्ट कर देंगे। इङ्गलैण्डके साथ साहित्यिक, राजनीतिक, व्यापारिक तथा सामाजिक मेल जोल बिलकुल तोड़ देना होगा, यदि यह मिलाप स्वाधीनता, समानता और सर्वजातीय स्वतन्त्रताकी नींवपर खड़ा न किया जाय। जिस समय हम इन कार्यमें जोरसे लगे रहेंगे सम्भव है कि लोग इसमें स्थायी मित्रताका आभास न पावें, किन्तु हमें इस चेष्टामें सदा लगा रहना चाहिये। सबसे पहले स्वतन्त्रताकी नितान्त आवश्यकता है। हम जब अपने ही पक्षके सैनिकोंमें अपने ध्येयके इस अर्थका निरन्तर प्रचार करते रहेंगे तो शत्रुके हृदयमें भी यह बात जम जायगी। प्रारम्भमें हमारे शत्रु इसे भ्रम या राजनीतिक जाल समझेंगे, किन्तु एक ऐसा भावपूर्ण समय आयगा जब उनके हृदयोंमें हमारा सिद्धान्त प्रकाश फैलावेगा और एक नये युगका आविर्भाव होगा। ऐसे शुभ अवसरपर दुष्ट

ताका लोप हो जाता है, घृणा भस्म हो जाती है और मित्रता नया जन्म लेती है। कुछ लोगोंके दिलोंमें यह डर है कि उनकी आत्मरक्षामें बाधा पड जायगी। यह डर तब दूर हो सकता है जब यह विश्वास हो जाय कि हमको जबरन् गुलाम बनाये रखनेकी अपेक्षा हमारी आजादीसे शत्रुकी और अधिक रक्षा होगी। इन सन्देहके बादलोंको फाडकर ज्योतिकी किरणें प्रकाश फैलावेंगी और तेजमय सूर्य संसारको पुलकित करेगा।

मानपूर्वक सन्धि करनेके लिये हमारे शत्रुका आदर्श भी उतना ही ऊंचा होना चाहिये जितना हमारा। इसके बाद यदि वह किसी प्रकारका विरोध भी करेगा तो न्यायका पक्ष लेकर। किन्तु शत्रुकी घोर स्वार्थपरता और साम्राज्यलोलुपता जो कि आजकल उसपर भूत सी सवार है यह आशा नहीं दिलाती कि शीघ्र ही वह परमार्थवादी, साधुचरित और उदार बन जायगा। चाहे कुछ हो, हमें अपने आदर्शको नहीं त्यागना चाहिये। वर्तमान इङ्गलैण्ड भले ही अपनी पामरता और अत्याचारोंके कारण हमारी युक्तियोंकी उपेक्षा करे और हमारी दलीलोंपर पानी फेर दे किन्तु हमारी आत्मा हमारे कार्यों में गूढ सन्तोष प्राप्त करती है। इतना ही नहीं, हमारे शत्रुओंके बीचमेंसे ही प्रतिभाशाली आत्माएं चिल्ला उठती हैं और साक्षी देती हैं कि मनुष्यमात्र एक हैं। वे सिद्ध करते हैं कि बन्धुताका भाव उनके भीतर भी सजग है। यह आदर्श हमें आगे बढानेमें उजालेका काम देता है। इस पथपर हमें सत्यका अवलम्बन करके चलना चाहिये। शत्रुके चाहे

कसे ही विचार हों हमें परवा न करनी चाहिये। इस कार्यमें कठिनता अधिकाधिक क्यों न बढती जाय किन्तु यह कार्य सफल हो सकता है। राष्ट्रीयताकी न्याय्यता तथा इसका गौरवपूर्ण अर्थ इस भ्रातृत्वके सिद्धान्तमें छिपा हुआ है। सारे जगतको अपना घर समझनेवाले लोगोंके पक्षकी यह लाजवाब दलील है। जीवनकी जो श्रेष्ठता और सुन्दरता सब जातियोंका लक्ष्य होना चाहिये उसे जगत भरमें एक जातिके अतिरिक्त और सब जाति या अस्वीकार करें, तोभी वह एक जाति अपने देशके भीतर तबतक उस उद्देश्यको छातीसे लगाये रहेगी जबतक उसका जादू तमाम दुनियापर न चल जायगा। यदि यह चरम लक्ष्य अभी हमसे बहुत दूर हो, फिर भी इसका अनुसरण करनेमें हमको एकके बाद एक पराक्रमके कार्य करने पड़ेंगे और विक्रमपूर्ण कार्योंकी सिद्धिमें ही सदा सौन्दर्य और आनन्द मिलता रहेगा। वीर लड़ाकको सर्वदा उचित पुरस्कार मिलता है। उसकी बुद्धि शुद्ध रहती है खूनमें जोश रहता है और कल्पनाशक्ति तत्पर रहती है। वह जीवनका अर्थ समझता है, उसे काम करनेमें आनन्द मिलता है और परिणाममें वह सुख्यातिके शिखरपर अपना अधिकार जमा लेता है। इस उच्च चोटीसे कट्टरसे कट्टर सशया त्माके कानोंमें यह सर्वश्रेष्ठ सन्देश गूंजता हुआ आयगा कि "जब हम आकाश छूनेका प्रयत्न करेंगे तब हम पर्वत शिखरपर पहुंच सकते हैं।"

पञ्चम परिच्छेद

शक्तिका रहस्य

(१)

स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये हमें समर्थ बनना चाहिये। किन्तु इस सामर्थ्यका भेद क्या है? इसे भली भांति समझना और समझकर व्यक्तिगत जीवनके आधारपर राष्ट्रीय जीवनकी नींव धरना सारे प्रश्नकी कुंजी है। अपने विरोधी अल्पसंख्यक लोगोंको शारीरिक शक्तिसे दबा देना अबाधित शक्तिका ऐसा पक्का लक्षण माना गया है कि इस विषयपर सत्य बातको स्पष्ट करनेमें धैर्य,सूक्ष्मदृष्टि और कुछ मानसिक अनुशीलनकी आवश्यकता है। लेकिन यह काम बड़ा भारी है। हमें अत्यन्त महत्वपूर्ण युद्धक्षेत्रकी सूक्ष्म परीक्षा करनी है, शत्रुकी प्रकृतिका पता चलाना है, अपने साधनोंकी शक्तिका अन्दाजा करना है और तिल तिल करके तबतक शक्ति संग्रह करते रहना है जबतक हम अजेयताका अभेद्य कवच न धारण कर लें।

(२)

सच्चे बलके भेदको जानना अत्यन्त आवश्यक है। दो भिन्न प्रकारकी लड़नेवाली सेनाओंकी तुलना करनेसे यह बात साफ

मालूम हो सकती है। एक, सुसंगठित सेना जिसका परिचालन बड़ी योग्यतासे हो रहा है और जो आशा और उम्मेद्से उछलती हुई आगेको बढ़ रही है और दूसरे, नष्ट भ्रष्ट होनेके बाद किसी सेनाके थोडेसे बचे खुचे सैनिक जो कि भगी पडनेपर अपने सहयोद्धाओंके समान भगाये नहीं जा सके किन्तु जिनकी आत्मा एक ऐसी आशाके साथ जूझ रही है जिसे सबने निराश होकर छोड दिया है। अब हम इन दोनोंपर विचार करेंगे क्योंकि इन दोनोंके मिलानसे हम रहस्यको समझ सकेंगे। सुसंगठित सेना का साहस उस उच्च कोटिका नहीं है जिसने थोडेसे बचे खुचे सैनिकोंको आखिरी दम तक लडनेके लिये हिम्मत दे रखी है।

पहले सुसंगठित सेनाको ही लीजिये। उसका बल इसलिये है कि उसने युद्धशिक्षा पायी है, उसमें घने मेलका भाव है, उसके सैनिक अपने अफसरोंकी आज्ञाका पूर्णतया पालन करते हैं जिससे सारी पलटनमें एकता हो जाती है। इन बातोंके अतिरिक्त अधिक संख्यामें होनेके कारण अपने सुरक्षित होनेका विश्वास रहता है, दल बनाकर धावा करनेमें उमङ्ग रहती है और अपने सेनानायकोंकी योग्यतापर विश्वास रहता है। इन सब बातोंसे सेनामें साहस और शक्ति रहती है। संगठनसे सेनामें आत्म-विश्वास बढता है, इसीलिये पलटनोंमें कडेसे कड़ा दण्ड देकर भी कायदोंकी पाबन्दी करायी जाती है।

सेनाकी शक्ति उसकी सर्वाधिकता, एकता, परस्पर तथा सर्दारोंपर निर्भरतामें ही है। जब इस सेनापर अचानक आफत टूट

स्वय अपनी जान खतरेमें डाल रखी है उसे दूसरोंको, निर्दोष बतलानेका भार अपने ऊपर नहीं लेना चाहिये। यह तो कदापि न होना चाहिये कि डरपोक लोगोंको हृदयमें माने हुए सिद्धान्तकी ओर बढ़ानेके लिये खुले आम नरम सिद्धान्तका प्रचार किया जाय। वे जहां तक सिद्धान्तको मानते हैं उन्हें उसपर अमल करनेके लिये उत्तेजित कीजिये। अपने सिद्धान्त-में कमी न करनी चाहिये क्योंकि ऐसा आदमी बादको समझता है कि वह ऐसी बातें बक गया जिनको वह बिल्कुल नहीं मान सकता; और यदि तुम किसी मनुष्यसे वह करनेको कहोगे जिसे तुम स्वीकार नहीं कर सकते और ऐसी बातें दूसरोंसे कहते ही जाओगे तो यह तुम्हारे हृदयका बल क्षीण कर देगा और जिस बातको तुम पहले घोर घृणाकी दृष्टिसे देखते थे उसके प्रति धीरे धीरे उदासीन बन जाओगे। तुमको मालूम नहीं होगा किन्तु तुम बदल जाओगे। पुराने मित्र तुमपर रोष प्रकट करेंगे। यह देखकर तुम भी उनपर झुंझ-लाओगे, यह नहीं जानोगे कि तुम कैसे बदल गये हो। विश्वासी पुरुष जिन सिद्धान्तोंपर विश्वास करता है उन्हें कुछ समयके लिये छोड नहीं देता या अपने सिद्धान्तके विरुद्ध बात नहीं करता। यदि वह ऐसा करे तो कुछ दिनों बाद वह अपने सिद्धान्तको प्रकट करनेमें घबड़ायगा। दो प्रतिकूल बातोंका सामञ्जस्य करना प्राय असम्भव है। हमें आधे दिलसे काम करनेकी नीति छोड देनी चाहिये।

हमारी नीति पूर्ण, स्वच्छ, अविरोधी तथा अशान्त और जिज्ञा हृदयोंको सन्तुष्ट करनेवाली होनी चाहिये। जब हम अशान्त जिज्ञासुओंको अपनी ओर कर लेंगे तो अकर्मण्य लो स्वयं उनके पीछे चले आवेंगे। यह बात भली भांति सम लेनी चाहिये कि कोई भी मनुष्य अपनेको या अपने साथी गुरु कर्तव्यसे बरी नहीं कर सकता। इसपर भी हमने कर्तव्य भ्रष्टताको बुरा नहीं समझा है। इससे हम गड़बड़में पड़े हैं औ हमने हानि उठायी है। इस मतिसे कि हम भविष्यमें वीर अग्र बनेंगे हम वर्तमान समयमें मनुष्य बननेसे भी वञ्चित रह जाते हैं हम उस धुंधले भविष्यका दृश्य देखते हैं जब हम महान् काय करनेको प्रेरित किये जायगे। हम यह नहीं देखते कि प्रेरणा समय भी वर्तमान है, युद्ध छिड गया है, हमें गुप्त स्थानसे पताक उठा लेनी चाहिये और वीरताके साथ इसे फहराना चाहिये संग्रामकी इतनी समीपतासे हृदय दहल सकता है, किन्तु यु छेड़नेके इस भयका अर्थ पराजयके सब बुरे परिणामोंको बिन विरोध किये सहन करना है। यह पराजय ऐसी है जो विजय परिणत हो सकती थी। यदि हम वीरतापूर्ण भविष्यके लिये अपनेको योग्य बनाना चाहते हैं तो हमें वर्तमान समयमें ही उठ खड़ा होना और मनुष्य बनना चाहिये।

(७)

कभी कभी हमारा वास्ता निष्पक्ष लोगोंसे पड जाता है।

युद्धमें ऐसी आवश्यकता आ पडती है। हमारे दुर्भाग्यसे अपने बीच ऐसे भी लोग हैं जो आयर्लैंडको पुरानी स्वाधीनताको फिरसे स्थापित करनेपर विश्वास नहीं करते। किसी समय हम डिग न जायं इसलिये यह अच्छा है कि हम ऐसे आदमियोंके निकट भी रहें, क्योंकि इनका स्पष्ट सत्यप्रेम हमको ठीक रास्ते-पर लानेके काम आ सकता है। हमें इन निष्पक्षवादियोंको अपनेमें मिलानेकी चेष्टा करनी चाहिये। जबतक यह नहीं होता इन लोगोंसे हमें निष्पक्ष स्थानपर आपसमें समान प्रयोजनके लिये मिलना चाहिये। किन्तु स्वाधीनताका झंडा हमारे साथ साथ चलेगा। और यह बात सबसे मुख्य है। जब निरपेक्ष लोगोंसे मिलनेमें हम अपना झंडा साथ लिये चलते हैं तो क्या जिस स्थानमें विरोधी मतके लोग मिलते हैं वहा हमें अपनी ध्वजा गिरा देनी चाहिये ? अपने साथ साथ सिद्धान्तरूपी झंडा ले चलनेका अभिप्राय यह नहीं है कि हम दूसरोंमें बलात्कारसे अपना मत ठूसना चाहते हैं, बल्कि यह है कि हम अपने चित्तमें सदा इन सिद्धान्तोंको स्पष्ट-तया रखना चाहते हैं जिससे प्रतिकूल मत हमपर जबरदस्ती न लादा जा सके। इस बातका हमें ध्यान रखना चाहिये कि निष्प-क्षतामें कोई फर्क न आने पाये। हमें इस गढ्ढेमें गिरनेसे भी सावधान रहना चाहिये कि ऐसे अवसरपर वह बात जिसे हम अपने सिद्धान्तके अनुसार नहीं मानते हमारे द्वारा स्वीकृत समझी जाती है- क्योंकि उसका खण्डन करनेसे, निष्पक्षता नहीं, रह

जाती। निष्पक्षताका आशय यह नहीं है कि हम जिस बातका विरोध नहीं करते उसे मान लेते हैं। निष्पक्षता तो विरोधी पक्षोंमें समभावसे रहनेका नाम है। और चूंकि गम्भीर विषयोंपर हम विभक्त हो रहे हैं इसलिये यह हानिकर विचार हमें दिलसे निकाल डालना चाहिये कि इस मेलके स्थानपर एकत्र होनेसे हम निष्पक्षताके विरोधी सिद्धान्तोंको बुरा बतलाते हैं। दोनों पक्षके लोगोंके लिये जो अपने सिद्धान्तोंको जीवनका अग बनाये हुए हैं यह प्रशंसाकी बात नहीं है कि वह अनायास ही सिद्धान्तोंको बगलमें दबा लें। नहीं, निष्पक्ष लोग अपने सिद्धान्त भूल जानेको नहीं कहते किन्तु एक दूसरेके सिद्धान्तोंका सम्मान करते हैं। निष्पक्षताका यह सिद्धान्त बहुत ऊंचा और गौरवशाली है। निष्पक्षपातियोंकी सभामें मनुष्यसे अपना सिद्धान्त छोडनेको नही कहा जाता, बल्कि पक्षपातहीन मनुष्य और उसके सिद्धान्त पवित्र समझे जाते है।

(८)

जब हम समझ लेते हैं कि राष्ट्रीय भाव जीवनके प्रत्येक कार्य्यसे सम्बन्ध रखते है, तो हम मालूम करने लगते हैं कि इन भावोंकी रक्षा करनेके लिये बार बार हमपर अचानक भार आ पडता है। जो लोग राष्ट्रीय विचारोंका प्रसङ्ग छेडते हैं वे जानबूझकर इनका तिरस्कार करनेके लिये ऐसा नहीं करते, उनमें संस्कार ही ऐसा पड जाता है कि वे अनजानमें यह बात

ठीक समझ लेते हैं कि वर्तमान या भविष्य कालमें हमारे प्रधान सिद्धान्तके लिये कहीं ठौर नहीं है और वे यह आशा करते हैं कि सब लोग उनसे सहमत हों। उनसे पहला और भीषण संघर्ष उनकी इस धारणापर ही हो जायगा कि वर्तमान दशा बदल नहीं सकती। हमें इससे उल्टी धारणा लेकर लडनेके लिये शान्तिसे कटिबद्ध रहना चाहिये और अपने पुराने सिद्धान्तोंपर अटल रहकर उनकी न्याय्यता प्रमाणित करनी चाहिये। हमें इस बातका भी पक्का अनुभव कर लेना चाहिये कि हमारे विरुद्ध जिन लोगोंके विचार निश्चित, दृढ तथा सधे हुए हैं उनकी संख्या हमारी तुलनामें बहुत कम है। यह थोडी संख्या शक्तिशाली अङ्गरेज सरकारको छातीसे लगाती है, बिना हेतुके इसकी आज्ञायें शिरोधार्य करती है और जनसाधारणपर अपना प्रभाव डालनेकी कोशिश करती है। (जनसाधारणके विचार अनिश्चित होते हैं, जिस समय जो शासन करता है उसीके साथ बहते रहते हैं।) हमें इस जनताके भीतर ही सत्य सिद्धान्तोंको फैलाना है जिससे उनमें अधिक स्थिरता, अधिक उत्साह, अधिक जात्यभिमानका सञ्चार हो और वे अपनेको जातीयताके योग्य सिद्ध कर सकें। उनको स्वातन्त्र्यवादमें तभी पूर्ण विश्वास हो सकता है जब वे देखने लगेंगे कि हमारे पक्षकी रक्षा पग पगपर की जा रही है। हमारा एक मात्र कर्तव्य अपने सिद्धान्तकी रक्षा करना ही होना चाहिये। यह कर्तव्य हमें खोजना नहीं पडेगा, यह स्वयं उपस्थित होगा और इसके साथ हमारी परीक्षा हो जायगी।

इसका एक उदाहरण लीजिये। जब नाना मतके मनुष्य किसी कामके लिये एकत्र होते हैं और महत्वपूर्ण विषयोंकी चर्चा नहीं होती, अकस्मात् अनजानमें या आजमाइशी तौरपर एक आदमी ऐसा सवाल उठा देता है जिससे सभामें मतभेद हो जाय। मान लीजिये वह आयर्लैंडमें अंगरेजोंकी प्रभुता स्वीकार करता है और आर्थिक लाभकी मूर्खतापूर्ण आशासे हमारा स्वाधीनताका दावा छोड़ देता है। बस, इस विषयपर एकत्रित सभ्य बेहूदा बातें बक जाते हैं और कुहराम सा मच जाता है। ऐसी स्थितिमें बहुत सम्भव है कि अयर्लैण्डकी पूर्ण स्वाधीनतापर विश्वास करनेवाला मनुष्य अपने साथ ऐसे मनुष्योंको देखेगा जिन्हें उसका साथ देना चाहिये था किन्तु मातृभूमिके अधिकारोंके विषयमें उनके विचार अस्पष्ट रह गये हैं। ऐसा मनुष्य देखेगा कि दूसरे पक्षके विषयमें भी उनके विचार उतने ही अस्पष्ट हैं। वे किंकर्तव्यविमूढ हैं और जो जिधर घसीटता है उधर ही चले जाते हैं। इसलिये जब लड़ानेवाला मत पेश किया जाता है उस समय यदि वह चतुर और स्वच्छ बुद्धिवाला हो तो उस राजनीतिक दावपेंचकी कलई खोल सकता है और उन्हें हीन, निकम्मा और अपमानकारी सिद्ध कर सकता, इन बातोंसे है वह सभामें और सबोंका मन अपने ढांचेमें ढाल सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि उसे इसके लिये तैयार रहना चाहिये। यह बात हमें भली भांती समझ लेनी चाहिये कि वार्तालापमें बहुधा एक मार्केका शब्द किस प्रकार

ढंग पलट देता है और जिस मनुष्यके विचार जोशीले और साफ होते हैं उसका कैसा रोब जम जाता है। उधर दूसरे लोग उदासीन व अनिश्चित रहते हैं। सिद्धान्तका कट्टर मनुष्य एक भी अच्छा है। कोई नहीं कह सकता जीवनकी घटनायें उसे कहां डाल देंगी। उसके सिद्धान्त उसके मुंहपर ललकारे जा सकते हैं। उसे अपने मतका स्पष्टीकरण करना होगा। ऐसे अवसरपर लोग किसी प्रकार अपना पिण्ड छुडाना चाहते हैं। किन्तु हमें अपनी ओरसे आक्रमण न कर अपने सिद्धान्तोंपर डटे रहना चाहिये पर जब दूसरा पक्ष आक्रमण करता है तो उसके लिये तैयार रहना चाहिये। इससे भी कमजोर लोगोंके हृदयमें सिद्धान्तके प्रति विश्वास उत्पन्न होता है।

हमें दोषारोपण करनेकी आदतसे संक्रामक रोगकी तरह बचना चाहिये, किन्तु हम अपने पक्षकी बातें साफ साफ कहेंगे और शत्रु मित्रके साथ लडनेके लिये तैयार रहेंगे। किसी समय ऐसा होता है कि ठीक उस जगह जहां इस बातकी सबसे कम आशा होती है इधर उधरसे भटकता हुआ एक मिथ्या सिद्धान्त चटकीले भडकीले शब्दोंके भीतर छिपकर हमारी बातका खण्डन करनेके लिये आ पहुंचता है। तत्काल वायुमंडलको साफ करनेके लिये एक दो उज्ज्वल शब्द कह दिये जाय। इससे हमारे मित्रोंको ढाढस मिल जाता है और वे संभल जाते हैं। जब हम विरोधियोंके बीच अकेले रहते हैं और विरुद्ध सिद्धान्तवाले यह समझते हैं कि हम उनके साथ हैं और हमारे सहयोगकी आशा रखते हैं, तो हम उन्हें एक

शब्द कहकर रास्तेपर ला सकते हैं; यह शब्द उन्हें रोक देगा। वे समझ जायगे कि हमारे क्या सिद्धान्त हैं-जिनके लिये हम लडनेको कटिबद्ध हैं। फल यह होगा कि सब हमारा सम्मान करने लगेंगे। चाहे लडाई लडनी पडे हम उक्त-ढगसे काम करनेपर अपनी स्थिति स्पष्ट कर देते हैं। इसे हम सरल शब्दोंमें कह सकते हैं कि हम अपना झंडा फहरा रहे हैं।

(६)

जो मनुष्य अपने जीवनको वीरतापूर्ण भावोंसे भर देना चहता है उसका किस प्रकार विरोध किया जाता है यहापर हम उसका थोडा उल्लेख करेंगे। उससे लोग कहेंगे कि तुम किस मायाजालमें पडे हो; सपनेकी सी बातें कर रहे हो, या तो तुम्हारा दिमाग खराब है, नहीं तो तुम मूर्ख हो। ऐसे मौकेपर हमें यह देखना चाहिये कि हमारे समालोचक स्वय मायाजालमें पडकर अन्धे तो नही बन गये हैं और हमें अपनी मूर्खताका उनकी बुद्धिमत्ताके साथ मिलान करना चाहिये।

× × × ×

उस सम्पन्न पुरुषको लीजिये जो सुखप्राप्तिकी खोजमें इधर उधर भटकता फिरता है और दूसरे लोगोंसे कहता है-"मूर्ख मत बनो, मेरा उदाहरण ग्रहण करो।" थोडी देरके लिये उसे अपना पथ-प्रदर्शक मान लीजिये। कुछ समय तक उसके साथ रहनेसे आपको मालूम हो जायगा कि उसका अवकाश हुल्लडबा-

जीमें ही करता है, आनन्दसे नहीं। उसकी उस समयकी दशा देखनेसे जब कि वह बेखबर रहता है पता चल जायगा कि उसका जीवन ग्लानि और सुस्तीमें बीतता है। यह भोग-विलासका पुजारी जीवनके हीन या श्रेष्ठ जिस मार्गपर चले उसे वह भार प्रतीत होगा। श्रेष्ठ जीवन बितानेके लिये वह एक या दो बढ़िया क्लबोंका मेम्बर बनेगा, और भी अधिक विषयासक्त होगा, अधिक अवकाश और अधिक आनन्द ढूंढेगा, किन्तु इस प्रकारके पुरुषका ढंग आप सर्वत्र एकसा ही पावेंगे। जीवन उसके लिये भारी बोझ सा बन जाता है, उसके हृदयमें किसी प्रकारका आनन्द नहीं रहता, कोई उत्तेजना नहीं रहती, शक्ति नहीं रहती और न उमंग ही रहती है। इस दशामें रहनेकी इच्छा कौन करेगा?

एक और मित्र आपकी पीठ ठोककर कहता है "ऐसे भोग विलासी मत बनो किन्तु कामकाजी बनो, भ्रममें मत पड़ो, अनहोनी बातोंमें मत फँसो—भविष्यकी बात कौन जानता है? हमें तो वर्तमान समयसे काम निकालना है। हमारे इस विश्वासी मित्रमें विचार शक्तिका अभाव है। वह दूसरेको भविष्यसे सम्बन्ध तोड़नेकी शिक्षा देता है और स्वयं ऐसा प्रस्ताव कर रहा है जिसका परिणाम हम भविष्यमें ही जान सकेंगे। हमसे तो वह कहता है कि कौन जानता है कि भविष्यमें स्थिति हमारे अनुकूल होगी और अपने विषयमें भविष्यको अपने अनुकूल माने बैठा है। लेकिन हमारा तो यह दावा है कि भूत कालके समान

भविष्यमें भी हमारे सिद्धान्तोंकी प्रभुता रहेगी। भविष्यकी घटनाओंके लिये कोई कुछ नहीं कह सकता। जो पुरुष हमारे सिद्धान्तोंके लिये हमें स्वप्न देखनेवाला कहता है वह वर्तमान या भूत कालका ऐसा एक भी उदाहरण नहीं दे सकता जिससे सिद्ध हो कि उसके ढगके लोगोंने कुछ कर दिखाया हो। संसारमें सभी स्वप्न देखते हैं। हा, कुछ लोग दुःस्वप्न देखते हैं और कुछ लोग, स्वच्छ नक्षत्र खचित आकाशके नीचे संगीतमय सुन्दर ससारका दृश्य देखते हैं।

(१०)

नवीन उत्साहीको जिसने हालहीमें सिद्धान्तको ग्रहण किया है जानना चाहिये कि उसे ऐसे निराश करनेवाले अवसरोंका सामना करना पडेगा जिनका मुकाबला सबसे उत्साही, सबसे साहसी और सबसे दृढचित्त मनुष्योंको भी करना पड़ा है। हमारा कार्य मनुष्योंका कार्य है, और इसमें ऐसे परिवर्तन हुआ ही करेंगे, जैसे मनुष्यके कार्यों में सदा हुआ करते हैं। इसलिये प्रत्येक ऐसे कार्यमें भाग लेनेवाले सैनिकको चाहिये कि वह सदा दारुण दुःख सहने और ऐसे समयका सामना करनेको तैयार रहे जिसमें उसे अपने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दीख पडे। ऐसे समय निराशा भयानक अधेरे कुहरेकी तरह प्रत्येक सुन्दर वस्तुको और प्रत्येक आशाकी किरणको ढक देती है। इस निराशाके कई कारण हो सकते हैं। दुर्बल

मनुष्यके अधिक परिश्रम करने अथवा कई वर्षों से ऐसा प्रयत्न करनेसे जो निरर्थक सा दीखता हो या जिसे लोग भूलसे गये हों यह खिन्नता पैदा हो सकती है। यह म्लानता अपनी ओर ऐसे मनुष्योंको देखकर भी पैदा हो सकती है जिनका इस कार्य्यमें भाग लेना ही एक पहेली है, जिनका न तो चरित्र ही ठीक है, न वे सिद्धान्तका महत्व ही समझते हैं और जिनकी जघन्य, कुत्सित तथा कुटिल नीति तुम्हें निर्जीव बना देती है क्योंकि तुम समझते हो कि जिस मनुष्यके हाथमें हमारी जैसी निष्कलङ्क पताका हो उसे स्वभावत धीर, वीर और गम्भीर होना चाहिये। यह मुर्दनी तुममें शत्रुके दिखाऊ अतुल बल और उन हजारों मनुष्योंकी लापरवाहीके कारण फैल जाती है जो गद्‌गद् होकर स्वतन्त्रताके गले तो चिपट जायगे पर इस समय हताश होकर हाथपर हाथ रखे बैठे हैं। इनके अलावा अपनी वातोंमें मग्न रहनेवाले उस कामकाजी मनुष्यका विरोध भी हमें खिन्न कर देता है जो सदा प्रत्येक उच्च विचार और अटल सिद्धान्तोंकी आलोचना किया करता है।

यह सब कठिनाइया स्वतन्त्रताके सैनिकको झेलनी होंगी। जो सग्रामसे थक गये हैं उन्हें समझ लेना चाहिये कि जिस समय सङ्कटकी घड़ी आती है उस समय अन्धकारपूर्ण आकाशमें एक चमकता हुआ तारा भी दिखलायी देता है। जहा एक या दो सैनिक हैं वहा वह व्यर्थ मालूम हो पर यदि वे दृढ रहे तो उनकी सख्यामें वृद्धि होगी। सत्यका प्रेम संसर्गसे फैलता

है। जिस समय उन्नतिके मार्गमें बाधा उपस्थित होती है उस समय इस बातपर विचार मत करो कि हमारी इस वक्त क्या स्थिति है, पर इस बातको सोचो कि हमने एक समय कैसे उच्चता प्राप्त कर ली थी। इस समय हमारे लिये क्या बचा है और हम आगेको कितना प्राप्त कर सकते हैं। यदि कुछ लोग शिथिल पड गये हों और समयके अनुकूल अपने सिद्धान्तोंको बदलने लगे हों तो अधिक दृढ होकर उनसे सहानुभूति दिखलाओ। मृत्युको आलिङ्गन करनेकी अपेक्षा सिद्धान्तोंको पूर्णतया पालन करते हुए जीवित रहना कठिन है। कई उदारचरित्र पुरुष कठिन अवसर आ पडनेपर पूर्ण साहसके साथ उद्देश्यकी सिद्धिके लिये अपने प्राणोंकी आहुति दे देते हैं। पर जीवित मनुष्यको सिद्धान्तके लिये समय समयपर बिना चेतावनी मिले ही अग्नि-परीक्षाका भार वहन करना पडता है, और चूंकि सिद्धान्तके पालन करनेमें जीवनकी सारी शक्ति होम देनी पडती है सिद्धान्तकी मांगें इतनी जबर्दस्त होती हैं कि कई मनुष्य हिम्मत हार देते हैं।

हमें जनसाधारणके दिलमें यह जमा देना है कि जीवित रहना उतना ही साहसका काम है जितना कि जानपर खेलना। किन्तु वर्तमान समयमें हमें भ्रममें डालनेके लिये यह चिकनी चुपडी बात कही जाती है कि "तुमसे मातृभूमिके लिये प्राणोत्सर्ग करनेको कौन कहता है तुमसे तो प्रार्थना की जाती है कि उसके लिये जीवित रहो।" इसके साथ इस बातपर जोर नहीं दिया जाता

कि जीवनका उद्देश्य तेजस्वी तथा सत्य आदर्शके लिये प्राण धारण करना है। निरी क्षमा-प्रार्थनामेंही अस्तित्व गवा देना जीवन नहीं है। यदि जीवनके विषयमें जनतामें ऐसे तुच्छ विचार फैल जाय तो हमें मातृभूमिमें मनुष्योंके स्थानपर ऐसे जीव दिख लायी देंगे जिन्हें भयसे कम्प छूट रही हो। ऐसे प्राणियोंमें न तो जीवित रह सकनेकी शक्ति रहेगी और न जान देनेका साहस ही रहेगा। वास्तवमें महान् सकट आ उपस्थित होगा। इन सब बातोंसे देशमें निराशा छा जायगी। इस उदासीनता और विश्वासघातको, साहसहीन मित्र और लडाके शत्रुओंको तथा अपने जीर्ण शरीर और चक्करमें पडी हुई बुद्धिको देखकर हममेंसे जो पुराने सिद्धान्तोंका प्रचार कर रहा है वह अपनी आवाजको अवश्य ही अरण्यरोदन समझ सकता है। जबतक खूनमें फिर गर्मी नही आजाती और विचारोंमें फिरसे तेजस्विता नहीं समा जाती तबतक इस अरण्यरोदनसे ही काम होता है। हजारों वर्ष पहिले जो बातें नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज समझी जाती थीं उनमें इस समय बल और उत्तेजना दिखायी देती है किन्तु कामकाजी आदमीकी आवाज न पहले उत्तेजित कर सकती थी, न अब कर सकती है।

(११)

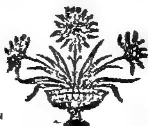
अब अन्तमें हम विचार करेंगे कि हमारा निश्चित मत क्या होना चाहिये। अपने विचारोंको आचारमें परिणत करना ही

हमारा मत है। जब हम ऐसा करते हैं हमारा स्वाधीनताका संग्राम गूढ तथा सार्थक रूपमें आरम्भ हो जाता है। हमें भविष्य-में अधिक सुगमता देखकर अपना कर्तव्य स्थगित न करना चाहिये। स्वाधीनता प्राप्त करनेके विषयकी बातचीत छेडनेको वाध्य होना उतना ही सम्भव है जितना कि साधारणतया सैनिक सगठन कर युद्ध छेडनेको मजबूर होना। हम जब लडाई छेडने-को मजबूर होनेका उल्लेख कर रहे हैं, कोई यह न समझे कि हम सन्धिकी बातचीतको भुला देनेकी भयानक भूलके अपराधी हैं।

× × × × ×

हम नहीं कह सकते कि भविष्यमें हमारे ऊपर अचानक कौनसी घटना टूट पडे किन्तु जब हम सर्वदा यह ध्यानमें रखेंगे कि वर्तमान समय ही मार्मिक समय है तो हम हर घडी तत्पर रहेंगे। हमको वीरताके साथ अपना सिद्धान्त ठीक कर लेना चाहिये और अपने जीवनको उसके अनुसार चलाना चाहिये। प्रत्येक मनुष्यको अपनी सेनाके साथ बना रहना चाहिये और अपना झण्डा किसीके सामने न गिराना चाहिये। ऐसा करनेसे ही हम अपने चारों ओर अपनी जड फैला सकते हैं और इति-हासलेखक हमारे विषयमें लिखेगा कि हमारा काल तेजहीन नहीं बल्कि तेजपूर्ण था। मैं फिर कहूंगा कि युद्धके चढाव उता-रके चक्रमें पडकर हमें समय देख अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले पुरुषको हीनता और शत्रुके विश्वासघातसे व्याकुल न होना चाहिये। हमें शान्त तथा सयत रहना चाहिये और बहुतसे

लोग जो साफ नीयतसे या आनेवाले आकस्मिक भयके कारण हमारे दलमें नहीं हैं उन्हें अपने जीवनके ढंगसे अपने सिद्धान्तकी सुन्दरता, सत्यता तथा नित्य व्यावहारिकता दिखा देनी चाहिये। इससे वे लोग हमारे पक्षमें आजायगे जिनके दिलपर हमारी बातका असर हो सकता है और हमारा मतभेद यथासम्भव घट जायगा। इससे वे लोग भली भांति समझ लेंगे कि जो अविचलित हो महान् सिद्धान्तकी रक्षा करता है वह अवसरको ताकते रहनेवालेसे अधिक अच्छा काम कर सकता है। तब वे समझेंगे कि स्वप्नमें भी इन्होंने जिस बातको सोचनेका साहस नहीं किया था उससे कितना अधिक काम होना सम्भव है। वे ध्येयको आँखोंके सामने देखेंगे और इस दर्शनसे उनमें स्थायी उत्साह, स्वच्छ बुद्धि और आत्माकी दृढ़ता उत्पन्न होगी। जब इतना हो चुका तो देशका उद्धार दूरका स्वप्न नहीं रह जायगा, किन्तु यथार्थ रूपमें आरम्भ हो जायगा, सब हृदयोंमें फिरसे जीवन शक्तिका सञ्चार हो उठेगा और आयर्लैण्ड स्वतंत्रताके अन्तिम संग्राममें प्रवेश करके सफलतापूर्वक बाहर निकल आयगा तथा संसारके राष्ट्रोंमें अपना उचित स्थान फिरसे ग्रहण करेगा।



सप्तम परिच्छेद

दृढ़भक्ति

(१)

मनुष्यकी प्रशंसामें सबसे बड़ी बात यह कही जा सकती है कि वह अपने सिद्धान्तका पक्का है। चूंकि हमारे सारे इतिहासमें मातृभूमिकी दृढभक्ति ही देशवासियोंका प्रधान गुण रहा है इसलिये इस बातको निर्णय करनेका उपयुक्त समय आ गया है कि कौन मातृद्रोही हैं और कौन दृढ देशभक्त। जब मन्दमति सरकारने भली भांति जान लिया कि हम पूरे राजभक्त हैं तो उसने हमारे वीर नेताओंको राजद्रोही बतलाकर न्यायसे वञ्चित करनेकी चेष्टा की। × × ×

जब मनुष्य ऐसी बुराईके विरुद्ध उठ खड़ा होता है जिसने देशमें घर कर लिया हो तो हम इस मनुष्यकी पददलित सत्यके प्रति जो दृढभक्ति है उसकी प्रशंसा करते हैं। हम ऐसे बागीकी सराहना नहीं करते जो सिर्फ बगावतके लिये ही राज उलटना चाहता है। हमें यह विषय भली भांति समझ लेना चाहिये, नहीं तो जब हम सदियोंकी चेष्टाके बाद स्वतन्त्रता फिरसे स्थापित करेंगे तो प्रत्येक दुर्जन और विश्वासघातीको हमारी स्वतन्त्रतापर दोष लगानेका अवसर मिलेगा और वह

शत्रुको फिरसे हमारे देशमें घुसानेका षड्यन्त्र रचेगा।

सिद्धान्तके प्रति दृढभक्ति साधुस्वभाव पुरुषका सद्गुण है।

आयर्लैण्डमें दृढभक्ति (Loyalty)शब्दका दुरुपयोग हुआ है और इसको व्यर्थ ही बदनाम किया गया है। यह स्मरण करके कि हमारे सब कालके वीर पुरुषोंमें यह गुण वर्त्तमान रहा है हमें फिर इसे उचित सम्मानका पद देना चाहिये। इस दृष्टिसे विचार करनेपर हमें कई ऐसी मार्मिक स्थितियोंका उल्लेख करना पड़ेगा जिनके कारण हमें हैरान और परेशान होना पड़ा है। हमें सरकारके उपकरणोंका उपयोग करते हुए अपने उन स्वत्वोंका प्रतिपादन करना पड़ेगा जिन्हे वह इन्कार करती है। एक बातपर स्थिर रहनेका जो सबसे बड़ा प्रश्न आजकल उपस्थित है उसपर भी ध्यान देना होगा। एक ओर राजनीतिमें भाग्यपर खेलनेवालोंके प्रति और दूसरी ओर निश्छलाहृसे काम करनेवाले सत्य-हृदय मनुष्यके प्रति अपने भावोंका विचार करना होगा। दृढभक्तिके अन्दर यह सब बातें समा जाती हैं और इससे यह भी मालूम होता है कि जो आदमी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये बगावत करता है ठीक वैसा ही है जैसा स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेके लिये प्राण देनेवाला। ऐसा आदमी बदलते हुए समयके साथ साथ अपने रंग ढंगको नहीं बदलता। वह सदा सिद्धान्तका कट्टर भक्त रहता है क्योंकि घोर अन्धकारके समय जब शासक उसे जङ्गली, दुष्ट और राजद्रोही बताकर कलंकित करते हैं तब भी वह पहिलेके समान

अपने पक्षका दृढभक्त बना रहता है और अन्ततक वैसा ही बना रहेगा। हां, देशके लिये मृत्युको आलिंगन करनेवाला वीर वास्तवमें राष्ट्रका दृढभक्त है और शत्रुका प्रत्येक सहायक और प्रोत्साहक आयर्लैण्डका और आयरिश-जातिका द्रोही है।

(२१)

जब आप स्वार्थसाधक विरोधीसे अनुरोध करते हैं कि मूल तत्वोंके आधारपर इस विषयकी आलोचना करें तो वह फौरन अपनी दलीलोंकी कमजोरी मालूम कर लेता है और प्रसङ्ग बदलकर आपके आचार और विचारोंकी स्थिरतापर चोट करता है। इसलिये हमें पहले ही समझ लेना चाहिये कि किसी विषयकी व्याख्या करनेमें जो युक्तियां दी जाती हैं उनका सापेक्ष गौरव और महत्व कितना है। सिद्धान्तोंका सबसे अधिक महत्व इसलिये नहीं है कि उनके द्वारा किसी विषयमें प्रवीणतासे युक्तियां दी जा सकें किन्तु उनका महत्व इसलिये है कि उनके भीतर एक महान् तत्व छिपा रहता है जो सारे जीवनको उज्ज्वल बनाये रखता है और प्रत्येक छोटे बड़े कार्यको नियममें रखता है। सिद्धान्त व्यक्तिके मनपर प्रकाश डालता है। वह हृदयको उत्साहित करता है, निर्मल बनाता है और बल देता है। वह चित्तको एकाग्र करता है और जीवनकी सब घटनाओंको एक सीधमें लाकर आंखोंके सामने स्पष्ट कर देता है जिससे प्रत्येक मनुष्यको हर बातका

उचित स्थान और परस्पर सम्बन्ध मालूम हो जाता है। सिद्धान्त मनुष्यको उस दर्जेपर पहुंचा देता है जहाँ वह शास्त्रार्थ नहीं करता किन्तु विश्वास करने लगता है। अबतक वह इच्छा और उद्देश्यहीन होकर इधर उधर भटक रहा था, सब शास्त्रोंका रसास्वाद ले चुका हो पर फिर भी घोर निराशामें डूबा हुआ रहता था। वह नहीं समझता था कि उसकी आत्मामें किस वस्तुका अभाव है। वह इस अभावरूपी व्याधिको दूर करनेके लिये संजीवनी बूटीको इधर-उधर खोज कर रहा था कि इतनेमें महान् ज्योतिका उसपर प्रकाश पड़ता है और बाहरसे बल प्राप्त करनेके बदले वह अपनी आत्माको पहचान लेता है। बस, अन्धेको दो आखें मिल गयी। हमारी तत्वबोधकी शक्ति अबतक भ्रमके बादलोंसे छिपी हुई थी। सत्य सिद्धान्तने इन बादलोंको छिन्न भिन्न कर दिया और इस दृष्टिको स्वच्छ, सुन्दर और नवजीवन दान करनेवाली बना दिया। जिसने यह दृष्टि पा ली तर्कका उसपर असर नहीं होता। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह दलीलोंको मानता ही नहीं, बल्कि इसके विपरीत वह प्रमाणोंका पूरा पूरा उपयोग करता है। हां, उसकी आत्मामें ऐसा बोध हो जाता है जिसे निरा नैयायिक प्राप्त नहीं करा सकता और यह दुर्जेय पदार्थ ही उसके नवीन जीवनका रहस्य खोलता है। वह आजतक नास्तिक था, निर्बल था और उसका जीवन निष्फल था। अब

है। जो उसे केवल भावुक समझता है उसने उसका पूरा महत्व नहीं समझा। भावुक ऐसे विचारका प्रचार करता है जिसके अनुसार वह समाजको पलटना चाहता है, किन्तु सिद्धान्तका अनुयायी जीवनके एक ऐसे नियमको मानता है जिसके अनुसार उसे काम करना पड़ता है। उसकी आत्मा इतनी तेजीसे आगे बढ़ती है कि कोई भावुकता उसे रोक नहीं सकती। इसके अतिरिक्त उसके पास अपने सिद्धान्तके अनुकूल मौलिक और दिलमें जम जानेवाली दलीलें होती हैं और उसके खूनमें नवीन और चमत्कृत करदेनेवाली जीवन शक्ति होती है। सिद्धान्तशून्य व्यक्ति अपनी निकम्मी युक्तियोंमें फंसा हुआ तबतक वाद विवादमें पड़ारहता है जबतक कि उसकी बुद्धि चकरा नहीं जाती। उसकी समझमें नहीं आता कि प्रत्युत्पन्नमतिवाला मनुष्य किसी भी साध्यको योग्यताके साथ सिद्ध कर सकता है और फौरन अपनी बात लौटाकर उतनी ही योग्यताके साथ दूसरा पक्ष भी सिद्ध कर देता है। हम रातदिन देखते हैं कि सभाओंमें विषय निर्धारित कर दिया जाता है और दोनों पक्षोंके समर्थकोंको नियुक्त करके वादविवाद हुआ करता है। यह वाक्‌चातुर्य है, बुद्धिका कौशल है, किन्तु तत्वज्ञान आत्माको उत्तेजना देनेवाला है। इसलिये सिद्धान्तकी सत्यता सिद्ध करनेके लिये वाक् चातुर्यकी आवश्यकता नहीं है। यह सत्यता सिद्धान्तके उस गुणमें वर्तमान रहती है जिससे उसपर विश्वास करनेवालेके लिये सारे जीवनका रहस्य

खुल जाता है, जिससे उसका हृदय फडक उठता है और वह प्रफुल्लित, सुन्दर, बुद्धिमान और साहसी बन जाता है ।

(३)

अब हम सिद्धान्तकी स्थिरताका जो प्रश्न उठाया जाता है उसपर विचार करेंगे। हमारे विरोधी कहते हैं "अच्छा महाशय! जब आप अंगरेजी राज्यको नहीं मानते तो उनके सिक्कों और स्टाम्पोंको व्यवहारमें क्यों लाते हैं? आप पारलामेंटको नहीं मानते तो फिर पारलामेंटके कानूनद्वारा स्थापित की हुई काउन्टी कौंसिलोंसे क्यों काम लेते हैं? स्थानिक शासनसे क्यों लाभ उठाते हैं?" इत्यादि। यह तर्क सुपरिचित है और इनका उत्तर भी कुछ कठिन नही है। यद्यपि इस समय तोपें नहीं गरज रही हैं तो भी आयर्लैंण्ड यथार्थमें युद्धकी दशामें है। हम स्वाधीनताको फिरसे प्राप्त करनेके लिये लड रहे हैं। संग्राममें संकटके समय शत्रुको ढीला पडना पडा है और स्थानिक शासन और अन्य कार्यों के मोर्चे लाचार होकर हमें सौंप देने पडे हैं। हम इनको लडाईमें जीते हुए स्थानोंकी भांति समझते हैं और इनके द्वारा अपनी शक्ति बढाने, अपने देशको जागृत करने व उठाने और शत्रु-सेनाकी अन्तिम चौकी छीन लेनेकी तैयारी करेंगे। यह सर्वथा उपयुक्त है। रणक्षेत्रमें उस सेनापतिकी सदा प्रशंसा की जाती है जो शत्रुके अड्डेपर कब्जा जमाकर उसका अन्तिम विजयके लिये प्रयोग करता है।

करते कुछ हैं, हमें उनको यह मुंहतोड़ जवाब देना चाहिये कि हम शत्रुके मोर्चों पर कब्जा कर रहे हैं।

(४)

सिद्धान्तकी स्थिरताकी मिथ्या धारणाका खण्डन कर चुकनेपर भी हमें एक ऐसी दूसरी धारणाका निरूपण करना है जिसे अभीतक सर्वसाधारणने नहीं समझा है। यदि हम स्वतन्त्रताकी सशक्त सेना तैयार करना चाहते हैं तो हमें ऐसे ही सैनिक भर्त्ती करने चाहियें जो उद्देश्यको भली भांति समझे हुए हों, जो लक्ष्यके लिये पूरे दिलसे सर्वस्व न्योछावर करनेको तैयार रहते हों और जो सदा यह प्रण किये रहते हों कि हम अपने झंडेकी प्रतिष्ठा बनाये रखनेके लिये युद्धसे कभी मुंह न मोड़ेंगे। इस बातकी महत्ता तभी मालूम हो सकती है जब हम संसारकी ऐसी घटनाओंपर विचार करते हैं। जबतक मनुष्यका स्वभाव नहीं बदलता प्रत्येक आन्दोलनको ऐसे राजनीतिक बहुरूपिये घेरे रहेंगे जो समयको देखकर अपना काम निकालनेके लिये एक दल छोड़कर दूसरेमें जा मिलते हैं। ऐसे लोगोंका एक ही सिद्धान्त होता है—जिस दलकी प्रभुता हो उसीका पक्ष समर्थन करना—और इस उद्देश्यको सिद्ध करनेके लिये वे किसी भी दलमें मिलने और किसी भी दलको धोखा देनेमें देर नहीं लगाते। ऐसे आदमीको सब लोग भली भांति जान जाते हैं। ऐसे निष्कपट पुरुषको जो आजतक उल्टे रास्तेपर चल रहा था और

अब सच्चे दिलसे सत्यकी खोज करनेके बाद हमारे झंडेके नीचे आजाता है, हम फौरन पहचान जाते हैं। किन्तु जिस उद्योगमें राजनीतिक बहुरूपिया अपने दलमें भर्ती कर लिया जाता है और उसको प्रभुता दी जाती है वह उद्योग अवश्य विफल होगा। यह बात कुछ विचित्र सी मालूम होगी कि ऐसे लोग भी बड़े बड़े आन्दोलनोंमें भर्त्ती किये जाते हैं। इसका यही कारण है कि नेता तत्काल लोगोंको अपने दलमें मिला लेना चाहते हैं और जो अभीतक अपने दलमें नहीं आये हैं उन्हें अपनी बढ़ती हुई संख्यासे विश्वास दिलाकर उनके दिलोंमें धाक जमाना चाहते हैं। हम अपने बढ़ते हुए बलकी भावी हानिका ख्याल नहीं करते क्योंकि जब राजनीतिक चालबाज सिद्धान्तकी दुहाई देता हुआ हमारे दलमें घुसता है तो वह बड़ा सुशील और सच्चा मालूम पड़ता है और हम उसे अनुभवी पुरुष समझकर उसका स्वागत करते हैं। अपने बलको बढ़ानेकी चिन्तामें हम उसे बिना भेद भावके मिला लेते हैं। किन्तु हमें अपने आदमी पर पूरा विश्वास होना चाहिये। हमें स्मरण रखना चाहिये कि इस चालबाजसे शत्रुताकी अपेक्षा मित्रता अधिक हानिकर है। हमें यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि जनता—जिसका भ्रम दूर करके हम अपने सिद्धान्तकी ओर लाना चाहते हैं- चुप चाप हमारी कार्रवाई देख रही है। सम्भव है हमारे सिद्धान्तोंसे जनता हमारी ओर खिच रही है और हमारी जाच पड़ताल करनेके लिये हमारे पास आ रही है। जनता कुछ न जाने, पर वह

सिद्धान्तभ्रष्ट पुरुषको अवश्य पहचानती है। जब हमारे दल औ समाओंमें वह ऐसे पुरुषको पाती है तो वह हमारी दलीलें सुन या हमसे प्रश्न करनेके लिये न ठहरेगी। वह हट जायगी और हमसे दूर रहेगी। किसी आदमीकी पहचान उसकी संगति होती है। इस पुरानी कहावतकी व्यापकता जितनी हम समझ हैं उससे बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त उस राजनीति चालबाजको भर्ती करनेसे हमारे विचार व्यवहारके बीच कुछ अन्तर आ जाता है।

हम स्वतन्त्रताके लिये लड़ रहे हैं, न कि सांसारिक लाभ य सुखकी आशासे। हम इसलिये लड़ रहे हैं कि मनुष्यकी उदा वृत्तियां बाध्य करती हैं कि मनुष्य अपना स्वतन्त्रताका स्वत्व प्राप्त करे जिससे उसका जीवन सुन्दर और पराक्रमी बने। वास्तवमें इससे बढ़कर आश्चर्यकी बात कोई नहीं हो सकती कि ऐसे धर्मयुद्धमें पामर, कपटी और कोरे स्वार्थी मित्र हमारे दलमें हों। हमें सोलहों आने अपने सिद्धान्तका भक्त होना चाहिये और इस बातकी आशङ्का नहीं करनी चाहिये कि आरम्भमें हमारी संख्या बहुत कम है। उस जनसमूहकी अपेक्षा जिसकी दृढ़तापर हम निर्भर नहीं रह सकते सच्चे आदमियोंका छोटासा दल अधिक काम करनेवाला होता है। इस दलकी संख्या और शक्ति बढ़ती जायगी। अन्तमें इसके चारों ओर वह सेना एकत्रित हो जायगी जिसे कोई न हरा सकेगा।

(५)

विचार और व्यवहारकी एकताके यथार्थ ज्ञानके कारण हम राजनीतिक चालबाजसे जिस प्रकार बचे रहते हैं उसी प्रकार इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि निरुत्साही किन्तु शुद्ध हृदय मनुष्यसे कैसा व्यवहार होना चाहिये। निरुत्साही पुरुष कहता है कि इङ्गलैण्डसे अलग हो जाना इस समय सम्भव नहीं है और होमरूल या आयर्लैण्डके लिये स्वतन्त्र पारलामेंट स्थापित करनेका प्रस्ताव करता है। साधारण दृष्टिसे यह बात उचित जचती है और हमारी इच्छा इस आधारपर अपने देशके दूसरे दलवालोंसे सन्धि करनेकी होती है और सन्धि कर भी ली जाती है। फल यह होता है कि ऐसे लोग एक स्थानपर आकर जमा हो जाते हैं जिनमेंसे कुछ तो पूर्ण स्वतन्त्रतापर विश्वास करते हैं, कुछ आंशिक स्वतन्त्रताको पूर्ण स्वतन्त्रताकी पहली किश्त मान लेते हैं और कुछ केवल आंशिक स्वतन्त्रता को ही अपना ध्येय मान कर उससे सन्तुष्ट हो जाते हैं। थोड़े दिनोंमें ही यह सन्धि टूट जाती है और सब लोग मतभेदके कारण कामसे अपना हाथ खींच लेते हैं। दीर्घ दृष्टिवाला पुरुष जानता है कि प्रत्येक प्रस्तुत कार्य अन्तिम ध्येय और सिद्धान्तके अनुकूल होना चाहिये, इसीसे हमारे उद्देश्यकी सिद्धि हो सकती है। उसे यह भी मालूम रहता है कि इस समय हम जो काम कर रहे हैं उसके भीतर हमारा सिद्धान्त छिपा रहता है। ऐसे समय उसे अपने पक्षका कट्टर अनुयायी बना रहना चाहिये और

वह सिद्धान्त भी मानना चाहिये जिसे और लोग भले ही न मानें किन्तु वह अपने जीवनका व्रत समझता है। किन्तु उसके नये मित्र ऐसे सिद्धान्तसे बंधना अस्वीकार करते हैं जो उसके लिये कानूनके बराबर है पर औरोंके लिये जिसका कुछ मूल्य नहीं है। सारे झगड़ेकी जड़ यही है। जो मित्र किसी समान उद्देश्यको लेकर मिलकर काम करनेका विचार करते हैं वे देखते हैं कि उनके बीच ऐसे विषय छिड़ जाते हैं जो विवादास्पद हैं। वाद-विवाद आरम्भ हो जाता है और बहस गरम हो उठती है, आपसमें गाली गलौज होने लगती है, मनोमालिन्य पैदा हो जाता है और सभा भङ्ग हो जाती है।

अपना मन मारकर जो मित्रता की जाती है उससे मनोरथ तो सिद्ध नहीं होता बल्कि इसके द्वारा जो शुद्धहृदय मनुष्य एकत्र किये गये थे उनके बीच अविश्वास उत्पन्न हो जाता है। इस प्रस्तावको कार्यमें परिणत करनेसे कुछ लाभ नहीं हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिन लोगोंको अपनी पूर्ण मांगोंकी स्वच्छ धारणा है उन्हें सावधानी तथा दृढ़तासे अपना प्रोग्राम तैयार कर लेना चाहिये और अपने ही बलपर आगे बढ़ना चाहिये। इसपर कई लोग दुहाई देने लगते हैं—देखिये! फिर आपसमें फूट पड़ गयी, फिर वही बात आगयी, यह लोग आपसमें मिल ही नहीं सकते, इत्यादि। हम इन लोगोंकी बातें सुनकर मुंह नहीं मोड़ेंगे। किन्तु ध्यान रहे कि काम पड़ने पर हमारा पूरा पूरा साथ न दे सकनेवाले शुद्धहृदय मनुष्योंसे

बिना सिद्धान्तोंकी हत्या किये भी मेल हो सकता है। ऐसा स्वतन्त्र मेल ही हमारा वह मनोरथ सिद्ध कर सकता है जिसे पूरा करनेके लिये हमने सब दलोंको मिलाया था और अन्तमें जिससे हमारा सारा काम चौपट हो गया था।

इस विषय पर सबसे मुख्य बात यह है कि उस सच्चे आदमीकी नीयत बुरी न बतानी चाहिये जो हमसे भिन्न मार्गपर जाना ठीक समझता है। जिस आदमीसे हमारा मतभेद होता है उसकी नीयतपर आक्षेप करना किसी प्रकार भला नहीं कहा जा सकता। बहुधा यह देखनेमें आता है कि वह उतना ही सच्चा है जितने हम। उसने हमसे अधिक समयतक और हमसे अच्छी सेवा की है और दूसरोंसे मेल मिलाप रखनेकी फिक्रमें उसने भिन्नता का ढङ्ग स्वीकार किया है। हम उसके ढंगको पसन्द नहीं कर सकते किन्तु उसपर बुरी नीयतका दोष लगाना सरासर अन्याय है और इसका परिणाम सदा ही भयकर होता है।

कर्मशून्यताको दूर करनेके लिये कई बार हम आपसमें ही लड़ बैठते हैं। हमें ऐसा न करना चाहिये और सबके समान-शत्रुसे ही मतलब रखना चाहिये। हमें ध्यान रखना चाहिये कि यह बड़े पराक्रमका काम है, इसमें स्थिति स्वयं धीरे धीरे अधिकाधिक निश्चित होती जाती है और ऐसा मालूम होता है कि हमें अपनी सारी शक्ति इसके पीछे लगा देनी होगी। मान लीजिये कि एक इञ्जिनियर एक बड़ी इमारत तैयार कर रहा है। वह किसी जगह कुछ असावधान रहा या किसी कठिनतासे नजर बचा गया,

उसकी इस भूलसे सारी इमारत भद्दी हो जायगी और हो
है कि सारी इमारत गिर जाय। इसलिये हमें निधड
सिद्धान्तपर डटे रहना चाहिये। जब उक्त सब बातें वि
एक अविरोधी पूर्ण सिद्धान्तमें परिणत हो जाती हैं तो देश
ज्योति फैल जाती है और पुराना तेज फिर स्पष्ट हो जाता है
मनुष्योंकी सोचना खुल जाती है, डरपोक लोगोंमें इच्छ
की वीरता आ जाती है और निडर लोगोंका पक्ष सिद्ध हो
है। मातृभूमि जाग उठती है, उसमें सिद्धान्तके लिये ल
जोश आ जाता है और वह विजयकी ओर प्रयाण करती है

(६)

सिद्धान्तभक्तिका निस्सन्देह यही सुन्दर अर्थ है। हमें यह
पताकाओंमें लिख लेना चाहिये और सारे संसारमें इसकी घो
कर देनी चाहिये। यह अर्थ दुविधाहीन, गौरवपूर्ण, भय
और अपरिवर्त्तनीय है। इस परिच्छेदमें उत्साह, यथा
और सावधानीके साथ जो कुछ लिखा गया है उसके संशो
और परिवर्धनकी कभी आवश्यकता न पड़ेगी, भले ही
कालके लिये भाग्यके पलटनेसे हम अपराधी समझे जायं।
स्वतन्त्रताके संग्राममें शुद्ध हो जानेके बाद हम अन्तिम यु
संसारको चौंधिया देनेवाली विजयको प्राप्त करके बाहर निक
तो हमारी यह दृढभक्ति फिर भी बनी रहेगी। यह मध्या
सूर्यके समान चमकती है। इसमें वही रम्यता और स्थि

रहती है जिससे हमारे संग्रामके पद पदपर प्रकाश पड़ता गया था। पूर्ण विजय प्राप्त होनेके बाद भी सम्भव है कि यह दृढभक्ति राष्ट्रके विधिनियम बनानेके समय और राजाओं, राष्ट्रपतियों तथा राजनीतिज्ञोंके चक्करमें पड़े हुए इस संसारमें राष्ट्रोंका नया संगठन करनेमें हमें पथ दिखायगी। इसपर एक चञ्चलचित्त मनुष्य जिसके हृदयमें कुछ तो नयी ज्योति पड़ी हुई है और कुछ पुराना डर बना हुआ है कहता है "आप बड़ी भारी आशा किये हुए हैं। हम मनुष्य हैं देवता नहीं।" यह बिल्कुल ठीक है कि हम देवता नहीं हैं। चूंकि हममें मनुष्यस्वभाव सुलभ त्रुटियां हैं, हमारा मन भ्रान्त है, हमारा चित्तका वेग सहसा उबल पड़ता है, इसलिये हममेंसे सबसे अधिक आत्मविश्वासी पुरुष भी अपनेको किसी समय दुर्बलतासे सना हुआ पाता है। जब वह आचार तथा विचारमें डावांडोल दिखायी पड़ता है तो उसे कौन ठीक रख सकता है। वह असहाय, अपमानित तथा भ्रष्ट हो जाता है। ऐसे पुरुषको समझ लेना चाहिये कि हम इस घमंडसे एक उत्तम सिद्धान्त अपने सामने नहीं रख रहे हैं कि हम सुगमता से उसका पालन कर सकेंगे, किन्तु भली भांति यह समझकर कि हमारे लिये इस सिद्धान्तसे दूर रहना सम्भव नहीं। अटल सत्य यही है। जब संसारमें दृढ़विश्वासी पुरुष पैदा होता है तो जन्मसे ही उसे हृदयबलका इतना सहारा है कि यह बल उसे कभी धोखा नहीं देता। उसका सिद्धान्त उसे पथ दिखलाता है और नये युद्धमें कूदनेके लिये तथा नयी दुनियाओंको जीतनेके

अष्टम परिच्छेद



नारी-धर्म

(१)

भविष्यमें जो महान् युद्ध होगा उसका पहला मोरचा आज मार लेना है। यह बात स्त्रियोंको भी समझ लेनी चाहिये। संसारमें इतनी नीचता है कि कभी कभी मनुष्यको ऐसा सिद्धान्त पकड़ना पड़ता है, जो ऊंचा नहीं है और कभी अपनी मनुष्यताका परिचय देनेके लिये लड़ना पड़ता है। ऐसे अवसरोंपर स्त्रीको उसका साथ देना चाहिये, नहीं तो वह उसे गिरा देगी। स्त्रीके यह बात समझनेपर उसका कर्त्तव्य महत्वपूर्ण बन जाता है और उसके सामने आ खड़ा होता है। मनुष्य बहुधा सन्मार्गके संकीर्ण किनारेपर आकर विचलित हो जाता है, उस समय स्त्री ही उसे निश्चयपर लाती है। यदि वह पतिसे शुद्धचरित्र है तो वह उसे अपने गुणोंसे अलंकृत करेगी और यदि वह उससे नीच होगी तो पतिको और नीचे गिरा देगी। जब दोनोंकी आत्माएं एक सी होती हैं और दोनों उच्च प्रकृतिके होते हैं तो संसारमें उनका ऐसा तेज छा जाता है कि हमें परमात्माके अस्तित्वपर पूरा विश्वास हो जाता है। इससे हमें यह भी—यदि

लिये उसकी शक्ति इतनी अधिक बढा देता है कि जगद्विजयी सिकन्दरकी बुद्धिमें भी इस शक्तिका ध्यान न आया होगा। किसी मनुष्यको उसके हृदयका विश्वास और उसका सिद्धान्त योग्य बनाते हैं। यदि नीचसे नीच पुरुष भी सच्चा है और अच्छी सेवा कर रहा है तो वह बडेसे बडे पुरुषके समान है। हमें निकम्मी बातें और क्षुद्र हृदय मनुष्योंकी कुटिल नीति छोड देनी चाहिये और अपनेको मुक्त करनेकी आशासे दिव्य पताका तथा मनुष्य व देवताओंकी दृढ सत्यभक्तिका अवलम्बन करना चाहिये।



अष्टम परिच्छेद



नारी-धर्म

(१)

भविष्यमें जो महान् युद्ध होगा उसका पहला मोरचा आज मार लेना है। यह बात स्त्रियोंको भी समझ लेनी चाहिये। संसारमें इतनी नीचता है कि कभी कभी मनुष्यको ऐसा सिद्धान्त पकड़ना पड़ता है जो ऊंचा नहीं है और कभी अपनी मनुष्यताका परिचय देनेके लिये लड़ना पड़ता है। ऐसे अवसरोंपर स्त्रीको उसका साथ देना चाहिये, नहीं तो वह उसे गिरा देगी। स्त्रीके यह बात समझनेपर उसका कर्त्तव्य महत्त्वपूर्ण बन जाता है और उसके सामने आ खड़ा होता है। मनुष्य बहुधा सन्मार्गके संकीर्ण किनारेपर आकर विचलित हो जाता है, उस समय स्त्री ही उसे निश्चयपर लाती है। यदि वह पतिसे शुद्धचरित्र है तो वह उसे अपने गुणोंमें अलंकृत करेगी और यदि वह उससे नीच होगी तो पतिको और नीचे गिरा देगी। जब दोनोंकी आत्माएं एक सी होती हैं, और, दोनों उच्च प्रकृतिके होते हैं तो संसारमें उनका प्रेमा, तेज छा जाता है कि हमें परमात्माके अस्तित्वपर पूरा विश्वास हो जाता है। इससे हमें यह भी—यदि

आजतक न हुआ हो तो—विश्वास हो जाता है कि उनका आश्चर्यमय जीवन अनादि कालसे अनन्त कालतक मंगलमय और सुन्दर है, इससे हमें पता लगता है कि पति और पत्नीके आश्चर्यपूर्ण सम्बन्धकी उत्पत्ति और भविष्य क्या है। एकका रहना दूसरेके लिये अत्यन्त आवश्यक है। यदि एक दूसरेसे अलग रहता है, यदि वे मेलके साथ नहीं रहते तो एक भी जीवनकी रमणीकता और उसकी ज्योतिकी पूर्णताका अनुभव नहीं कर सकता। प्रत्येक पुरुष और स्त्रीको यह बात भली भांति देख लेनी चाहिये, उन्हें यह भी जान लेना चाहिये कि न मालूम किस समय, सत्यताके बलपर नहीं किन्तु अपने कर्मचारियोंके बलपर शासन करनेवाला कोई छोटा मोटा अधिकारी उनमेंसे किसीको भी ललकार दे। हमारे ऊपर ऐसे ही शासकोंका राज्य है। हमारे कई भाई भोग विलासमें दिन व्यतीत करते हैं और शासकोंकी हां में हां मिलाते हैं। ऐसे आदमी मनुष्य बन कर उस हालतमें नहीं रह सकते, वे तो बेकार रहकर मजा उड़ाना चाहते हैं। ऐसे मनुष्योंके लिये बरनार्ड शाने क्या ही ठीक कहा है कि "उनकी आत्मा गुलाम है।" यदि हमें वीरतापूर्ण भविष्यके लिये तैयारी करनी है तो इस बुराईसे लड़ना पड़ेगा। यदि हम राष्ट्रकी दासताको भगाना चाहते हैं तो पहिले प्रत्येक व्यक्तिकी खुशामदखोरोकी आदत छुड़ानी होगी। भावी—युद्धके लिये यही हमारा शिक्षाक्षेत्र है। हमारी ललनाओंको भी यह बात हृदयमें रख लेनी चाहिये। [illegible]ाओंको यह बात

हृदय गम कर लेनी चाहिये जो आनन्दपूर्ण घृणित जीवनकी अपेक्षा आत्म-सम्मानके साथ भूखों मरना पसन्द करती हैं। इसलिये हम सब कार्यकर्ताओंको राष्ट्रीय भावोंसे पूर्ण समझकर निवेदन करेंगे कि यदि तुम्हारे हाथमें स्त्रीशिक्षाका कार्य है तो उन्हें बताओ कि दासभावसे भरी हुई आत्मावाले मनुष्यका तिरस्कार करें और उस ऐश्वर्यसे हार्दिक घृणा करें जो ऐसी आत्माका मूल्य है।

(२)

मैं अपनी वीर स्त्रियोंके विषयमें कुछ लिखना चाहता हू। जब हम किसी महान् कार्यके लिये अपनेको या दूसरोंको उत्साहित करना चाहते हैं तो उन वीर स्त्रियों और पुरुषोंका उदाहरण देते हैं जिन्होंने इसी तरहकी कठिनाइयां झेली हैं, जो शूरताके साथ युद्धमें कूदे हैं और छाती दिखाते हुए लड़ाईके मैदानसे बाहर हो गये हैं। इन सूरमाओंने ही हमारे लिये जीवन धन्य करनेवाली बपौती छोड़ी है। यह हमारे लिये कम लज्जाका विषय नहीं है कि हम अपने वीर पुरुषोंका इतिहास कम जानते हैं इससे भी अधिक लज्जाका विषय यह है कि हम अपनी वीर स्त्रियोंके विषयमें कुछ भी नहीं जानते। और जब कभी हम किसीकी महिमा कीर्त्तन करते हैं तो हमारा चुनाव ठीक नहीं होता। ××× हमारे जीवनपर कविताने प्रभाव डाल रखा है। देशभक्तिके हितमें यह प्रभाव ठीक नहीं है। हम किसी प्रेयसीको सर्वनाशकी

कथा सुनकर दयासे पिघल जाते हैं। हममें अपने लिये और सबके लिये सहानुभूति उमड़ पड़ती है। भावकी लहरोंमें बहकर हम अपनी नसे ढीली कर देते हैं। यह करुणा हमें दुर्बल कर देनेवाली है। इससे मालूम होता है कि उनके अन्दर खौलती हुई गरमाहट नहीं है, जीवनपर हमारा पूर्ण अधिकार नहीं है और हममें दृढ़ निश्चय नहीं है कि झण्डेको पकड़कर एक स्थानपर डटे रहे और युद्धको समाप्त करें। अब समय आ गया है कि जिस पीढ़ीने सारा क्यूरानकी कीर्तिके गीत सर्वत्र सुने हैं वह अब उससे भी अधिक वीर तथा सुन्दर आदर्शवाली टोनकी धर्मपत्नीका गुणगान करे।

(३)

जब हम स्त्रियोंके विशेषता-प्रदर्शक गुणोंपर विचार करते हैं तो सौजन्य, कोमलता, सहानुभूति तथा करुणाके भाव ध्यानमें आते हैं। और जब किसी स्त्रीमें यह गुण अपना गाढ़ा रङ्ग जमाते हैं और उनके साथ सहनशीलता, साहस एव वीरताके मनुष्योचित गुण रहते हैं, तो ऐसी स्त्री वीर समझी जाती है। आयरिश नेता टोनकी पत्नी ऐसी ही थी। हम उसकी प्रशंसा निर्भय होकर कर सकते हैं। उसकी हर तरहसे परख हो चुकी और वह हर तरहसे बिल्कुल सत्य उतरी। अपने पतिकी भक्ति कर और उसे देशके कार्यमें उत्साह प्रदानकर उसने जो काम किया उसकी महान् प्रशंसा की जानी चाहिये। यद्यपि

उसका पति मारा गया और वह पतिके प्रेम और उसके उत्साह-पूर्ण जीवनसे वंचित रखी गयी, तिसपर भी उसकी सत्यताने लोगोंको आश्चर्यमें डाल दिया।

प्रश्न उठ सकता है कि टोनकी जीवित अवस्थामें उसकी स्त्रीका पतिके प्रति प्रगाढ़ प्रेम था इसीलिये वह पतिमग्ना रही। किन्तु नहीं, उसके इस प्रारम्भिक जीवनमें दयाभाव प्रधान था, लेकिन बादको जब उसके ऊपर दु:ख पड़ा उसने ऐसे धैर्यका परिचय दिया कि उसकी वास्तविक महत्ता चमकने लगी। जिस प्रेममें वे दोनों बंधे हुए थे वह साधारण नहीं था। इन दोनोंकी जीवनी पढ़नेसे स्पष्ट और सुन्दर मालूम पड़ती है। टोन वीर, संगठनकर्ता, जबरदस्त लड़ाका, दूरदर्शी, सोचनेवाला, अदम्य उत्साही और जन्मस्नेही नेता था। प्रेममें मग्न बच्चेकी तरह वह प्रेमभरी सादगीसे अपनी स्त्रीको लिखता है "मुझे सदा तुम्हारा और बच्चोंकाही ध्यान रहता है।" इस पत्रका अन्त यों है "मेरी ओरसे बच्चोंका मुंह बार बार चूम लेना। ऐ जीवनधन और प्राणप्रिये! भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।" यह आश्चर्यकी बात नहीं है। जब अपने कार्यके आरम्भमें टोन अमेरिकासे प्रचार-कार्यके लिये फ्रांस जानेकी तैयारी कर रहा था, तो उस समय भी उसे अपने असहाय बाल बच्चोंकी याद आनेसे कष्ट हो रहा था। उसे ख्याल आता था कि इस संकटमें मेरी स्त्री क्या करेगी। कभी वह भेंट होनेपर मुझे छातीसे लगाकर रोवेगी और रोते हुए बाल बच्चोंकी हालत सुनायगी और मेरी प्रतिज्ञाकी बात छेड़ेगी

तथा मुझे प्रेमकी याद दिलाकर गिड़गिड़ायगी कि अब देशका काम भूल जाओ ? सुनिये, इस सकटके समयमें अपनी स्त्रीकी धीरताके विषयमें टोन क्या लिखते हैं—"मेरी प्रतिष्ठा और हितके लिये मेरी स्त्रीका साहस और उत्साह नाममात्रको भी नहीं घटा था। उसने मुझसे निवेदन किया 'आप अपनी प्रतिज्ञा पर डटे रहिये और देशके प्रति अपने धर्मको निभाइये। आपकी अनुपस्थितिमें घरका काम काज मैं सभालूंगी। देशके कामके समय बाल बच्चोंकी तथा मेरी तनिक भी चिन्ता न कीजिये। वह परमात्मा जिसने समय असमय आश्चर्यजनक रीतिसे हमारी रक्षा की है इस दुःखमें हमें न छोड़ेगा।' सच्ची स्त्रीकी यह अचूक वाणी है। जिस समय वह टोनको विदा करती है उसका शरीर कांपता है किन्तु आंखोंसे वह ज्योति निकलती है कि जिसके सामने मनुष्य भी लज्जित हो जाय। वह ज्योति उसके अद्वितीय पति टोनमें ही देखी गयी, किन्तु और कोई मनुष्य उसे पा नहीं सका। इस स्त्रीकी अटल धीरताकी अग्निपरीक्षा भीषण भविष्यमें ली गयी जब देशका काम नष्ट भ्रष्ट हो गया और टोनको अपने प्राण अर्पण करके प्रायश्चित्त करना पड़ा। जब उसका अन्तिम समय आया और उसके भाग्यका निर्णय हो चुका था उसने अपनी स्त्रीको पत्र लिखा। उसकी वीरताका इससे ओजस्वी प्रमाणपत्र और कोई नहीं हो सकता। टोनने लिखा "ऐ प्राण प्यारी! अब विदा दो। मेरे लिये यह पत्र

समाप्त करना असम्भव हो गया है। मेरी [Mari] को मेरा प्रेम जताना और सबसे अधिक यह बात स्मरण रखना कि बाल बच्चोंकी मा बाप अब तुम्हीं हो। मेरे प्रति अपने प्रेमका पक्का प्रमाण तुम इन बाल बच्चोंकी शिक्षाके लिये अपनी रक्षा करके ही दे सकती हो। शक्तिमान ईश्वर तुम सबका भला करे।" क्या ही सुन्दर पत्र है! जो बात लिखी हुई है उससे अधिक जोर उस बातपर है जो नहीं कही गयी है। स्त्रीके लिये रोना नहीं, अपना नाममात्र दुःख नहीं। इस पत्रमें एक स्थलपर लिखा है—"तुम्हारे और बच्चोंके लिये हृदयमें जो भाव उठ रहे हैं शब्द उन्हें प्रकट नहीं कर सकते। इसलिये यह चेष्टा न करूंगा। किसी प्रकारके दुखड़ेका रोना तुम्हारी और मेरी वीरतामें बट्टा लगाता है।" इसीलिये तो टोनकी स्त्रीने अपने कष्टमय जीवनमें इस दारुण परीक्षाका शान्त चित्तसे सामना किया। टोनका अपनी स्त्रीके प्रति पूर्ण विश्वास बतलाता है कि यह वीर स्त्री पतिकी आज्ञाओंका किस प्रकार पूरा पूरा पालन करती थी। श्रीमती टोनका बादका जीवन पग पगपर साक्षी देता है कि उसने पतिकी अमानतमें खयानत नहीं की। टोनके लड़केने जो पिताके मरने समय निरा बच्चा था अपनी जवानीमें उसने अपनी स्मृतियां लिखीं। एक स्थानपर वह अपनी माताकी सीधी सादी प्रशंसा करता है। देखिये, इस सादगीमें कैसा ओज भरा हुआ है "मेरी बची हुई माने मेरा पालन पोषण पिताके सब भावों और सिद्धान्तोंके अनुसार किया।" माकी प्रशंसामें

यह शब्द यथेष्ट हैं। आगे सुनिये। उसने सन्तानकी सेवामें अपनेको मिटा दिया और गर्वके साथ अपनी तथा अपनी सन्ततिकी स्वतन्त्रताका पूरा ध्यान रखा। वह फ्रांसके एक सेनापतिकी स्त्री थी। उसने सहायता स्वीकार नहीं की। फ्रांसके सपूतोंने उसको सम्मान किया।

टोनकी मृत्युके सालभर बाद लूशया बोनापार्टने फ्रांसकी राष्ट्रीय सभामें उसकी प्रशंसा करते हुए ओजस्वी भाषण दिया था कि "यदि टोनकी सेवा आपके भावोंको उत्तेजित करनेके लिये यथेष्ट नहीं है, तो मैं उस उच्च विचारवाली स्त्रीके स्वतन्त्र विचार तथा दृढ़ताका उल्लेख करूंगा जो अपने पति तथा अपने भाईकी कब्रपर आयर्लैण्डकी मुक्तिकी लालसा अपने आंसुओंके साथ बहा रही है। मैं चाहता हूं कि उसके चेहरेपर दुःखके भावोंके साथ २ आयरिश तेज किस प्रकार सना हुआ है यह मैं आपको बतला सकता। वह स्पार्टा (प्राचीन यूनानका एक प्रान्त) की उन रमणियोंकी याद दिलाती है जो अपने देश-भाइयोंके युद्धक्षेत्रसे लौटनेपर उत्सुकताभरी दृष्टिसे सेनाको देखनेके लिये दौड़ पड़ती थीं और जब देखती थीं कि उनके पति, पुत्र और भाई लापता हैं तो आनन्दसे कहती थीं 'उसने अपने देशके लिये प्राण दिये हैं, वह प्रजातन्त्रके लिये मरा है'। "जब फ्रांसमें प्रजातन्त्रका पतन हुआ, नेपोलियन सम्राट् बना और इस हलचलमें उसके स्वत्वोंपर ध्यान न दिया गया, तो वह स्वयं अपने पुत्रको लेकर नेपोलियनके पास गयी और टोनकी सेवाओंका स्मरण

दिलाते हुए उससे प्रार्थना की कि वह उसे पलटनमें भर्ती कर ले। सबको देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नेपोलियनने उसकी बात बड़े आदरसे सुनी और तत्काल उसे स्वीकार कर लिया। उसने यह प्रार्थना अपने एकमात्र बचे हुए पुत्रके लिये की थी। उसके दो बच्चे पहले ही मर चुके थे। लड़कीकी मृत्युका दृश्य बड़ा हृदयविदारक था। अब वह एक लड़केको लेकर खड़ी थी। किसी बच्चेका संरक्षण इतने अधिक अनुरागसे न किया गया होगा और न किसीको गर्वके साथ जीवन आरम्भ करनेका ऐसा पथ सुझाया गया होगा। इस तत्त्वको भली भांति समझनेके लिये इस बालकके स्मृतिपत्र पढ़ने चाहियें और स्थान स्थानमें इस बातपर विचार करना चाहिये कि इस रमणीने अपने पतिको कैसी वीरताके साथ वचन दिया था कि वह अपने बच्चोंका उत्तरदायित्व ग्रहण करती है और अपने घोर कष्टके दिनोंमें उसे अपने वचनोंका किस प्रकार अक्षरशः पालन करना पड़ा। वह सत्यपर दृढ़ रही। उसकी शक्ति और भक्तिकी उपमा नहीं मिलती। उसके दो बच्चे रोगसे कालके ग्रास बन गये थे और बचे हुए लड़केको उसने किस प्रकार रात दिनकी हिफाजतसे यमके घरसे लौटाया था। इस लड़केको उसने किस प्रकार शिक्षा दिलायी और किस प्रेमपूर्ण गर्वके साथ उसे सैनिक कार्यमें नियोजित किया।

एक बार किसी नीचहृदय पुरुषने इशारेसे कहा कि तुम रुपया मांगनेको हमारे पास आयी हो। उस समय उसके हृदयसे वीरो

चक्कर काटने लगी। ओह! वह हवामें कैसा सुन्दर और प्रफुल्लित करनेवाला गान गा रही थी। उसकी ध्वनिने मुझे शान्ति दी और बेहोशीसे जगाया। मेरे हृदयने आवाज दी, यह टोननेने तेरे पास भेजी है। मैं अपने निर्जन घरको वापस चली आयी।" यह दृश्य है जो हमारे दिलको मोम बना देता है। कैसी पतिव्रता स्त्री थी। धूपमें बिल्कुल अकेली सर झुकाये घासपर बैठी हुई है, लवाका गान सुनकर समझती है कि पतिने मीठा आश्वासन देनेके लिये इसे भेजा है। ऐसी स्त्रीको देखकर हममें कमजोरी पैदा करनेवाले भाव उत्पन्न नहीं होते। हमें मातृभूमि और उसके निवासियोंपर गर्व होता है, हमारे विचार दृढ़ और निश्चित बन जाते हैं, हमारा हृदय कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण होनेकी पुकार मचाता है, हम रोते गिड़गिड़ाते नहीं हैं किन्तु देशका हित करनेके लिये हमारा खून खौलने लगता है।

(४)

नारी धर्मका यह वीरतापूर्ण उदाहरण हमारी स्त्रियोंहीके नहीं किन्तु हमारे पुरुषोंके सामने भी रखा जाना चाहिये। पाठकोंको इससे मालूम होगा कि देशभक्ति हृदयके कोमल भावोंका नाश नहीं करती बल्कि उल्टा उन्हें जगाती है और विस्तृत करती है। हमको ऐसा विचारनेका अभ्यास पड़ गया है कि सिपाहीमें प्रेम और करुणाका भाव नहीं रहता। हम समझते हैं कि यह गुण उसकी दृढ़ता नष्ट कर देंगे और उस-

चित अभिमानसे यह शब्द निकले कि मैंने इतने संकट झेले किन्तु दूसरेके आगे हाथ फैलाना कभी नहीं सीखा। अपने सब कष्टोंमें वह तेजस्वी, साहसी, शिष्टाचारी और अपने कर्तव्यके प्रति सदा सजग रहती थी। समय पड़नेपर वह कभी अपने कर्तव्यसे च्युत न हुई। उसने अपना धर्म पूरा पूरा निबाहा। वर्षों बाद फिर जब वह अपने लड़केको सेनामें भर्ती करनेको भेजती है, तो उसी प्रकार कांप कांपकर उसे बिदा करती है जिस प्रकार कुछ साल पहिले उसने अपने पतिको आश्वासन देकर देशके प्रति धर्म निबाहने भेजा था। आज वह अपने इकलौते बेटेसे अलग हो रही है। उसका हृदय उसीके शब्दोंमें ही देख लीजिये—"आजतक मैंने अपनेको यह सोचनेका अवसर भी नहीं दिया था कि मेरा विलियम मेरा है, मेरा इकलौता बेटा है। मैं यही सोचती रही कि टोनका लड़का मुझे सौंपा गया है, किन्तु बिदाईके समय प्रकृतिने अपना जोर दिखाया। मैं एक खेतमें बैठ गयी। मेरे सामने सफेद और लम्बी सड़क थी। मैं सड़क भर बेटे ही बेटेको देखती थी। मेरी विचारशक्ति लुप्त हो गयी। उस समय ऐसा मालूम पड़ता था कि जीवन भरकी सब यन्त्रणाएं एक साथ मेरे ऊपर आ टूटी हैं और मुझे घेरे खड़ी हैं। मुझे उस वक्त एक जबरदस्त चाह हुई और वह चाह सदाके लिये आंखें बन्द कर देनेकी थी। मैं उसी हालतमें रही; मुझे यह नहीं सूझ रहा था कि घरको भी लौटना है। इतनेमें एक छोटी लवा मेरे पासकी झाड़ीसे उड़ी और मेरे सरके ऊपर

ऐसे निष्कपट हृदय मनुष्य भी वर्त्तमान हैं जो स्वयं अपनी देहमें सब कष्ट सहनेको तैयार हैं, किन्तु वे अपने कुटुम्बियोंका कष्ट नहीं देख सकते। इनको परिवारका स्नेह जकड़ लेता है और पतनकी ओर घसीट ले जाता है। ऐसा कभी न होना चाहिये। यदि कर्तव्यको पालनेसे पुत्र और कलत्रपर आपत्ति आनेका अन्देशा हो और इसीलिये उसे ताकपर रख देना पड़े तो स्त्री, धर्मपत्नी नहीं, भार बन जाती है और सन्तान पतित जीव बन जाती है जो त्रिशंकुकी तरह अधर लटका हुआ है, जो सर ऊंचा नहीं उठा सकता और भगवान तथा मनुष्यके प्रति अपना कर्तव्य निबाहनेके अयोग्य है।

मनुष्यका घबराना न चाहिये कि उसके प्रेमियोंकी अग्नि-परीक्षा हो रही है। उसे शक्तिभर ऐसा बननेकी चेष्टा करनी चाहिये कि वे जांचमें पक्के उतर आयें। इसके बाद सत्यकी महिमा और सत्याग्रही स्वभावकी सत्यताके भरोसेपर अपने प्रेमियोंकी विजय छोड़ देना चाहिये। परिणाममें ऐसे पुरुष तथा ऐसे प्रेमियोंको वह पुरस्कार मिलता है जिसका उन्हें स्वप्नमें भी ध्यान न था।

सुनिये, जिस युद्धमें इतनी परीक्षा ली जा रही है वह उनके जीवनमें उन नये और स्वच्छ भावोंको लायगा जिनका समाजके उसे आजतक पता न चला था। इससे उन्हें अधिक परन्तु ज्ञानुभव, विनय और शक्ति प्राप्त होगी। नये पर्दे खुलेंगे और समाजके प्रति हृदय

का काम चौपट कर देंगे। किन्तु हमें ध्यान रहना चाहिये कि मनुष्योचित गुणोंका अभाव हमारे सब कार्य निरर्थक कर देता है। जबतक हम सयाने नहीं होते और हमारी नसोंमें कविताका रस नहीं रहता, तबतक तो हम किसी भी सिद्धान्तके अनुसार काम करनेको तैयार रहते हैं, किन्तु जब प्रकृति हमारे ऊपर अपना राज्य जमाती है तो कट्टर सिद्धान्तवादी किसीको अपने वशमें रख नहीं सकता। हमें यह बात याद रखनी चाहिये और मनुष्य बनना चाहिये। हम शब्दोंमें नहीं तो 'कार्यत' कह रहे हैं—"आयर्लैंडके लिये कृपया घर गृहस्थीके झञ्झालमें मत पड़िये।" इस दृष्टिसे तो हम यह भी कह सकते हैं "आयर्लैंडके लिये कृपया अपनी रगोंमें रक्तका प्रवाह रोक लीजिये।" ऐसा होना असम्भव है। यदि सम्भव भी होता तो यह घृणित बात होती। स्त्री और पुरुषको कन्धेसे कन्धा मिलाकर अपने जीवनमें महत्वपूर्ण और स्वच्छ धर्मका पालन करना होता है। इस धर्मके स्थानपर ऐसा प्रकृतिविरुद्ध जीवन व्यतीत करना जिसमें न तो तपोवनके एकान्त वासका ही आनन्द मिले और न संसारमें ही हम कुछ कर सकें विकट और बुरा है।

हमारा सौभाग्य है कि टोनकी स्त्री आयर्लैंडमें पैदा हुई। इस उदाहरणसे कोई भी स्त्री सीख सकती है कि बहादुरसे बहादुर आदमीकी टक्करका कैसे बना जाता है। मनुष्यको इस दृष्टान्तसे सबक लेना चाहिये कि स्त्री और पुत्र भले ही कष्ट पावें किन्तु उन्हें गुलाम और कायर बनाना पाप है। संसारमें

ऐसे निष्कपट हृदय मनुष्य भी वर्तमान हैं जो स्वयं अपनी देहमें सब कष्ट सहनेको तैयार हैं, किन्तु वे अपने कुटुम्बियोंका कष्ट नहीं देख सकते। इनको परिवारका स्नेह जकड़ लेता है और पतनकी ओर घसीट ले जाता है। ऐसा कभी न होना चाहिये। यदि कर्तव्यको पालनेसे पुत्र और कलत्रपर आपत्ति आनेका अन्देशा हो और इसीलिये उसे ताकपर रख देना पड़े तो स्त्री, धर्मपत्नी नहीं, भार बन जाती है और सन्तान पतित जीव बन जाती है जो त्रिशंकुकी तरह अधर लटका हुआ है, जो सर ऊंचा नहीं उठा सकता और भगवान तथा मनुष्यके प्रति अपना कर्तव्य निबाहनेके अयोग्य है।

मनुष्यको घबराना न चाहिये कि उनके प्रेमियोंकी अग्नि परीक्षा हो रही है। उसे शक्तिभर ऐसा बननेकी चेष्टा करनी चाहिये कि वे आवमें पके उतर आयें। इसके बाद सत्यकी महिमा और सत्याग्रही स्वभावकी सत्यताके भरोसेपर अपने प्रेमियोंकी विजय छोड़ देनी चाहिये। परिणाममें ऐसे पुरुष तथा ऐसे प्रेमियोंको वह पुरस्कार मिलता है जिसका उन्हें स्वप्नमें भी ध्यान न था।

सुनिये, जिस युद्धमें इतनी परीक्षा ली जा रही है वह उनके जीवनमें उन नये और स्वच्छ भावोंको लायगा जिनका समाजके समागममें उसे आजतक पता न चला था। इससे उन्हें अधिक सहानुभूति, परदुःखानुभव, विनय और शक्ति प्राप्त होगी। इस परीक्षासे जीवनके नये पर्दे खुलेंगे और समाजके प्रति हृदय

देना कितना भयकर है। साम्राज्यको हम जितना जानते हैं और उसके साथ सम्बन्ध रखनेसे हमें जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उससे हम कह सकते हैं कि साम्राज्य बुरी चीज है और हमें स्वयं ही इससे मुक्त होना और आगेको इसके जालमें फसनेसे बचना नहीं चाहिये, बल्कि ससारके हर किसी ऐसे राष्ट्रका उत्साह और आशा बढानी चाहिये जो साम्राज्यके विरुद्ध लड रहा हो।

(२)

माकियावेली एक स्पष्ट लेखक हुआ है। उसने साम्राज्य-वादपर एक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तककी पडताल करनेसे साम्राज्यवादकी माया कट जायगी। हा, आखें होते हुए जो न देखना चाहे उसे कोई नहीं दिखला सकता। साम्राज्यके कई पक्षपाती माकियावेलीकी दुष्टतापूर्ण बातोंको पढकर एकदम घबरासे जाते हैं। इस घबराहटसे हमें भ्रममें न पडना चाहिये। जिन लोगोंने माकियावेलीको "राजकुमार" नामक पुस्तक नहीं पढी है वे निम्नलिखित अवतरणोंको ध्यानसे पढें और देखें कि ये बातें आयर्लैंडमें अग्रेजोंके शासनपर किस प्रकार घट जाती हैं। इन बातोंको पढ़कर समझें कि साम्राज्य स्वय ही बुरा है, हर तरहसे दुष्टतापूर्ण है, इसका पग २ पर विरोध किया जाना चाहिये, इससे निरन्तर युद्ध जारी रहना चाहिये और उत्साहके साथ तथा बिना ढीले हवालेके उसका त्याग करना चाहिये। हमसे शैतान, उसकी शान और उसके कामोंसे दूर रहनेके लिये

बचपनसे ही कहा जाता है। वही बात इनके लिये भी लागू है। पहले विदेशी शासकके आक्रमणकी बात सोचिये। माकियावेली कहता है—"आक्रमणकी साधारण रीति यह है। ज्योंही विदेशी राजा किसी प्रदेशपर आक्रमण करता है तो वहांके दुर्बल और कृतघ्न निवासी उसके साथ मिल जाते हैं। कारण यह है कि उनमें अपने वर्तमान प्रभुओंके प्रति ईर्ष्या और द्वेषका भाव रहता है। ऐसे छोटे छोटे रजवाड़ोंको अपनी ओर करनेके लिये कोई कष्ट उठा न रखना चाहिये। वशमें आते ही ये लोग तुरत मिलकर आक्रमणकारीके साथ एक हो जाते हैं। विजयी राजाको विशेष ध्यान इस बातका रखना चाहिये कि यह कभी शक्तिशाली न बन जाय। इनके हाथमें विशेष सत्ता भी न दी जानी चाहिये। ऐसा करनेसे विजयी राजा बड़ी आसानीके साथ अपने सैन्यबल और अपनी ओर किये हुए इन राजाओं और रजवाड़ोंकी सहायतासे अपने पड़ोसियों की शक्ति कम कर सकता है और विजय किये हुए प्रदेशमें एकछत्र राज्य चला सकता है।" यह देशको फोड़कर उसपर शासन करनेकी पुरानी नीति है।

किसी देशमें अपना प्रवेश करनेके लिये कोई बहाना चाहिये। माकियावेलीने एक राजाकी प्रशंसा की है जो सदा धर्मका बहाना निकाला करता था। किसी देशपर अधिकार हो चुकनेपर उग्र नीतिसे काम लिया जाना चाहिये। माकियावेली कहता है—"जो पशुबलका प्रयोग करके किसी राष्ट्रका शासन अपने

हाथमें ले लेता है उसे वे सब निष्ठुरतायें कामर्मे लानी चाहियें जो तुरत फलदायी हों।" यह लेखक आगे चलकर लिखता है— "यदि राजा क्रूरताकी सहायतासे प्रजाको वशमें रखता है तो उसे बदनामीकी परवा न करनी चाहिये, क्योंकि जो राजा एक स्वाधीन देशको जीतता है और उसे नष्ट भ्रष्ट नहीं करता वह बड़ी भारी भूल करता है और उसे अपने नाशकी प्रतीक्षा करनी चाहिये। कारण यह है कि जब वहाके निवासी बगावत करनेको तैयार होते हैं तो वे सदा स्वाधीनता और अपने पूर्वपुरुषोंद्वारा बनाये हुए कानूनोंका नाम लेते हैं। इस विप्लवको अधिक समयका शासन या सभ्य व्यवहार शान्त नहीं कर सकता।" यदि राजा देशको भली भांति न उजाड़ सके तो, उसे राय दी गयी है कि, वह चापलूसी और रियायतोंसे काम ले। "या तो प्रजाकी चापलूसी की जाय, उसपर रियायतोंकी बौछार की जाय, नहीं तो वह भली भांति तबाह कर दी जाय।" इस वाक्यपर हमें घूस और उपाधियों (टाइटलों)का स्मरण हो आता है। और सुनिये, "जो प्रदेश प्राचीन कालसे स्वाधीन रहा हो उसे अधीन रखनेका सबसे सहज तरीका यह है कि वहींके नागरिक नौकर रखे जायं।" यह वाक्य देखकर हमें बड़े बड़े ओहदोंपर भरनेवालों, दरबारों और राजभक्तोंके अभिनन्दनपत्रोंकी याद आती है। विजयको स्थायी बनानेके लिये लेखक बतलाता है—"जब एक राजा नयी रियासत जीतता है और उसे अपने राज्यमें मिला लेता है तो उसके लिये यह आवश्यक है कि प्रजाको निरस्त्र कर

दे। केवल उन्हें हथियार रखने दे जो विजयके समय उसकी तरफ आगये थे। किन्तु धीरे धीरे उन्हें भी निकम्मा बना देना चाहिये और उनको आलस्य तथा क्लीवताकी उस हालतमें डाल देना चाहिये कि कुछ समय बाद उसकी सारी शक्ति अपनी फौज के भरोसे ही खड़ी रह सके।" यह बात हमें आर्मस एक्ट (हथियार न रखनेके कानून) और अपने निहत्थे लोगोंका स्मरण कराती है। किन्तु यह सम्मति देनेपर भी कि आधी प्रजा निरस्त्र कर दी जाय और आधी उपाधि, नौकरी आदिसे अपने वशमें कर ली जाय माकियावेली कहता है कि विजयी राजाको इन दोनोंमेंसे एकको भी अपना विश्वासपात्र नहीं बनाना चाहिये। उसके शब्द पढ़िये—"बुद्धिमान और नीतिज्ञ राजाको चाहिये कि वह अपना वचन पूरा करनेकी चिन्ता न करे जबकि ऐसा करनेसे उसका अहित होता हो और जिस कारणसे वचन दिया गया था वह दूर हो गया हो।" इस विषयमें कोई गलती न हो इसलिये उक्त लेखक अधिक स्पष्ट भाषामें लिखता है—"अपने भावोंको छिपाना और सफलतापूर्वक मनमें कुछ तथा बाहर कुछ दिखाना बड़े महत्वकी बात है।" इन वाक्योंसे तोड़ी हुई सन्धियां और असत्य विश्वासघात आखोंके सामने आ जाते हैं।

दुनियाकी नजरमें प्रतिष्ठित बना रहना अच्छा है किन्तु माकियावेली इस विषयपर भी राजाको सतर्क करता है—"सज्जन, दयालु, शिष्टाचारी, धार्मिक तथा निष्कपटसा बना रहना सम्मान प्राप्त करना है, किन्तु तुम्हारा मन इतना ठीक और अभ्यस्त रहना

हाथमें ले लेता है उसे वे सब निष्ठुरतायें 'काममें लानी चाहियें जो तुरत फलदायी हों।" यह लेखक आगे चलकर लिखता है—"यदि राजा क्रूरताकी सहायतासे प्रजाको वशमें रखता है तो उसे बदनामीकी परवा न करनी चाहिये, क्योंकि जो राजा एक स्वाधीन देशको जीतता है और उसे नष्ट भ्रष्ट नहीं करता वह बड़ी भारी भूल करता है और उसे अपने नाशकी प्रतीक्षा करनी चाहिये। कारण यह है कि जब वहांके निवासी बगावत करनेको तैयार होते हैं तो वे सदा स्वाधीनता और अपने पूर्वपुरुषोंद्वारा बनाये हुए कानूनोंका नाम लेते हैं। इस विप्लवको अधिक समयका शासन या सदय व्यवहार शान्त नहीं कर सकता।" यदि राजा देशको भली भांति न उजाड़ सके तो, उसे राय दी गयी है कि, वह चापलूसी और रियायतोंसे काम ले। "या तो प्रजाकी चापलूसी की जाय, उसपर रियायतोंकी बौछार की जाय, नहीं तो वह भली भांति तबाह कर दी जाय।" इस वाक्यपर हमें घूस और उपाधियों (टाइटलों)का स्मरण हो आता है। और सुनिये, "जो प्रदेश प्राचीन कालसे स्वाधीन रहा हो उसे अधीन रखनेका सबसे सहज तरीका यह है कि वहांके नागरिक नौकर रखे जाय।" यह वाक्य देखकर हमें बड़े बड़े ओहदोंपर मरनेवालों, दरबारों और राजभक्तोंके अभिनन्दनपत्रोंकी याद आती है। विजयको स्थायी बनानेके लिये, लेखक बतलाता है—"जब एक राजा नयी रियासत जीतता है और उसे अपने राज्यमें मिला लेता है तो उसके लिये यह आवश्यक है कि प्रजाको निरस्त्र कर

साम्राज्यवादियोंका यह वास्तविक चित्र है, इसलिये हमें साम्राज्यसे कोई वास्ता न रखना चाहिये। यह कहा जायगा कि अब आगे हमपर पुराने हथकण्डे काममें न लाये जाय गे। साम्राज्यवादियोंको हम बता देना चाहते हैं कि वे इस नयी मित्रतासे बल पाकर दूसरे देशोंपर यह चालबाजियां चलेंगे। यह भी हमारे नाम पर कलंक है। हम किसी देशको अपने अधीन नहीं रखना चाहते। हम उन्हें साम्राज्यका विरोध करनेके लिये उत्साहित करेंगे। यदि उसके लिये हमें भविष्यमें लड़ना पड़ेगा तो यह स्वय यथेष्ट प्रोत्साहन है।

हमारा दमन नीचताके साथ होनेसे दूना कड़ुवा बन गया है। जबरदस्तके अत्याचारसे हमारा रोष प्रचण्ड हो उठता है, किन्तु नीचका अत्याचार असह्य हो जाता है। क्रोमवेलका अत्याचार आसानीसे भूला जा सकता है किन्तु मेकालेकी पाखण्डपूर्ण बातें नहीं। जब हम मेकालेकी कुछ पंक्तियां पढ़ते हैं तो बदनमें आगसी लग जाती है। और यह आग तभी बुझेगी जब हम विरोधको बिल्कुल मिटा देंगे। मिल्टनपर लेख लिखता हुआ मेकाले इङ्गलैण्डकी राज्यक्रान्तिपर बड़ी २ बातें छांट गया है और उसकी विशेषता बतलाता है कि "साम्राज्यका एक भाग ऐसी दुखदायी स्थितिमें था कि उस समय हमें सुखी बनानेके लिये उसकी महान् यन्त्रणा आवश्यक थी और हमें अपनेको स्वाधीन बनानेके लिये उसे गुलाम बनाना आवश्यक था।" संसारमें शायद ही किसीने ऐसी बेशर्म बात कही हो।

चाहिये कि अवसर पड़नेपर उसके सोलहों आने विरुद्ध कार्य कर सको।" जो भद्रपुरुष इन बातोंको पढ़कर दुविधामें पड़ गया है वह ध्यानसे सुने—"यदि इन दोषोंके कारण उसका नाम बदनाम होता है तो उसे तनिक चिन्ता न करनी चाहिये क्योंकि ऐसा न करनेसे उसका राज्य सुरक्षित नहीं रह सकता।"

यहां तक हमने प्रसिद्ध राजनीतिक लेखक माकियावेलीके सिद्धान्त लिखे हैं। इन सिद्धान्तोंकी नीतिभ्रष्टता देखकर हमारे वे साम्राज्यवादी दंग रह जाते हैं जिन्होंने जंगली और अर्द्धसभ्य जातियोंको सभ्य बनानेका बीड़ा उठाया है। हम तो अब अपनी आंखें खोल रहे हैं और देख रहे हैं कि दोनों नीतिभ्रष्ट और दुरंगे हैं। हमें तो माकियावेलीकी पुस्तककी बातें ठीक ऐसी लगती हैं मानों किसी विवेचकने आयर्लैंडमें अंगरेजोंका शासन देखकर उसकी विशेषताओंका भली भांति निरीक्षण किया है और उनसे ये सिद्धान्त निकाले हैं। माकियावेलीने अपनी पुस्तकमें जो पोल खोली है उसके लिये हमें उसे धन्यवाद देना चाहिये। उसने राजाको जो सम्मति दी है वह उसके युगके डाकुओंकी कलई खोल देती है और हमें अपने समयके साम्राज्यकी बुराइयां दिखानेमें सहायता पहुंचाती है।

(३)

इस बातसे हमें शिक्षा लेनी चाहिये कि ४०० वर्ष पहले इटलीमें लिखा हुआ यह ग्रन्थ आज भी पूरी तरहसे लागू है।

निरूपण किया है। यह कोई दोष नहीं है कि उसने इन बुरे विचारोंको अपने हृदयमें स्थान दिया। बात यह है कि दिलमें चाहे कुछ सोचिये मगर ढोंग दूसरा रचिये।

मेकालेकी घोर घृणा और आश्चर्य देखिये और साथ साथ उसी प्रबन्धकी यह बात पढ़िये—"जिस पुरुषने संसारका अनुभव प्राप्त किया है वह जानता है कि साधारण सिद्धान्त बिल्कुल निकम्मी चीज़ है। यदि वह नीतिमूलक और बिल्कुल सत्य है तो अनाथ बालकोंको सिखलाने योग्य बात है, और कुछ नहीं।" पाठक समझे? नीतिमूलक और सत्य बातको अनाथालयमें शरण मिली। कई लोग कहेंगे, यह व्यंग है। हमें इसपर विश्वास नहीं। किन्तु यदि मान भी लिया जाय तो ऐसे व्यंगमें हृदय उतना ही स्पष्ट प्रतीत होता है जितना गम्भीर प्रलापके कई पृष्ठके ग्रन्थको पढ़कर नहीं हो सकता। हमें तो यह बात अंगरेज शासनकी पहचान करानेवाली नीतिसी मालूम पड़ती है। अंगरेज जातिको इस बातका अभ्यास पड़ गया है, वह यह नीति काममें लाती है और इसके साथ उसका सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। किन्तु आयरिश जातिको इस नीतिसे पाला नहीं पड़ा है, न पड़ता है और न पड़ेगा। हम इससे कदापि सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते। पुराने अत्याचार ज्यों ज्यों अधिकाधिक पुराने होते जाते हैं हमारा क्रोध शान्त होता जाता है, किन्तु पुरानी कपटी बातोंको फिर २ दोहराना, इतना ही नहीं, किन्तु यह चेष्टा करना कि उनकी सत्यता हम स्वीकार करें, हमारी सारी देहमें

भूलियेगा मत कि यह सिद्धान्त साम्राज्यके "बड़े साझीदार" का है। यदि मेकाले हमारा गला घोंटनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करता और भगवानको धन्यवाद देते हुए क्रोमवेलके समान हमारा गला घोंट देता तो बादकी पीढ़ियां आग बबूला हो उठतीं, किन्तु मेकालेके भाव जहरमें कडुवापन है। लीजिये, और सुनिये! मेकाले माकियावेलीकी पुस्तक पढ़कर बेताब हो गया था। माकियावेलीके विषयमें आप लिखते हैं "जिस पुरुषको इटलीके इतिहास और साहित्यसे परिचय न हो उसके लिये यह असम्भव बात है कि उस पुस्तकको जिसने माकियावेलीके नामपर कलंकका टीका लगाया है बिना घोर घृणा और आश्चर्यके पढ़ सके। दुष्टताका बिलकुल नग्न लेकिन निर्लज्ज चित्र है। ऐसी शांत, विचारपूर्ण और वैज्ञानिक निष्ठुर क्रूरताका वर्णन नीचसे नीच प्रकृतिका पुरुष भी नहीं कर सकता। मालूम पड़ता है कि यह किसी नर-पिशाचने लिखा है।" किन्तु यह प्रबन्ध साम्राज्यवादपर महत्वपूर्ण उज्ज्वल प्रकाश डालता है। मेकाले माकियावेलीके विषयमें लिखता है कि "उसका एकमात्र दोष यह था कि उसने उस समयके कुछ प्रचलित सिद्धान्तोंको स्वीकार कर उन्हें ज्वलन्त और अन्य लेखकोंसे अधिक ओजस्वी भाषामें लिखा।"

यहां सत्य बात स्वयं प्रकट होगयी, यद्यपि मेकालेका यह इरादा नहीं था। क्या मजेकी बात है! माकियावेलीका अपराध यह है कि उसने ज्वलन्त और ओजस्वी भाषामें उनका

बरनार्डशा मिश्रमें जो अत्याचार हुआ था उसकी पोल जीती जागती और चुभनेवाली भाषामें भले ही खोले, किन्तु जिन्हें दूसरे देशोंपर हमला करना है उनका 'तिब्बतको पीस डालने' वाले वाक्यांशसे काम सध जाता है। ऐसा स्वाधीनताका पक्षपाती और प्रसिद्ध लेखक जब लिखता है—"मैं मोरक्को, ट्रिपोली, साइबीरिया और अफ्रिकाके लोगोंको "सभ्य" बनानेके लिये फ्रांस, इटली, रूस, जर्मनी और [illegible] गलैण्डके साथ सहयोग करनेको तैयार हूं" तो मिश्रके अत्याचारके ऊपर उसने जो गाली बरसायी है वह व्यर्थ हो जाती है। अत्याचार हो चुकनेपर वह भले ही रो लें किन्तु बिना क्रूरता किये वे लोग "सभ्य" नहीं बन सकते।

बरनार्डशाके इन वाक्योंको पढकर और साथ ही साम्राज्यके विरुद्ध उसके जो सच्चे उद्गार हैं उन्हें देखकर साम्राज्यके हिमायती मन ही मन हसते होंगे। साम्राज्यको बुरा बतलाते हुए शा लिखते हैं—"यह नाम ऐसा है कि जिस आदमीके हृदयमें अपनी मातृभूमिके प्रति पवित्र भाव है और जो पुरुष दूसरोंके हृदयोंमें इन भावोंको पवित्र और अविच्छेद्य समझता है इस नामको सुनकर अत्यन्त घृणाके साथ इसपर लानत भेजेगा।" अपनी "प्रतिनिधि शासन" नामक पुस्तकमें जब मिल लिखता है कि "अंगरेज एक ऐसी जाति है जो स्वतंत्रताको समझती है। भले ही इसने भूतकालमें भूलें की हों, किन्तु अब इस जातिने विदेशियोंके साथ व्यवहार करनेमें अन्य जातियोंसे बहुत अधिक विवेक प्राप्त

आग भड़का देता है। यह आग इतनी जबरदस्त होती जाती है कि अगरेज जातिके साथ सम्बन्ध टूटनेपर ही यह भी बुझेगी।

(४)

मैकाले तो आयर्लैंडवालोंको धोखेमें नहीं डाल सकता, किन्तु हमें भय है मिल और बर्नार्डशा जैसे लेखकोंसे। बहुधा ऐसा होता है कि जब कभी हम किसी निष्कपटी आदमीकी बातोंसे घपलेमें पड़ जाते हैं और हमें उसकी प्रकृतिका परिचय नहीं मिलता तो हमारा विवेक हमें ढोंगसे बचा देता है और हृदयमें उसके प्रति घृणा पैदा हो जाती है। जब आक्रमणकारी देश आक्रमणका मौका खोजता है तो वह पहले कोई बहाना ढूढता है। हमको खतरा इसमें है कि लोग आक्रमणकारी देशको बहानेका मौका दे देते हैं। मिलने जो यह वाक्य लिखा है वही काफी बहाना है। "स्वेच्छाचारी शासन असभ्य समाजोंके लिये उचित और न्यायसगत है। हा, उद्देश्य यह होना चाहिये कि उनको उन्नत किया जाय।"

शासाहन अपनी एक पुस्तककी भूमिकामें लिखते हैं—"मै तिब्बत निवासियोंको मशीनके भीतर दबाकर पीस डालू यदि वे मुझे सर्वजातीय स्वतत्र देनेसे इन्कार करें।" अपने राज्यके भीतर किसी स्वतत्रको बलपूर्वक प्रचलित करना तो हमारे अधिकारमें हुआ, किन्तु "बर्बर" कहकर दूसरे लोगोंके ऊपर इसका प्रयोग करना सरासर दूसरी बात है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अंगरेज लोग ऐसे सीधे सादे होते हैं कि वे ऐसी बातोंपर झट विश्वास कर लेते हैं। इतिहास और अनुभव इन बातोंके विरुद्ध जाते हैं। सम्भवतः होमरूल दलके नेता समझते हैं कि दस बीस सालमें ही उनका काम पूरा होजायगा और इसी अवधिके भीतर होमरूल प्राप्त होजायगा। वे लोग शायद इसी कालके भीतरकी बात करते हैं।

किन्तु इस अवधिके बाद हमारी सन्तान शक्तिशाली और लड़ाकी बन जायगी और यदि हम उस समय तक न सम्हले तो वह हमारे कामके लिये तैयार होजायगी। वर्तमान समयके लिये मैं तो यही कहूंगा कि बूढ़े कार्यकर्ताओंकी सीमा हमारे लिये बस नहीं है। जो कोई आगे बढ़नेसे हिचकता है उसे हमारा अर्वाचीन और प्राचीन इतिहास देखना चाहिये। हृयाने और

कर लिया है और नैतिक उन्नति की है।" यह शब्द सुनकर अंगरेज भाई "बर्बर" जातिको सभ्य बनानेके लिये आगे बढ़ते हैं; किन्तु उनके भाव मेकालेकेसे रहते हैं। यह सब बातें पढ़ सुनकर हमें स्वभावत क्रोध होआता है, साथ ही आश्चर्य होता है और हसी भी आती है।

साम्राज्यके पक्षमें जो कुछ लिखा गया है उसे पढ़कर क्रोध आता है, घृणा पैदा होती है, किन्तु स्वाधीनताके लेखक मिलके ग्रन्थ रत्नोंमेंसे यह वाक्य देखकर जी खोलकर हसे बिना नहीं रहा जाता। मिल अपनी स्वाभाविक गम्भीरतासे कहते हैं—"दूसरे देशोंको हड़पना ऐसी अभिलाषा है जो जातीय दृष्टिसे देखनेपर अंगरेजोंके लिये अस्वाभाविक है।" जब निष्कपटहृदय अंगरेज ऐसी बात लिख सकता है तो हम सबको होश हवाश दुरुस्त रखना चाहिये, और जब आजकलकी तरह साम्राज्यके पक्षमें अहितकर, बेढंगी बातें चारों ओरसे बकी जा रही हैं हमें सोचना चाहिये, इन सब बातोंपर ध्यानसे विचार करना चाहिये और चौकन्ना रहना चाहिये।

(५)

अब इस परिच्छेदके अन्तमें हम होमरूल दलवालोंपर अपनी सम्मति लिखेंगे। यह भविष्यवाणी सुनकर हसी आती है कि होमरूल मिलनेपर आयर्लैण्ड साम्राज्यका भक्त रहेगा। हमें आश्चर्य है कि आयरिश लोग भी ऐसे बेवकूफ होते हैं, यद्यपि

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अंगरेज लोग ऐसे सीधे सादे होते हैं कि वे ऐसी बातोंपर झट विश्वास कर लेते हैं। इतिहास और अनुभव इन बातोंके विरुद्ध जाते हैं। सम्भवत होमरूल दलके नेता समझते हैं कि दस बीस सालमें ही उनका काम पूरा होजायगा और इसी अवधिके भीतर होमरूल प्राप्त होजायगा। ये लोग शायद इसी कालके भीतरकी बात कहते हैं।

किन्तु इस अवधिके बाद हमारी सन्तान शक्तिशाली और लड़ाकी बन जायगी और यदि हम उस समय तक न सम्हले तो वह हमारे कामके लिये तैयार होजायगी। वर्तमान समयके लिये मैं तो यही कहूंगा कि बूढ़े कार्यकर्ताओंकी सीमा हमारे लिये बस नहीं है। जो कोई आगे बढ़नेसे हिचकता है उसे हमारा अर्वाचीन और प्राचीन इतिहास देखना चाहिये। दबाने और उजाड़नेकी पुरानी चेष्टा विफल होनेपर हमें पुचकारनेका नया प्रयत्न आरम्भ हुआ। पहले छोटी छोटी रियायतें बख्शी गयीं, फिर बड़ी। पहले यह समझा गया था कि कठोर शासनसे होमरूल दबोचा जायगा, फिर दयासे इसके प्राण लेनेकी ठहरी और हमें स्थानीय स्वराज्य दिया गया। स्थानीय स्वराज्यसे पूरा स्वराज्य प्राप्त करना अनिवार्य होगया और अब जबकि होमरूल प्राय प्राप्त होगया है तो हम आगे बढ़ रहे हैं।

दशम परिच्छेद

सशस्त्र प्रतिरोध।

(१)

स्वाधीनतापर विचार करनेसे अवश्य ही इसके लिये हथियार उठानेका प्रश्न उठता है। यदि जातिके स्वत्वोंकी सत्यता और न्याय्यता प्रमाणित करना यथेष्ट होता तो संसारमें अत्याचार बहुत कम रह जाता, किन्तु अत्याचारी सत्ता सत्यके प्रति अंधी हो जाती है, दलीलोंसे इसका दिल नहीं पसीजता, इसका सामना पशुबलसे करना पड़ता है। इसलिये हमें विद्रोहका नैतिक विचार करना आवश्यक है।

(२)

चिड़चिड़े, नुक्ताचीन और नीम हकीम खतरे जानका मसला चरितार्थ करनेवाले सज्जन सर्वत्र मिलते हैं। ऐसे आदमी आपत्ति करेंगे—"आयर्लैण्डमें हथियार लेकर लड़नेका सवाल कैसे उठ सकता है? यदि कोई इस प्रकार युद्ध करना चाहे तो उसे मालूम होगा कि यह बात असम्भव है, और न कोई लड़ना ही चाहता है। यदि [illegible]आपको [illegible] हो तो खुद जाकर देख [illegible] रूखी [illegible] व्याव-"

हारिक नहीं हैं। ऐसी बातोंकी तो परवा भी न की जानी चाहिये, किन्तु इससे मालूम होता है कि बहुतसे लोग ऐसे हैं जो तुरत लडकर हमारी लम्बी लड़ाईको तय कर देना चाहते हैं, पर वे समझते हैं कि यह सम्भव नहीं है। व्यावहारिक बातोंका विचार करनेके लिये हमें कुछ बातें ध्यानमें रखनी चाहियें। यद्यपि आयर्लैंड हारनेपर भी कई बार लड़ा है और फिर लड़नेको तैयार हो सकता है, किन्तु इस समय नीतिका सहारा लेकर प्रश्न उठाया जाता है कि निरस्त्र आयर्लैण्ड दुर्जेय इङ्गलैण्डका सामना किस प्रकार करेगा? इङ्गलैण्डके लिये तो यह सबसे आसान लड़ाई होगी। हम जिस बातपर जोर देना चाहते हैं वह यह है—निष्क्रिय रहकर और बहावकी ओर बहते जानेसे हम उस स्थितिको जा रहे हैं जहां इङ्गलैंड लपेटमें आ ही जायगा। हमें या तो उसके लिये लड़ना पड़ेगा या उससे साफ अलग हो जाना पड़ेगा। उसके साथ सम्बन्ध रहनेसे हम किसी प्रकार निरपेक्ष होकर नहीं रह सकते। इसलिये सैनिक नीति बिल्कुल व्यावहारिक है। इसके अतिरिक्त हमारे लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। इङ्गलैण्डके संकटमें उसकी सहायता करना उतना ही हानिकर है जितना उससे सम्बन्ध तोड़नेका दुस्साहसपूर्ण कार्य। सबसे बड़ी बात तो यह है कि स्थिति आश्चर्यजनक रूपसे बदल गयी है। इङ्गलैण्ड भीतर और बाहर दोनों तरफसे संकटमें है। वहां हर तरहके मजूरोंके झगड़े मचे हुए हैं जिनका क्या परिणाम होगा कुछ ठिकाना नहीं। एक दूसरा झगड़ा इङ्ग

लैण्डमें ऐसा मचा हुआ है जिसके कारण इगलैण्डके प्रधान मन्त्री रूसके जारके समान सुरक्षित होकर बाहर निकलते हैं। * इङ्गलैण्डमे इस समय जो अशान्ति फैली हुई है इससे वहाके अधिकारियोंकी बुद्धि हरण होनेकी सम्भावना है। इस मुसीबतमें अकेला इङ्गलैण्ड ही नहीं है, सब महाशक्तियोंकी यही हालत है। कमसे कम यह तो बहुत सम्भव है कि घरेलू लडाईसे यह उसी प्रकार अवाक् हो सकते हैं जिस प्रकार बाहरी शक्तिसे लडाई करनेकी आवश्यकता पडनेपर। इन बातोंका साफ शब्दोंमें निचोड यह है—हम इस बेचैनीसे दूर जाकर शान्तिसे बैठे रह नहीं सकते। हमें खडा होना पडेगा और अपने देशके लिये लडना पडेगा, नहीं तो दूसरोंकी सहायता करनी पडेगी। हमें तैयार हो जाना चाहिये और अधिकारोंके लिये डट जाना चाहिये। जो हो, यह बात कोई अस्वीकार नही कर सकता कि हमारे वर्तमान आन्दोलनके समय विद्रोहकी नैतिक स्थितिपर विचार करना व्यावहारिक तो अवश्य है।

(३)

हमें उस अल्पमतपर विश्वास है जो हमारी इन बातोंमें बुद्धिमत्ता देखता है। हमारा होना चाहिये तर्कसे जनतापर कुछ प्रभाव और

गाली गलौज करके उन लोगोंको अपने दलसे अलग कर देते हैं जो अभीतक कुछ निश्चय नहीं कर सके हैं और हमारे पक्षमें आ सकते हैं। बहुत सम्भव है किसी खटके या किसी निर्बलता के कारण यह भाई पिछड़ रहे हों और सत्यकी स्फूर्तिदायक समीर और स्वाभाविक संयमसे हमारे सच्चे, श्रेष्ठ सैनिक बन जाय। अमेरिकन गृहयुद्धके समय एमर्सनने युद्धमें हत सैनिकोंका स्मारक खोलते समय ऐसे वीरोंका हृदयग्राही उल्लेख किया था। उसने एक नवयुवकका जिक्र किया जिसे वह जानता था। इस नव युवकको आशङ्का थी कि मैं डरपोक हूँ। इसलिये उसने संकटमें रहनेका अभ्यास डाला। वह जबरदस्ती संकटके स्थानोंमें जाया करता था और उसका सामना करता था। एमर्सनने कहा है—"यह वीर न्यूयार्कमें भर्ती हुआ, युद्धक्षेत्रको गया और जाते ही खेत रह गया।" उसने इस घटनापर जो टिप्पणी की है वह हमारे लिये महत्वपूर्ण है। "इस भावपूर्ण हृदयसे ही बड़े २ वीर बने हैं।" हम देशभाइयोंको शरीरसे हृष्ट पुष्ट बनानेके लिये जो कष्ट उठा रहे हैं वही कष्ट हमें उनका चित्त दृढ़ बनानेके लिये भी उठाना चाहिये। हम शारीरिक शिक्षा, कवायद आदिका बड़ा ध्यान रखते हैं। यह उचित है, क्योंकि इससे हुल्लड़शाही सुसगठित सेनाके रूपमें परिणत हो जाती है और स्वावलम्बन-हीनता शक्तिमें बदल जाती है। हमें उन मनुष्योंके हृदयोंसे बड़ी सावधानीके साथ काम लेना चाहिये जिनकी अभी परीक्षा नहीं हुई है। यह दुर्बल हों, चिन्तित हों और विवेकके विषयमें

लैण्डमें ऐसा मचा हुआ है जिसके कारण इंगलैण्डके प्रधान मन्त्री रूसके जारके समान सुरक्षित होकर बाहर निकलते हैं। * इङ्गलैण्डमें इस समय जो अशान्ति फैली हुई है इससे वहांके अधिकारियोंकी बुद्धि हरण होनेकी सम्भावना है। इस मुसीबतमें अकेला इङ्गलैण्ड ही नहीं है, सब महाशक्तियोंकी यही हालत है। कमसे कम यह तो बहुत सम्भव है कि घरेलू लडाईसे यह उसी प्रकार अवाक् हो सकते हैं जिस प्रकार बाहरी शक्तिसे लडाई करनेकी आवश्यकता पडनेपर। इन बातोंका साफ शब्दोंमें निचोड यह है—हम इस बेचैनीसे दूर जाकर शान्तिसे बैठे रह नहीं सकते। हमें खड़ा होना पडेगा और अपने देशके लिये लडना पडेगा, नहीं तो दूसरोंकी सहायता करनी पडेगी। हमें तैयार हो जाना चाहिये और अधिकारोंके लिये डट जाना चाहिये। जो हो, यह बात कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि हमारे वर्तमान आन्दोलनके समय विद्रोहकी नैतिक स्थितिपर विचार करना व्यावहारिक तो अवश्य है।

(३)

हमें उस अल्पमतपर विश्वास है जो हमारी इन बातोंमें बुद्धिमत्ता देखता है। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिये कि हम तर्कसे जनतापर कुछ प्रभाव पड़े। हमें धीर, और दृढ़निश्चयी बनना चाहिये। हम शीघ्र धीरज खो देते हैं और जल्दबाजीमें

* यह स्त्रियोंके मताधिकारके आन्दोलनके विषयमें है। आजकल यह आन्दोलन धीमा पड गया है किन्तु इसका स्थान कम्युनिज़्मने ग्रहण कर लिया है—अनुवादक।

यगे। इतना हम अवश्य करेंगे कि जहातक हो सकेगा न्याय-शास्त्रके अनुसार अपनी दलीलोंके लिये पुष्ट प्रमाण देंगे। तोभी सदा ध्यानमें रखियेगा कि स्वाधीनता प्राप्त करनेका हमारा कारण वादविवादसे बहुत ऊपर उठा हुआ है। कोरा तर्कशास्त्र ज्योतिकी उस रहस्यमय चिनगारीको धारण नहीं करता जो हमारा जीवन है। इसलिये हम अपने शत्रुओंसे बहस करते समय उतनी ही अच्छी, बल्कि उससे भी अच्छी, दलीलें देनेका वचन देते हैं जितनी अच्छी उनकी युक्तिया हैं। किन्तु हम अपने सिद्धान्तकी बाजी इन दलीलोंसे अधिक महत्व रखने-वाली बातोंपर लगाते हैं। इस आधारपर मैं युद्धकी न्याय्यतापर सामान्य वादविवाद नही करूगा किन्तु किसी शासनके विरुद्ध विद्रोह करनेपर विशेष जोर दूगा। इस विषयपर एक बडा ग्रथ लिखा जा सकता है, किन्तु दिखाऊ दार्शनिक उलझनों-को छोडकर हम उसी बातपर विचार करेंगे जिससे हमारा साक्षात् सम्बन्ध है। × × × ×

यह बात साफ है कि हमारी स्थिति बडी नाजुक और टेढी है। इस विषयपर इन प्रारम्भिक शब्दोंको लिखते समय हमें एक बातपर विशेष जोर देना है। हमें किसी कठिनाईसे इसलिये नहीं भागना चाहिये कि वह नाजुक और खतरनाक है और न हमें उससे समझौता ही करना चाहिये। रणभूमिपर शारीरिक सग्राममें कूटनीति और रणनीतिका प्रयोग धर्मसगत माना गया है युद्धक्षेत्रमें आगे बढना और पीछे हटना ठीक समझा जाता

बारीक छानबीन करनेवाले हों, किन्तु एमर्सनके नवयुवकके समान वे लोग युद्धक्षेत्रकी सबसे आगे बढ़ी हुई पंक्तिमें पहुंच सकते हैं, किन्तु उनके साथ तर्क करनेमें हमें धीरजसे काम लेना चाहिये। उन्हें अपनी बात समझानेमें हमें अपना दिमाग ठण्डा रखना चाहिये और पूरी सहानुभूतिके साथ छोटी छोटी बातोंपर भी विचार करना चाहिये। इस बातकी आवश्यकता निस्सन्देह स्पष्ट है कि हम शारीरिक बातोंपर जिस सावधानीसे विचार करते हैं मानसिक बातोंपर उससे अधिक सावधानी चाहिये।

(४)

सबसे पहले विद्रोह करनेका विरोध धार्मिक दृष्टिसे किया जायगा। इस तर्कमें सब शंकाएं और दुविधाएं आ जुटेंगी और यही टेढ़ी खीर भी है। प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्रको अधिकार है कि वह किसी दूसरेसे लड़े, किन्तु न्यायसंगत कारण होनेपर भी विद्रोह करनेका अधिकार किसी पराधीन जातिको नहीं मिला है। हम आयर्लैण्डवालोंको भी यह अधिकार नहीं मिला है और सदा यह अस्वीकार किया जाता है। इसलिये हमें अपने विरोधियोंको शब्द प्रतिशब्द उत्तर देना है और क्रमशः उस स्थानपर पहुंचा देना है जहां वे हमारे सिद्धान्तोंको मानने लग जायंगे। किन्तु कोई यह न समझे कि स्वाधीनता शास्त्रार्थका विषय है। यह उससे अधिक है। युद्धके विषयमें हम बहुधा अपनी प्रतिज्ञाओंका उल्लेख नहीं करेंगे किन्तु अपने निश्चय बता-

एकादश परिच्छेद



कानूनका सच्चा अर्थ

(१)

जब हम अवैधसत्ताका विरोध करते हैं तो हम वैधसत्ताको क्यों मानते हैं और उसका क्या अर्थ समझते हैं यह बतला कर हमें अपनी जड मजबूत कर लेनी चाहिये। इसलिये हमें कानून शब्दका अर्थ भली भांति समझना चाहिये। कानूनकी परिभाषा यों की जा सकती है कि कानून शुद्ध बुद्धिकी वह आज्ञा है जिसका उद्देश्य लोकहित है और जो शासक शक्तिद्वारा प्रचारित की जाती है। इस सम्बन्धमें हम प्रामाणिक लेखकोंके कुछ वाक्य उद्धृत करेंगे। "आदमीके बनाये हुए कानूनपर कानूनकी छाप तभीतक रहती है जबतक कि वह शुद्ध बुद्धिके अनुसार हो। इस दृष्टिसे इसकी उत्पत्ति स्पष्टतया ईश्वरी नियमसे है।" [एक्वीनास एथिक्स प्रथम खण्ड पृ० २७६] सेण्ट टामसने ऐसे कानूनोंके विषयमें लिखते हुए जिनका उद्देश्य, प्रचार कर्ता अथवा स्वरूप अधार्मिक है लिखा है—"ऐसी कार्रवाइयां कानून नहीं कही जा सकतीं, यह तो अत्याचारकी कृति हैं। क्योंकि सेण्ट आगस्टीनने लिखा है कि 'जो कानून धार्मिक नहीं है वह कानून

है ; सम्मुख आक्रमण करना और दांव-घातसे काम लेना नीति-सम्मत समझा जाता है। किन्तु जहां सिद्धांतकी बात आती है वहां कूटनीतिका कोई काम नहीं, वहां तो सीधे रास्तेका अनुसरण करना पड़ता है और यह रास्ता ढूंढकर निकाला जाता है तथा अंत तक अटल रहकर निभाया जाता है।

इस विषयपर सभी मतके और सभी समयके लोगोंकी एक राय रही है। जबतक यह सब बातें हमारे देशमें पूरी पूरी नहीं हो जातीं हम युद्धकी दशामें हैं। जब स्वाधीन और वास्तविक आयरिश सरकार स्थापित हो जायगी तो हम उसका पूरा और हार्दिक अभिनन्दन करेंगे। उस समय कानूनको भी जनता सहर्ष मानेगी। हम इस समय राजसत्ताका खण्डन करनेके लिये यह सब नहीं लिख रहे हैं, किन्तु हम यह बतलाना चाहते हैं कि इस समय जो लोग हमारे ऊपर शासन कर रहे हैं वे अनधिकारी हैं और जो झंडा हमारे देशमें फहरा रहा है वह हमारा नहीं है।

(२)

विद्यमान शासकोंका विरोध करनेके विषयमें वालमेज लिखता है कि "हमें उन सब दलीलोंको चकनाचूर कर देना

स पिता पितरस्तेषां केवलं जन्महेतवः ॥ रघुवंश ।

"राजा प्रकृतिरञ्जनात्" इत्यादि ।

मनुने राजाके विषयमें कहा है 'कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते।' अर्थात् कामी, क्रोधी, नीच राजा दण्डसे ही मारा जाता है।

' शुक्रनीतिमें एक स्थानपर लिखा है जो राजा प्रजाका पालन नहीं करता उलटा उन्हें तंग करता है वह 'श्वेव सोन्मादमातुरः'। पागल कुत्तेकी तरह सम्मिलित प्रजा द्वारा मारा जाना चाहिये।

— अनुवादक।

ही नहीं है'। [एक्वीनास एथिक्स प्रथम खण्ड पृ० २६२]

वालमेजने लिखा है कि "किसी भी कानूनमें मुख्य बात यह रहनी चाहिये कि वह शुद्ध बुद्धिसगत हो, वह शुद्ध बुद्धिका ही प्रकाश हो अर्थात् वह समाजमें शुद्ध बुद्धिके प्रयोगका साधन हो।" (यूरोपियन सिविलिजेशन अ० ५३) इसी अध्यायमें वालमेजने सेण्ट टामसकी बातको पुष्ट करते हुए लिखा है कि "राज्य राजाके लिये नहीं होता बल्कि राजा राज्यके लिये होता है।" और उसने इसका स्वाभाविक परिणाम निकाला है कि "सब सरकारें समाजके हितके लिये स्थापित की गयी हैं। चाहे किसी तरहकी सरकार हो, जो उसका शासन चलाते हैं उन्हें इस बातको सदा अपना पथप्रदर्शक समझना चाहिये।" 'प्रतिनिधि-शासन' नामक अपनी पुस्तकमें मिलने लिखा है कि सरकारका एकमात्र उद्देश्य प्रजाका हित करना है। ईसा मसीहके पैदा होनेसे पहले प्लेटो भी ऐसी ही बात कह गया है। वह एक आदर्श नगर स्थापित करना चाहता था जिसमें सारी प्रजा अत्यन्त सुखी रहे। (रिपब्लिक खण्ड ४) येल्डरवुडने लिखा है कि "नीतिपूर्ण शासन तभी न्यायपूर्वक स्थापित किया जा सकता है जब मनुष्यके सहज कर्तव्य और अधिकार अविच्छेद्य समझे जाय।" (अर्वाचीन दर्शन शास्त्र अध्याय ४)।*

* हमारे यहां भी ऐसे वाक्य स्थान २ पर मिलते हैं, यथा —
प्रजानां विनयाधानात् रक्षणाद् भरणादपि।

इस विषयपर सभी मतके और सभी समयके लोगोंकी एक राय रही है। जबतक यह सब बातें हमारे देशमें पूरी पूरी नहीं हो जातीं हम युद्धकी दशामें हैं। जब स्वाधीन और वास्तविक आयरिश सरकार स्थापित हो जायगी तो हम उसका पूरा और हार्दिक अभिनन्दन करेंगे। उस समय कानूनको भी जनता सहर्ष मानेगी। हम इस समय राजसत्ताका खण्डन करनेके लिये यह सब नहीं लिख रहे हैं, किन्तु हम यह बतलाना चाहते हैं कि इस समय जो लोग हमारे ऊपर शासन कर रहे हैं वे अनधिकारी हैं और जो झंडा हमारे देशमें फहरा रहा है वह हमारा नहीं है।

(२)

विद्यमान शासकोंका विरोध करनेके विषयमें वालमेज लिखता है कि "हमें उन सब दलीलोंको चकनाचूर कर देना

स पिता पितरस्तेषां केवलं जन्महेतवः ॥ रघुवंश ।

"राजा प्रकृतिरञ्जनात्" इत्यादि।

मनुने राजाके विषयमें कहा है 'कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते। अर्थात् कामी, क्रोधी, नीच राजा दण्डसे ही मारा जाता है।

' शुक्रनीतिमें एक स्थानपर लिखा है जो राजा प्रजाका पालन नहीं करता उलटा उन्हें तंग करता है वह 'श्वेव सोन्मादमातुर) पागल कुत्तेकी तरह सम्मिलित प्रजा द्वारा मारा जाना चाहिये।

अनुवादक।

चाहिये जिन्हें जिस समय जो सरकार स्थापित हो उसीके अन्ध उपासक हमारे विरुद्ध पेश करते हैं।" (यूरोपियन सिविलिजेशन अ० ५५) इस प्रसिद्ध स्पेनिश धर्मज्ञसे अधिक स्पष्ट बात हम नहीं लिख सकते। इन जीहुजूरोंकी दलीलोंके जवाबमें हम उसीका निम्नलिखित लम्बा और ओजस्वी वाक्य उद्धृत करते हैं—"न्यायविरुद्ध शासन कोई शासन नहीं है। जहां शक्तिके भाव होते हैं वहां अधिकारके भाव भी होने चाहियें। यदि ऐसा न होगा तो शारीरिक शक्ति पशुबलमें परिणत हो जायगी।" उसने फिर लिखा है कि "जिस शासकने सिर्फ तलवारके ही जोरसे किसी जातिको अपने अधीन कर रखा है उसे अपने इस कार्यसे यह अधिकार नहीं मिल जाता कि उस जातिपर उसका ही कब्जा रहे। वह सरकार, जिसने घोर अन्यायसे नागरिकोंकी सब श्रेणियोंको लूट खसोट लिया है, उनसे अनुचित कर वसूल किये हैं, न्याय्य अधिकार छीन लिये हैं, अपने कामोंको केवल इसी कारणसे न्यायपूर्ण नहीं बतला सकती कि उसे इन अत्याचारोंको कार्यमें परिणत करनेकी यथेष्ट शक्ति है।" इस पुस्तकमें ऐसी ही स्पष्ट और निश्चित बातें बहुतसी हैं। हमारे विरोधी लोग जो ऊंचे ऊंचे अधिकारोंपर हैं, इस विषयमें जो बेहूदी बातें बकते हैं वह हम सब जानते ही हैं। बालमेजने इसी पुस्तक और अध्यायमें ऐसे अधिकारीका एक बड़ा अच्छा उदाहरण उसकी दलीलोंके उत्तरके साथ दिया है —"बालमायराके धर्माचार्य डोन फिलिपस आमाटने अपने 'लडाका ईसाई सम्प्रदाय'

नामक ग्रन्थमें लिखा है कि ईसा मसीहने अपने सरल और भाव व्यञ्जक शब्दोंमें कहा है कि राजाका हक राजाको दो। इससे उसने (ईसाने) भली भांति सिद्ध कर दिया है कि शासकका केवलमात्र अस्तित्व ही यथेष्ट है कि प्रजा जबरदस्ती उसकी आज्ञा माननेको बाध्य की जाय, यह पुस्तक भी रोममें जब्त कर ली गयी थी।" वालमेजके यह अन्तिम शब्द ही इसकी खुलासा टिप्पणी हैं। और वह आगे लिखता है कि "इस जब्तीका चाहे जो कारण हो, हम निस्सकोच कह सकते हैं कि ऐसे सिद्धान्तोंका प्रचार करनेवाली पुस्तकके अनुसार प्रत्येक मनुष्य जो अपने अधिकारोंकी रक्षा करना चाहता है पोपकी इस आज्ञासे सहमत होगा।" यह तो हुई पशुबलपर स्थापित सरकारके विषयकी बातें। यह बलात्कारसे दूसरेके अधिकार छीनना है। इसकी जड़ जम जानेसे यह न्यायसंगत नहीं हो जाती। जब इसकी आज्ञाओंका उल्लंघन नहीं किया जाता तो कोई यह न समझे कि हम सिद्धान्तरूपसे उन्हें मानते हैं—हम तो दिखलानेके लिये भी उन आज्ञाओंको स्वीकार नहीं कर सकते, किन्तु यह समझना चाहिये कि अभी समय नहीं आया है कि इनका विरोध किया जाय। यह तो लड़ाईकी एक चाल है।

(३)

हम यह मानते हैं कि आयर्लैण्डमें अङ्गरेजोंका राज्य बलात्कारसे दूसरोंके स्वत्व छीनकर स्थापित किया गया है। अतः

हम उसकी सत्ता स्वीकार नहीं करते। किन्तु यदि कोई यह युक्ति उपस्थित करे कि बलात्कारसे स्थापित की हुई सत्ता यदि धीरे धीरे प्रजाद्वारा स्वीकृत हो जाती है तो वह एक प्रकारसे न्यायपूर्ण समझी जाती है। इसका मुंह-तोड़ उत्तर हमारे पास है। आयर्लैंडके विषयमें तो हम इस धारणाको निर्मूल बताते हैं। हमारा इस बातका साक्षी आयर्लैंडका इतिहास है जो यह बताता है कि पशुबलपर स्थापित ब्रिटिश अधिकारके सामने हमने कभी सर नहीं झुकाया। किन्तु जो हमारी इस निरी अस्वीकृतिको स्वीकार नहीं करते उनसे हम कह सकते हैं कि वह राजसत्ता जो आरम्भमें न्यायपर स्थापित की गयी थी, जब राष्ट्रका नाश करनेके लिये अपनी शक्तिका दुरुपयोग करती है तो उसका विरोध किया जाना चाहिये। हम अब भी यह बात मान रहे हैं कि अङ्गरेज सरकार प्रजामतके विरुद्ध पशुबलपर स्थापित है, किन्तु हम इससे भी बढ़ी चढ़ी हुई अन्यायकी बातें सिद्ध करके सब आपत्तियोंका निराकरण कर सकते हैं। इस विषयपर डाक्टर मरेने भली भांति विचार किया है। वह लिखता है-"सुप्रतिष्ठित और न्यायसंगत शासन जब अपनी शक्तिका दुरुपयोग करता है तो उसका विरोध किया जाना चाहिये या नहीं यह प्रश्न उठता है। हमारे धर्माचार्यों का बहुमत तो यह है कि ऐसे अवसरपर पशुबलके ही सहारेसे सामना करना धर्मसंगत है और यदि आवश्यकता पड़े तो यह भी उचित है कि स्वेच्छाचारी सम्राट् या राजाओंको सिंहासनसे उतार दिया

जाय।* किन्तु ऐसी स्थिति तब आती है जब अन्याय चरम सीमाको पहुंच जाता है। इस स्थितिके लिये निम्नलिखित बातें उपस्थित रहनी चाहिये —

१—अत्याचारकी मात्रा अतिशय पहुंच जानी चाहिये अर्थात् जब वह असह्य हो जाय।

२—अत्याचार खुलमखुला हो, कमसे कम उनकी आखोंमें जो सज्जन हों और जिनके विचार सच्चे हों।

३—अत्याचारीद्वारा किये हुए पाप उनसे बड़े हों जो उसका विरोध करने और उसे सिंहासनच्युत करनेसे पैदा होंगे।

४—जब अत्याचारसे छूटनेका इस चरम उपायकी शरण लेनेके अतिरिक्त और कोई मार्ग न रहे।

५—जब धर्मकी दृष्टिसे विजयका निश्चय हो।

६—वह क्रान्ति ऐसी होनी चाहिये कि सारी प्रजा मिलकर इसमें भाग ले या मदद दे। यदि एक छोटा दल जनताके समूह का साथ देना अस्वीकार करे तो इससे विद्रोह धर्मविरुद्ध नहीं हो जाता।

('धार्मिक निबन्धमाला', रिकाबीकृत 'नीति दर्शन'का ८ वा परिच्छेद भी पढने योग्य है।)

इनमेंसे कुछ बातें डाक्टर भरेने बड़े विस्तारके साथ लिखी हैं। मैंने उनका सारांश दे दिया है। साधारणसे साधारण

*हमारे यहां भी धर्माचार्यों ने इसी सिद्धान्तपर राजा वेनको सिंहासनसे उतार दिया था। यह कथा इतिहास प्रसिद्ध है अनुवादक।

आदमी भी आसानीके साथ देख सकता है कि यह बातें आयर्लैण्डपर किस प्रकार पूरी पूरी घटती हैं। मुझे तो ऐसा मालूम पडता है कि यदि हमारे नेताओंसे कहा जाता कि क्रान्तिके लिये अपनी शर्तें बतलाइये तो वे इससे और भी अधिक कड़े नियम रखते। सच तो यह है कि उनके विषयमें यह कहा जा सकता है कि वे धर्मकी दृष्टिसे निश्चित विजयसे भी कुछ अधिक चाहते हैं। वे सब प्रकारसे पूर्ण निश्चय चाहते हैं। लडाईमें ऐसे पक्के निश्चयकी आशा कभी नहीं की जा सकती।

(४)

जब कोई राजसत्ता अपने अन्यायके कारण मिट जाती है तो हमें सत्य और न्यायके आधारपर नयी सरकार स्थापित करनेके लिये नागरिक सत्ताके मूलमें जाना चाहिये। अब यह बात कोई नहीं मानता है कि राजामें ईश्वरका अंश है, किन्तु इस विषयपर पुराने जमानेमें जो वादविवाद हुआ उससे शासनके सम्बन्धमें कुछ नयी बातें मालूम होती हैं। राजाको शक्ति साक्षात् ईश्वरसे प्राप्त होती है इस विषयपर लिखते हुए "स्वारेजने बड़ी वीरताके साथ इस बातका विरोध किया कि स्वत राजाको जन्मसे ही शासन करनेका अधिकार प्राप्त है। प्रजाकी सम्मतिसे ही सब प्रकारकी राजसत्ता उत्पन्न होती है। इसी तरहसे मेल्कथानके सर्वशक्तिसम्पन्न राजसत्ताके सिद्धान्तका विरोध करते

हुए स्वारेजने परिणाम निकाला है कि जनताको ऐसे राजाको गद्दीसे उतारनेका अधिकार है जिसने अपनेको उस धरोहरको सम्हालकर रखनेके अयोग्य सिद्ध कर दिया है जो प्रजाने उसे सौंपी है।" (डिवुल्फकृत 'मध्यकालीन दर्शनका इतिहास,' तीसरा संस्करण, पृ० ४६५)

इस अंगरेजी सिद्धान्तका स्वारेजने जो खण्डन किया है उसे प्रसिद्ध लेखक हलमने स्पष्ट, संक्षिप्त और निष्पक्ष बतलाया है। इन युक्तियोंकी सर्वत्र धाक जम गयी है। अंगरेज धर्माचार्यों की अयोग्यता सिद्ध करनेके लिये हलमने उसके वाक्य उद्धृत किये हैं। 'यूरोपका साहित्य' नामक अपनी पुस्तकमें उसने लिखा है– "अत यह शक्ति स्वत अपनी प्रकृतिसे एक मनुष्य नहीं किन्तु मनुष्य समूहके अधिकारमें रहती है। यह निश्चित सिद्धान्त है। हमारे सब प्रामाण्य लेखक इसे पुष्ट कर गये हैं। सब इस बातपर सहमत हैं कि राजाको कानून बनानेकी वही शक्ति है जो जनताने उसे सौंपी है। इसका कारण स्पष्ट है, क्योंकि सब मनुष्य समान पैदा हुए हैं इसलिये किसीको भी किसी दूसरे आदमी या राज्यके ऊपर राजनीतिक अधिकार नहीं है। और न हम इस विषयकी वस्तुतासे ही कोई कारण दे सकते हैं कि क्यों एक मनुष्य दूसरेके ऊपर शासन करे। हां, इसके विरुद्ध कारण दे सकते हैं।" (हलमकृत 'यूरोपका साहित्य' खण्ड २ अ० ४)।

डाक्टर मरेने अपनी पुस्तकमें सर जेम्स मेकिनटोसकी तारीफमें

कहा है कि अगरेजी सिद्धान्तका खण्डन करनेवाले लेखकोंमें यह सबसे योग्य है, देखिये। मेकिनटोस क्या कहते हैं! वह बताते हैं कि पर-आज्ञापालनको बिना अपवादके धर्म बतला देना बेहूदगी है। डाक्टर मरेने अपने 'मुख्य शासन शक्तिका विरोध' शीर्षक प्रबन्धके अन्तमें मेकिनटोसका एक लम्बा चौड़ा अवतरण उद्धृत किया है और इसकी महत्ता तथा बुद्धिमत्ताकी बड़ी प्रशंसा की है। 'इस अवतरणके अधिकांशमें लिखा गया है कि विद्रोहको सफल करनेके लिये कितनी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है और उन घोर बुराइयोंपर भी जोर दिया गया है जो असफलतासे पैदा होती हैं। यहा मैंने जो कुछ लिखा है उसमें मुझे अधिक कष्ट बुराइयोंको खोलनेमें हुआ है छिपानेमें नहीं। किन्तु जब विद्रोह अनिवार्य और आवश्यक हो जाता है तो सबको डाक्टर मरेके उद्धृत किये हुए इस वाक्यका अनुमोदन करना चाहिये। "वह विद्रोह, जो दमनके कारण आवश्यक हो जाता है और जिसके कारणोंपर विचार करनेसे अधिक सम्भावना यह हो जाती है कि उसका अन्त अच्छा होगा, एक सार्वजनिक पुण्यका काम है। उसको सकट चारों ओरसे इस प्रकार घेरे रहते हैं कि इसके सचालक प्रशंसाके योग्य समझे जाने चाहिये।" जब क्रान्ति सफल हो जाती है तो जनतापर यह भार पड़ता है और उसका यह अधिकार रहता है कि वह नयी सरकार स्थापित करे।

(५)

इन सबका निचोड़ यह निकला कि वही सरकार न्याय-संगत है जो न्यायपर स्थापित की गयी हो और सर्वसाधारण-के हितके लिये हो। पशुबलपर स्थापित शासनका विरोध किया ही नहीं जाता बल्कि किया जाना भी चाहिये। यह राजसत्ता जो आरम्भमें नियमानुकूल थी जब धीरे धीरे अत्याचारी बन जाती है तो उसका विरोध करना चाहिये और उसे उलट देना चाहिये। और अन्तिम बात यह है कि जब अपनी शक्तिके दुरुपयोग या अत्याचारके कारण एक विशेष शासनका अस्तित्व नहीं रहता तो हमें वास्तविक राजसत्ताका पुनरुद्धार करना चाहिये। कभी२ कुछ लोग बिना समझे बूझे कह देते हैं कि "स्वतंत्रता अराजकतासे प्राप्त होती है।" किन्तु यह घोर हानिकर सिद्धान्त है। इससे अधिक सत्य तो यह है कि अराजकतासे निश्चय ही अत्याचारकी उत्पत्ति होती है। अराजकतामें जनताको दबानेके लिये कोई न कोई अत्याचारी शासक निकल आता है। किन्तु जब दृढ़प्रतिज्ञ और संयमी जनता स्वेच्छाचार और अराजकता नहीं पर स्वाधीनता प्राप्त करनेका निश्चय कर लेती है तो वह प्राकृतिक नियमके अनुसार काम करती है। सेण्ट टामसने यह सिद्धान्त भली भांति समझा रखा है और टर्नरने अपनी पुस्तक 'दर्शनशास्त्रका इतिहास'में इसे उद्धृत किया है—"अत्याचारी शासककी प्रजा जो सुख शान्ति चाहती है उसे प्राप्त करनेकी

चेष्टा किसी व्यक्तिविशेषको नहीं किन्तु जनताद्वारा सगठि
और धर्मकेअनुसार काम करनेवाली अस्थायी राजसत्ता
करनी चाहिये ।" जब कुछ मनहूस और बेवकूफ लोग पा
लोंकी तरह बकते हैं कि हम राजसत्तामात्रको बुरा बता
हैं, तो हमें शान्तिपूर्वक बता देना चाहिये कि हम राजसत्ता
जडको भली भांति समझते हैं। इसके मूलमें सत्य है और ह
इसके प्रधान भागका पूरा सम्मान करते हैं। यह मुख्य भ
स्वतन्त्रता है।

द्वादश परिच्छेद

सशस्त्र प्रतिरोध।

कुछ आपत्तियाँ।

(१)

विद्रोहका पक्ष पाठकोंके सामने उपस्थित करनेके बाद यह अनुचित न होगा कि हम इस विषयकी आपत्तियोंपर विचार करें। कई जिज्ञासु सिद्धान्तकी इस स्पष्ट आलोचनासे प्रसन्न होंगे, किन्तु कुछ चालाक विरोधी नीतिकी दुहाई देते हुए अथवा क्रान्तिकारियोंका बेहूदा उल्लेख करते हुए उनकी हंसी उड़ायेंगे, सम्भवतः वे किसी बड़े आदमीके नामकी दुहाई दें या ऐतिहासिक घटनाओंका जबरदस्त आसरा लें। यह विचित्रसी बात है कि हम इस बातका तो ध्यान रखते हैं कि जब हम किसी व्यवहारसिद्ध सिद्धान्तसे लोगोंकी नजर बचाना चाहते हैं तो गूढ़ तत्वकी शरण लेते हैं, किन्तु यह बात अभीतक हमारे ध्यानमें कम आयी है कि जब हम किसी सिद्धान्तकी सत्यताको अस्वीकार करनेकी चेष्टा करते हैं तो हम असली बातोंका सहारा लेते हैं। ऐसे समय हमारी आखोंमें प्रस्तुत और कष्ट-

चेष्टा किसी व्यक्तिविशेषको नहीं किन्तु जनताद्वारा संगठित और धर्मकेअनुसार काम करनेवाली अस्थायी राजसत्ताको करनी चाहिये।" जब कुछ मनहूस और बेवकूफ लोग पागलोंकी तरह बकते हैं कि हम राजसत्तामात्रको बुरा बता रहे हैं, तो हमें शान्तिपूर्वक बता देना चाहिये कि हम राजसत्ताकी जड़को भली भांति समझते हैं। इसके मूलमें सत्य है और हम इसके प्रधान भागका पूरा सम्मान करते हैं। वह मुख्य भाव स्वतन्त्रता है।

सिद्धान्तका यह कहकर खण्डन नहीं किया जा सकता कि लाप-रवा लोग इसका दुरुपयोग करते हैं अथवा यह कहकर कि यदि अमुक सभामें या अमुक स्थितिमें इसका खुल्लमखुल्ला प्रचार किया जायगा तो हानिकी सम्भावना है।" यह वाक्य सर्वोत्तम है। सिवा दूसरोंके शब्द दुहरानेके विरोधी इसका कोई ठीक उत्तर नहीं दे सकता। हम वालमेजके शब्दोंमें उनसे कहेंगे—"लोगोंसे नीतिज्ञ बननेको कहते हुए हमें झूठे सिद्धान्तोंकी आड़में छिपा नहीं रहना चाहिये। हमें सावधान रहना चाहिये कि जनताके दुर्भाग्यके रोषको शान्त करनेके लिये हम ऐसी भ्रम-पूर्ण बातें न फैलायें जो सब सत्ता और समाजकी जड़ खोखली करनेवाली हों।" ('यूरोपियन सभ्यता' अ० ५५) ऐसे प्रश्नोंकी तहमें जानेसे जो घबराते हैं उनके बारेमें वालमेज लिखता है कि "मैं नम्रतासे कहूंगा कि ऐसे आदमियोंकी नीतिज्ञता बरबाद चली जाती है, उनकी दूरदर्शिता और सतर्कता किसी कामकी नहीं रहती। वे इन बातोंकी जांच करें या न करें उनकी जाँच हो चुकी, उनका मत क्षुब्ध है और वे उस मार्गपर जिस तरह जा रहे हैं उसका हमें बड़ा खेद है।" ('यूरोपियन सभ्यता' अ०५४)

फ्रान्सके पुराने राज्यमें जनताको जो २ कष्ट थे उनपर लिखता हुआ टर्नर नामके लेखक कहता है—"पुरोहितोंका धर्म यह था कि वे न्याय और सहनशीलताका प्रचार करते किन्तु जनता समझती थी कि वे भी उस राजासे मिल गये जिससे वह डरती थी और जिससे उसको बड़ी घृणा थी।" ('दर्शनशास्त्रका

प्रद संकट, चाहे वह क्षणिक ही हो, ऐतिहासिक घटनाओं अथवा आनेवाली विपत्तिसे बड़ा मालूम होता है। यह बात यदि हम समझ जाय तो उक्त भ्रममें पड़े हुए मनुष्यको हम इस बातमें सहायता देकर उसके दिलमें अपनी बात जमा सकते हैं कि स्थायी और अस्थायी हितमें क्या भेद है। इस प्रकार आपत्तियोंको हटाकर हम अपना पक्ष प्रबल कर सकते हैं।

(२)

ऐसा देखनेमें आता है कि बिल्कुल लापरवा आदमी भी बहुधा सावधानीकी दुहाई देते हैं। ऐसे लोगोंको, जिनकी एकमात्र चेष्टा कठिनतासे पिण्ड छुडाना होता है, जो अपनी कमजोरी छिपानेके लिये धैर्य्यपर व्याख्यान देते हैं, इस बातपर भली भांति विचार करनेकी सलाह देनी चाहिये कि किस प्रकार उग्र, निष्कपटी पुरुष इन बहानेबाजियोंसे झुझला धीरजको त्याज्य पदार्थ बतलाकर उसपर अपनी सारी घृणा बरसाते हैं। ऐसी युक्ति सफल नहीं होती, यह कुछ कालके लिये उनका बड़प्पन घटा देती है। धैर्य दुर्बलोंका नहीं किन्तु बलवान आत्माओंका गुण है।

प्रतिपक्षी कहता है-"आपकी बातें बहसमें तो ठीक हैं किन्तु देखिये, व्यवहारमें लोग किस प्रकार इनका दुरुपयोग कर रहे हैं।" यह दलील सुनकर इसका उचित उत्तर तुरत स्मरण हो आता है। डाकूर मरेने एक स्थानपर लिखा है—"किसी नैतिक

उसका यह कार्य मेकिनटोसके शब्दोंमें 'सार्वजनिक पुण्यका कार्य' बन जाता है। इस कार्यसे सत्यको मनुष्य समाजमें उचित आदरका स्थान मिलता है।

(४)

बालमैज़ने बोसेके विषयमें कहा है कि उसने उन अधिकारोंको अस्वीकार किया है जिनका यहां प्रतिपादन किया गया है। इसलिये हम यहां बोसेके कुछ और वाक्य देंगे जो उसने किसी दूसरे प्रसंगपर कहे हैं किन्तु जो हमारे विषयमें लागू हो सकते हैं। साम्राज्यके विषयमें बोसे लिखता है—

'Les revolutions des empires sont reglees par la providence, et servent a humilier les princes

अर्थात् साम्राज्यकी क्रान्तियां विधातासे निर्दिष्ट की जाती हैं और इनके द्वारा राजाओंका मिज़ाज ठंडा किया जाता है। इस वाक्यसे हम स्वाधीनताका युद्ध करनेसे रोके नहीं जा सकते। यदि हम और आगे पढ़ते हैं और वह बातें पढ़ते हैं जो उसने इसी शीर्षकमें लिखी हैं तो हम उस वीरता, स्वातन्त्र्य प्रेम तथा देशभक्तिकी प्रशंसा ओजस्वी भाषामें देखते हैं जिसने प्राचीन यूनान और रोमका भेद बता रखा है। इसे पढ़कर कोई भी जाति स्वतन्त्रताके लिये उन्मत्त हो सकती है। स्वतन्त्र, अजेय और भ्रष्टताहीन यूनानके विषयमें बोसे लिखता है—

"Mais ce que la Grece avait de plus grand etait une

इतिहास' अ० ५६) बात यह है कि जब अन्याय और पापका बोलबाला होता हो तो उसका स्थायी राज्य नहीं होना चाहिये, उस समय कोई ऐसी कमजोरी न रहनी चाहिये जो पुण्यका रूप धारण कर सके। हम जिस बातका फौरन सामना नहीं कर सकते उसका खण्डन तो सदैव कर सकते हैं। इन बातोंकी अवहेलना करना बुद्धिहीनताका सबसे बुरा स्वरूप है—यह ऐसी अदूरदर्शिता है जिसको हम इस अवसरपर कमसे कम अपनी ओरसे पूरे जोरके साथ अस्वीकार करते हैं।

(३)

क्रान्तिकारी शब्दका प्रयोग उसके अर्थको बिना विचारे हुए किया जा रहा है। हमें सदा ध्यानमें रखना चाहिये कि यह शब्द परस्पर सापेक्ष अर्थ रखता है। यदि किसी जातिकी स्वाधीनता बलात्कार और विश्वासघातसे छिन ली गयी है और उसके भूतकालमें समृद्धिशाली रहे हुए देशमें दमनकारी उपायोंसे काम लिया जा रहा है तो यह भी क्रान्ति है और बहुत बुरी क्रान्ति है। यदि अत्याचारसे शासित और दमनके भारसे उजड़ते हुए किसी देशके लोग उठ खड़े होते हैं और अपने स्वाभाविक साहस, उत्साह और धैर्यसे पुरानी स्वाधीनता प्राप्त करके, न्यायपूर्ण शासन स्थापित करते हैं तो यह भी क्रान्ति है और अच्छी क्रान्ति है। क्रान्तिकारीका विचार उसकी नीयत, उसके साधन और उसके उद्देश्यसे होना चाहिये और जब इन सबमें सत्य विद्यमान रहता है तो

"Voila de fruit glorieux de la patience Romaine Des peuples qui s enhardissaient et se fortifiaient par leurs malheurs avaient bien raison de croire qu'on sauvait tout pourvu qu on pneerdit pas l'esperance"

रोमन दृढताका चकित करनेवाला परिणाम देखिये। जो जाति अपने दुर्भाग्यके समय वीर और शक्तिशाली बन गयी उसका यह विश्वास बिल्कुल ठीक था कि जबतक वह आशा न खो बैठेगी तबतक वह सब कुछ कर सकती है। और सुनिये—

"Parmi eux dans les etats les plus tristes, jamais les faibles conseils n'ont ete seulement ecoutes"

गिरीसे गिरी दशामें भी उन लोगोंमें दुर्बलतासूचक विचार कभी नहीं सुने गये। प्राचीन स्वाधीनताके इस सुन्दर गुण-गानको पढकर हमारी स्वाधीनताकी इच्छा घटती नहीं, बल्कि हमारे अपूर्व इतिहाससे हमें जो सहज उत्तेजन मिलता है वह बढता है और हमारे कानोंमें यह आवाज गूंजती है—"लडते जाओ और विजय प्राप्त करो, निकट भविष्यमें ही तुम्हारा कट्टर शत्रु लडाई हो चुकने और विजय प्राप्त कर चुकनेके बाद तुम्हारा उतनाही कट्टर प्रशंसक बन जायगा।"

(५)

हमने अटल सिद्धान्त निश्चित कर लिये हैं। व्यावहारिक क्षणिक और सदा बदलनेवाली होती हैं। यह निम्नलिखित अवतरणोंमें भली भाति वर्णन की गयी है—

olitique ferme et prevoyante, qui savait abandonner, asarder et defendre, ce qu'il fallait, et ce qui est plus, grand encore, un courage que l'amour de la liberte et celui de la patrie rendaient invincible"

अर्थात् यूनानमें सबसे बड़ी बात यह थी कि उसकी राजनीति दृढ़ और सुसज्जित थी। वह जानती थी कि कर्तव्यके लिये किस प्रकार त्याग किया जाता है, सर्वस्वकी बाजी लगायी जाती है और उसकी रक्षा की जाती है। इन सबसे बड़ी बात तो यह थी कि स्वातन्त्र्य प्रेम और देशभक्तिके कारण उनका साहस अजेय था। निर्दोष रोम और उसकी स्वाधीनताके विषयमें बोसे लिखता है —

"La liberte leur etait donc un tresor qu'ils preferoient a toutes les richesses de l'univers"

अर्थात् स्वाधीनता उनके लिये इतनी अनमोल थी कि वे विश्व की सारी सम्पत्ति उसके सामने तुच्छ समझते थे। बोसे फिर लिखता है —

"La maxime fondamentale de la republique etait de regarder la liberte comme une chose inseparable du nom Roman"

अर्थात् रोमन प्रजातन्त्रका मूलभूत सिद्धान्त यह था कि वह स्वाधीनताको रोमन शब्दसे अविच्छेद्य पदार्थ समझता था। देखिये, उसकी इस दृढ़भक्तिका क्या परिणाम हुआ—

"Voila de fruit glorieux de la patience Romaine Des peuples qui s'enhardissaient et se fortifiaient par leurs malheurs avaient bien raison de croire qu'on sauvait tout pourvu qu' on pneerdit pas l'esperance"

रोमन दृढताका चकित करनेवाला परिणाम देखिये। जो जाति अपने दुर्भाग्यके समय वीर और शक्तिशाली बन गयी उसका यह विश्वास बिलकुल ठीक था कि जबतक वह आशा न खो बैठेगी तबतक वह सब कुछ कर सकती है। और सुनिये—

"Parmi eux, dans les etats les plus tristes, jamais les faibles conseils n'ont ete seulement ecoutes"

गिरीसे गिरी दशामें भी उन लोगोंमें दुर्बलतासूचक विचार कभी नहीं सुने गये। प्राचीन स्वाधीनताके इस सुन्दर गुण-गानको पढकर हमारी स्वाधीनताकी इच्छा घटती नहीं, बल्कि हमारे अपूर्व इतिहाससे हमें जो सहज उत्तेजन मिलता है वह बढता है और हमारे कानोंमें यह आवाज गूंजती है—"लडते जाओ और विजय प्राप्त करो, निकट भविष्यमें ही तुम्हारा कट्टर शत्रु लड़ाई हो चुकने और विजय प्राप्त कर चुकनेके बाद तुम्हारा उतनाही कट्टर प्रशंसक बन जायगा।"

(५)

हमने अटल सिद्धान्त निश्चित कर लिये हैं। व्यावहारिक परिस्थितिया क्षणिक और सदा बदलनेवाली होती हैं। यह बात निम्नलिखित अवतरणमें भली भांति वर्णन की गयी है—

य यह भी है कि वे जीवितावस्थामें मताधिकार प्राप्त करने
मरनेपर स्मारक बनानेकी इच्छा न रखकर देशका काम
के लिये पूरे तैयार रहते थे। अन्तमें जब जागृत जाति अपने
ज स्वभाव, संयम, देशभक्ति और उत्साहसे सेनामें परिणत
तायगी और स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये कुछ करेगी तो वह
विजयके अवसरपर समझेगी कि यह सेना उनके द्वारा
यी बनायी गयी है जिन्होंने जातीय विपादके समय आशा-
ज्योति जगा रखी थी।

(२)

सौभाग्यसे जब हम संसारके सबसे बड़े वक्ताके ओजस्वी
णकी ओर दृष्टि डालते हैं तो उसके भाषणके उस अंशको
कर जिसमें उसने उनका गुणानुवाद गाया है जिनका संसार
से ज्यादा ऋणी है हमारा हृदय कृतज्ञतासे भर जाता है।
ने सर्वोत्तम भाषणमें यूनानके प्रसिद्ध वक्ता डेमोस्थनीजने
क युग और जातिके उन वीरोंका पक्ष प्रतिपादन किया है
त्यक्त आशाको पकड़कर लड़ते रहते हैं। एसकाइनोज नामक
के एक विपक्षीने आक्षेप किया कि डेमोस्थनीजने एथेन्सनि-
सियोंको ऐसी सम्मति दी कि उनकी हार हो गयी। इसका
र डेमोस्थनीज यों देता है—"यदि देश परिणामको पहलेहीसे
नता तोभी वह अपना कार्य्यक्रम नहीं छोड़ता, यदि उसे अपनी
ीर्ति, प्राचीनता अथवा भविष्यका कुछ भी ख्याल होता। हां,

इस समय वह अपने पराक्रममें असफल हो गया है। सफलता असफलता भगवानकी इच्छापर निर्भर है।" डेमोस्थनीज एथेन्स निवासियोंसे प्रश्न करता है कि "जिस पदार्थको प्राप्त करनेके लिये हमारे पूर्वजोंने सब सकटोंका सामना किया यदि हम विना उसके लिये युद्ध किये उसकी आशा ही छोड देते तो क्या हमपर सारा ससार नहीं थूकता ?" वह आगे कहता है कि उन परदेशियोंका विचार कीजिये जो तुम्हारे देशमें आते हैं, तुम्हारी इस गिरी हुई हालतको देखकर क्या कहते होंगे, "विशेषकर जब वे जानेंगे कि प्राचीन समयमें हमारे देशमें कीर्तिके लिये लडे हुए संग्रामके सामने लज्जाजनक जीवनरक्षाको कभी ऊचा स्थान नहीं मिला है।" और वह बडे गर्वके साथ इस उच्च विचारपर पहुचता है कि "कोई भी किसी समय हमारे राष्ट्रको शक्तिशाली और अन्यायी राजाकी सुरक्षित अधीनतामें नहीं रख सकता। हमारे राष्ट्रने सदा ही सम्मान और कीर्तिमें सबसे आगे बढनेके लिये भयकर युद्धमें जूझनेका प्रयत्न किया है।" डेमोस्थनीजने थेमिस्टोक्लीजकी स्मृतिकी दुहाई देते हुए अपने देशवासियोंसे कहा है कि उन्होंने ऐसे वीर पूर्व पुरुषोंका सदा सम्मान किया है। पुराने एथेन्सनिवासियोंने ऐसे वक्ता या सेनापतिको अपना पथप्रदर्शक नहीं समझा जो उन्हें सुखप्रद पराधीनताकी ओर ले जाय। यदि जीवन स्वतन्त्रतामें नहीं बीत सका तो वे उसे तुच्छ समझते थे।" डेमोस्थनीज इस भाषणमें अपने श्रोताओंकी प्रशंसा करते हुए कहता है कि "मैं जिस बातकी घोषणा करता

रहस्य यह भी है कि वे जीवितावस्थामें मताधिकार प्राप्त करने और मरनेपर स्मारक बनानेकी इच्छा न रखकर देशका काम करनेके लिये पूरे तैयार रहते थे। अन्तमें जब जागृत जाति अपने सहज स्वभाव, संयम, देशभक्ति और उत्साहसे सेनामें परिणत हो जायगी और स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये कूच करेगी तो वह पूर्ण विजयके अवसरपर समझेगी कि यह सेना उनके द्वारा विजेयी बनायी गयी है जिन्होंने जातीय विपादके समय आशाकी ज्योति जगा रखी थी।"

(२)

सौभाग्यसे जब हम संसारके सबसे बड़े वक्ताके ओजस्वी भाषणकी ओर दृष्टि डालते हैं तो उसके भाषणके उस अंशको देखकर जिसमें उसने उनका गुणानुवाद गाया है जिनका संसार सबसे ज्यादा ऋणी है हमारा हृदय कृतज्ञतासे भर जाता है। अपने सर्वोत्तम भाषणमें यूनानके प्रसिद्ध वक्ता डेमोस्थनीजने प्रत्येक युग और जातिके उन वीरोंका पक्ष प्रतिपादन किया है जो त्यक्त आशाको पकड़कर लड़ते रहते हैं। एसकाइनोज नामक उसके एक विपक्षीने आक्षेप किया कि डेमोस्थनीजने एथेन्सनिवासियोंको ऐसी सम्मति दी कि उनकी हार हो गयी। इसका उत्तर डेमोस्थनीज यों देता है—"यदि देश परिणामको पहलेहीसे जानता तोभी वह अपना कार्य्यक्रम नहीं छोड़ता, यदि उसे अपनी कीर्ति, प्राचीनता अथवा भविष्यका कुछ भी ख्याल होता। हां,

ऊपर उठे। इस दृष्टिसे हम उस शिलालेखका अर्थ समझते हैं जिसके विषयमें रस्किनने कहा है कि यह संसारका अद्वितीय शिलालेख है, जिसके विषयमें हिरोडोटसने कहा है कि यह स्पार्टके उन वीरोंकी कब्रपर खोदा गया है जो थर्मापीलीमें वीर गतिको प्राप्त हुए और जिसे मीचलके जीवनी-लेखकने मीचलकी जीवनीका बहुत उपयुक्त संक्षिप्त सारस्वरूप समझकर उद्धृत किया है। वह शिलालेख यह है—" हे बटोही! तुम लसीडिमोनियन लोगोंसे कहो कि उनकी आज्ञा शिरोधार्य करके हम यहां पडे हुए हैं।" मीचलकी जीवनीके लेखकने बहुत ही उचित कहा है कि इन वीरतापूर्ण पंक्तियोंका भीतरी अर्थ जो समझता है वह इनसे पराजयका नहीं किन्तु विजयका संदेश पाता है।

३

अपने आदर्शरूप इन महात्माओंका उचित गुणानुवाद करते हुए हमें यह भी उचित है कि हम अपनेको इस महान् परम्पराके वारिस समझें। हमारे योग्य बात तो यह है कि जो झंडा हमारे हाथमें है हम उसकी शान ही लोगोंको न दिखावें किन्तु यह भी सिद्ध करें कि हम उसे फहरानेके योग्य हैं, क्योंकि उसकी विजय और उसका सम्मान इस बातपर निर्भर है कि हम उसकी महत्ता कहांतक समझते हैं, उसकी विजय इस विचारपर निर्भर है कि हमें सदा और सर्वत्र उसके लिए लडना चाहिये, उसकी

हू वह यह है कि यह सिद्धान्त आपके अपने हैं, मैं दिखाता हूं कि हमसे पहली पीढ़ीमें राष्ट्रमें यही तेज विद्यमान था।" एक एक बातपर उसका तेज अधिकाधिक बढ़ता जाता है और अन्तमें वह अपने ऊपर कटाक्ष करनेके लिये एसकाइनीजको ललकारता है और जनतासे निवेदन करता है—"एथेन्सके निवासियो! राष्ट्रकी रक्षा और स्वतन्त्रताके लिये युद्ध करके तुमने कोई दोषका काम नहीं किया है जिन तुम्हारे पूर्वपुरुषोंने मेरेथोनके संकटका मुकाबिला किया, जिन्होंने पलाटियामें शत्रुसे लोहा लिया, जिन्होंने सालमिसमें सामुद्रिक लडाई लडी, जिन्होंने आर्टोमिजियममें सर्वस्व होम दिया तथा जो वीर सार्वजनिक स्मारकोंके भीतर सोये हुए हैं उनकी शपथ खाकर मैं तुम्हें बताता हूं कि इन सबको देशने सम सम्मानके योग्य समझा। एसकाइनीज! हमारे पूर्वजोंने सफल और विजयी वीरोंका ही सम्मान नहीं किया।"

हमारे नेता ओनील, टोन, ओडोनेल और मीचलकी कीर्तिकी धाक जमानेके लिये इन ओजसी वाक्योंकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु इनके पढ़नेसे नयी स्फूर्ति आ जाती है और खून गरम हो जाता है। कैसे मर्मस्पर्शी वाक्य हैं! हम इनसे समझ जाते हैं कि यदि हममें तेज बना रहा तो हमारी वास्तविक विजय होगी। इस सत्याग्रही सिद्धान्तकी हमने और हमारे पूर्वजोंने प्रशंसा की है, यह बात मानवी हृदयका स्थायी सिद्धान्त है कि वह महान् कार्यकी प्रशंसा करे और शारीरिक पराजयसे

विजय इस ज्ञानपर भी निर्भर है कि न मालूम किस समय उसे फेंक देनेके लिये ललकारे जायं, वह इस विश्वासपर निर्भर है कि हम अपने व्यवहारसे उसकी कीर्ति और साख सकते हैं अथवा उसे बदनामीकी ओर खींच ले जा सकते मैं कहूंगा कि हमें यह बात भली भांति समझ रखनी चाहि क्योंकि आजकल प्राचीन समयके पुरुषोंकी प्रशंसा क और उनकी स्वतन्त्रताके आदर्शको न मानना फैसन बन है। हम, जो इस प्राचीन तेजसे ही जीवित हैं, जो इसका प्र करते हैं, इसके लिये लड़ते हैं और कहते हैं कि अन्तमें इस पूर्ण विजय होगी, नवजवान, मूर्ख और अव्यवहारी बताये ज हैं। हम इसका क्या उत्तर देते हैं? हमारा उत्तर हमारे प उसके इतिहास और उसके भविष्यके अनुकूल हैं जो हमारी ह उड़ाते हैं या हमारे ऊपर तरस खाते हैं उन्हें देखना चाहि कि हम उनके पक्षको तुच्छ समझते हैं और घृणाको दृष्टि देखते हैं। यदि हमारे चुनावसे उनमें कोई भ्रम न फैला हो वे हमारे कामोंसे जान सकते हैं कि झगड़ा न रहनेपर हम उच्च पदोंके लिये योग्यताके साथ खड़े हो सकते हैं।

× × × ×

हमें अपने पक्षकी उन्नतिके साथ साथ महान् बनना क्या हम नीचतासे क्षमा याचना करके इस झंडेका आदर सकते हैं? कदापि नहीं। जहां कहीं यह गिरा हुआ होगा हम उठायगे, जहां कहीं इसे ललकारा जायगा हम इसे और ऊ

फहरायेंगे, जहां कहीं यह गाड़ा हुआ होगा हम इसका अभिवादन करेंगे, जहां कहीं यह विजयी होगा हम इसकी कीर्ति गायेंगे और आनन्द मनायेंगे। हम सदैव इसके नामपर गर्व करेंगे, उत्साह दिखलायेंगे, प्रयत्न करते रहेंगे, आनन्द मनायेंगे और दूसरोंकी आशाका उल्लंघन करेंगे। हम इसके लिये सुप्त स्मृतियोंको जागृत करेंगे, बुझती हुई आगमें फिर घी डालेंगे, जनताके सत्य विचारोंको पुनर्जीवित करेंगे। इस प्रकार सबमें पुराना तेज भर देंगे वह तेज भर देंगे जो कभी हार स्वीकार नहीं करता, जिसकी महिमाका बखान हजारों घोषकर चुके हैं, जिसे आयरिश देशभक्त एमेटने एक पंक्तिके भीतर अति सुन्दर रूपसे व्यक्त किया है। वह लिखता है—"जब मेरा देश संसारके राष्ट्रोंमें अपना उचित स्थान ग्रहण करे तब मेरी कब्रपर कुछ लिखा जाना चाहिये, अन्यथा नहीं। उसने 'यदि' नहीं कहा किन्तु 'जब' कहा। इसका मतलब यह है कि यह बात अनिश्चित नहीं किन्तु निश्चित है। प्रत्येक युगमें ऐसे आदमी पैदा हुए हैं और आज भी वर्तमान हैं जिनकी समझ मोटी और हृदय निष्ठुर होनेसे वे इस बातपर विश्वास नहीं करते, किन्तु हम इसपर विश्वास करते हैं। हम इसके सहारे जीवित हैं और इसे भली भांति समझते हैं। हम इसे ठीक एमेटकी भांति समझते हैं और भविष्य हमारी यह बात सिद्ध कर देगा। जब इतिहास लेखक कार्य सिद्ध हो चुकनेपर इतिहास लिखेगा तो उसे हमारी सफलतापर आश्चर्य नहीं

होगा। उसे तो इस बातपर आश्चर्यचकित होना पड़ेगा कि हमारी आत्मा सदा दृढ बनी रही हमने निर्दोष यूनान और रोमके समयके उत्तम गुणोंसे टक्कर ली, हम आपत्तियों, यन्त्रणाओं और अत्याचारको सहकर भी डटे रहे, नीचभावपूर्ण समयमें हम किसीके फुसलावेमें नहीं आये, यह सब झेलते हुए हम अपना उद्देश्य स्पष्ट रूपसे देखते रहे। इतिहास लेखक यह सब बातें लिखेगा और आश्चर्यमें पड़कर गर्व और आनन्दके साथ उस लक्ष्यको देखेगा जिसे अदम्य उत्साहने प्राप्त किया है। इस लक्ष्यके विषयमें वह लिखेगा —

"स्वाधीनता अनिवार्य थी।"

इन दो शब्दोंमें उस जातिका सारा इतिहास आ जायगा जो संसारके इतिहासमें अपना सानी नहीं रखती।

॥ इति ॥

मालव-मयूर

राजस्थान (मध्यभारत और राजपूताना) का सचित्र मासिक पत्र, आकार बड़ा, पृष्ठ-संख्या ४०, मूल्य ३॥ वार्षिक ।

सम्पादक

पं० हरिभाऊ उपाध्याय, महात्मा गांधीके "हिन्दी नवजीवन"के उपसम्पादक

मयूरका जीवन कार्य

असत्य, अन्याय और अत्याचारका निर्भयता, शान्ति और विनय-पूर्वक विरोध करना तथा राजस्थानकी आन्तरिक शक्तिको जागृत और विकसित करना ।

मयूरकी विशेषतायें

१ सत्य, शांति और प्रेम इसके जीवनका धर्म है ।

२ यह विश्व बन्धुत्वका प्रेमी, राष्ट्रीय धर्मका उपासक और भारतीयताका अभिमानी है ।

३ यह विवेक पूर्वक प्राचीनताकी रक्षा करता है और नवीनताका स्वागत ।

४ देशी-राज्योंको यह ममत्वकी दृष्टिसे देखता है ।

५ विज्ञापनबाजीके अनर्थसे समाजको बचानेके लिये इसमें विज्ञापन नहीं लिये जाते । सिर्फ लोकोपयोगी विज्ञापन मुफ्त छाप दिये जाते हैं ।

६ ललित कलाओंके नामपर विषय विलास-प्रेरक सामग्रीका प्रचार करनेकी प्रवृत्तिका यह विरोधी है ।

७ छपाई, कागज तथा पोस्टेजके अलावा किसी किस्मका खर्चा इसपर नहीं लगाया जाता है ।

नोट—सस्ता-साहित्य-मंडलकी अन्तर्गतिके सम्बन्धमें तथा कौन कौनसी पुस्तकें छपीं और निकल रही हैं आदि सब बातोंका उल्लेख इस पत्रमें रहता है ।

कुछ सम्मतियोंका सार

पू० प० महावीरप्रसादजी द्विवेदी—"मालव-मयूर" बहुत अच्छा निकला। छपाई और कागज उत्तम है। भाषा और विषय-योजना भी ठीक है।

सरदार माधवराव विनायक किबे—मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि यह एक उच्च कोटिका मासिक-पत्र है।

सर्वेन्ट आव् इंडिया— ने एक महत्वपूर्ण पत्रकी वृद्धि की है। इस मासिक-पत्रका सम्पादन वे विशेष योग्यता और पूरी जिम्मेवारीके साथ करते हैं, जो कि हमें महात्मा गांधीकी प्रत्यक्ष देख-भालमें तालीम पाये सज्जनोंमें दिखाई देती है।

प्रताप—"मालव-मयूर" में मौलिकता और सात्विकता है। अधिक विचार और विवेकके साथ चुनी हुई बहुतसी टिप्पणियां इसमें रहती हैं। हमें विश्वास है कि "मयूर" का मीठा और सात्विक ढंग अपना रंग अवश्य लावेगा और उससे म० भा० और रा० पू० के लोगोंकी अत्यन्त निर्बल और निर्जीव आत्माको बल मिलेगा।

मतवाला—सभी संख्यायें एकसे एक बढ़कर हैं। कवितायें और लेख बड़े ही सुन्दर, सरस और निर्दोष होते हैं। सम्पादकीय अंश अत्यन्त प्रशंसनीय होता है। अधिक पृष्ठ-संख्या वाले पत्र 'मयूर' से शिक्षा ग्रहण करें।

जयाजी प्रताप—लेख उच्च कोटिके हैं। उनपर दृष्टि रखते हुए अगला नंबर पिछलेसे बढ़ा चढ़ा मालूम होता है। की टिप्पणियोंमें sense of proportion और sense of responsibility होती है, जिसकी इस समयके बहुतसे संपादकोंमें कमी नजर आती है।

कविकौमुदी—इसके सम्पादक हिन्दीके अच्छे और विचारशील लेखकोंमें हैं। संपादकीय नोटोंमें, उनकी स्पष्ट-वादिता, निर्भीकता और उत्तम विचारशैली देखकर चित्त प्रसन्न होता है।

पता—मालव-मयूर, अजमेर,
(राजपूताना)

लागत मूल्यपर हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित करनेवाली
एक मात्र सार्वजनिक संस्था

सस्ता-साहित्य-प्रकाशक-मंडल, अजमेर

उद्देश्य—हिन्दी साहित्यमें उच्च और शुद्ध साहित्यके प्रचारके उद्देश्यसे इस मण्डलका जन्म हुआ है। विविध विषयोंपर सर्वसाधारण और शिक्षित समुदाय, स्त्री और बालक सबके लिए उपयोगी और सस्ती पुस्तकें इससे प्रकाशित होंगी।

इस मण्डलके सदुद्देश्य, महत्व और भविष्यका अन्दाज पाठकोंको होनेके लिए हम सिर्फ उसके संस्थापकोंके नाम दे देते हैं—

मंडलके संस्थापक—(१) सेठ जमनालालजी बजाज वर्धा, (२) सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला कलकत्ता (सभापति) (३) स्वामी आनन्दजी (४) बाबू महावीरप्रसादजी पोद्दार (५) डा० अम्बालालजी दधीच (६) पं० हरिभाऊ उपाध्याय (७) बा० जीतमल लूणिया अजमेर (मंत्री)

पुस्तकोंका मूल्य—(१) प्रथम श्रेणीके स्थाई ग्राहकोंके लिये लगभग लागत मात्र रहेगा अर्थात् उन्हें लगभग १६०० पृष्ठोंकी पुस्तकें ३) में मिलेंगी। इस तरह उन्हें १) में ५०० से ६०० पृष्ठों तककी पुस्तकें मिलेंगी। अर्थात् पुस्तकपर छपे मूल्यसे पौनी कीमतसे भी कुछ कममें उन्हें मिलेंगी। (२) द्वितीय श्रेणीके स्थाई ग्राहकोंसे पुस्तकपर छपे मूल्यपर (सर्वसाधारणके लिये) तीन आना रुपिया कमीशन कम करके मूल्य लिया जायगा अर्थात् उन्हें १) में लगभग साढे चारसो पृष्ठोंकी पुस्तकें मिलेंगी (३) सर्वसाधारणको १) में लगभग चारसो पृष्ठोंकी पुस्तकें मिलेंगी। सचित्र पुस्तकोंका कुछ मूल्य अधिक रहेगा।

हमारे यहांसे प्रकाशित होनेवाली दो मालायें

हमारे यहांसे सस्ती साहित्य माला और सस्ती प्रकीर्णक पुस्तक माला ये दो मालाएं निकलती हैं। वर्ष भरमें प्रत्येक मालामें लगभग सात आठ पुस्तकें (कम या ज्यादा) निकलती हैं और इन सब पुस्तकोंकी पृष्ठ-संख्या मिलाकर लगभग १६०० पृष्ठोंकी होती है।

प्रथम श्रेणीके स्थाई ग्राहक

स्थाई ग्राहक होनेके नियम

नोट—मालासे निकली हुई पूर्व प्रकाशित पुस्तकें चाहे वे लें या आगे प्रकाशित होनेवाली पुस्तकोंकी एक एक प्रति उन्हें अवश्य लेनी

कुछ सम्मतियोंका सार

पू० प० महावीरप्रसादजी द्विवेदी—" मालव-मयूर " बहुत अच्छा निकला। छपाई और कागज उत्तम है। भाषा और विषय-योजना भी ठीक है।

सरदार माधवराव विनायक किबे—मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि यह एक उच्च कोटिका मासिक-पत्र है।

सर्वेन्ट आव् इंडिया— ने एक महत्वपूर्ण पत्रकी वृद्धि की है। इस मासिक-पत्रका सम्पादन वे विशेष योग्यता और पूरी जिम्मेवारीके साथ करते हैं जो कि हमें महात्मा गांधीकी प्रत्यक्ष देख-भालमें तालीम पाये सज्जनोंमें दिखाई देती है।

प्रताप—"मालव-मयूर" में मौलिकता और सात्विकता है। अधिक विचार और विवेकके साथ चुनी हुई बहुतसी टिप्पणियां इसमें रहती हैं। हमें विश्वास है कि "मयूर" का मीठा और सात्विक ढंग अपना रंग अवश्य लावेगा और उससे म० भा० और रा० पू० के लोगोंकी अत्यन्त निर्बल और निर्जीव आत्माको बल मिलेगा।

मतवाला—सभी सज्जायें एकसे एक बढ़कर हैं। कवितायें और लेख बड़े ही सुन्दर, सरस और निर्दोष होते हैं। सम्पादकीय अंश अत्यन्त प्रशंसनीय होता है। अधिक पृष्ठ-संख्या वाले पत्र 'मयूर' से शिक्षा ग्रहण करें।

जयाजी प्रताप—लेख उच्च कोटिके हैं। उनपर दृष्टि रखते हुए अगला नंबर पिछलेसे बढ़ा चढ़ा मालूम होता है। की टिप्पणियोंमें sense of proportion और sense of responsibility होती है, जिसकी इस समयके बहुतसे संपादकोंमें कमी नजर आती है।

कविकौमुदी—इसके सम्पादक हिन्दीके अच्छे और विचारशील लेखकोंमें हैं। संपादकीय नोटोंमें, उनकी स्पष्ट-वादिता, निर्भीकता और उत्तम विचारशैली देखकर चित्त प्रसन्न होता है।

पता—मालव मयूर, अजमेर,
(राजपूताना)